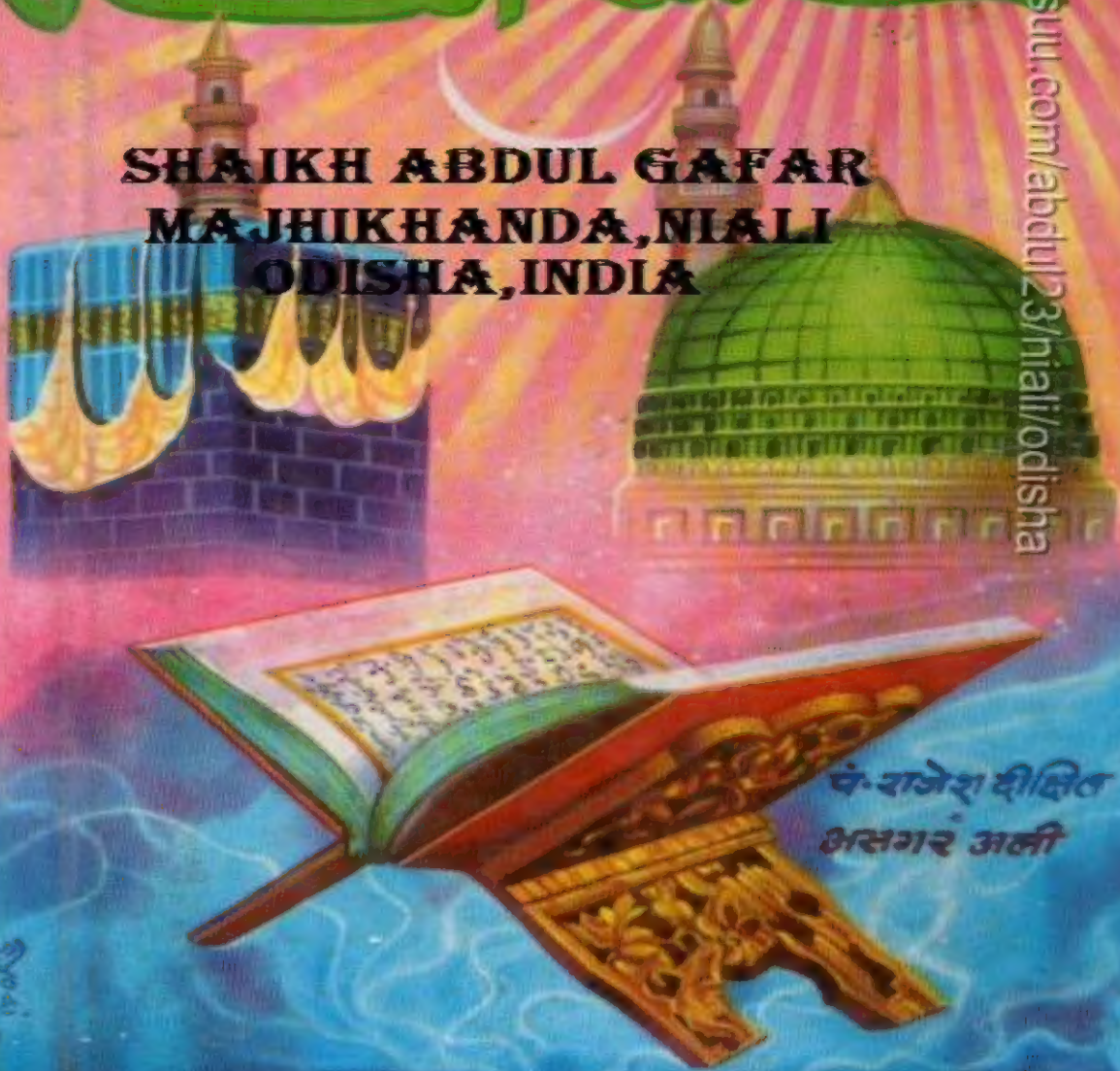


इरलामी तन्त्रशास्त्र

محمد الشافعي

SHAIKH ABDUL GAFAR
MAJHIKHANDA, NIALI
ODISHA, INDIA

issuu.com/abdul23/niali/odisha



पं. राजेश दीक्षित
भुवनेश्वर अली

प्रकाशक :
दीप पब्लिकेशन्स
कमल कार्बेट, एम्सलेख रोड, भागपा-३

लेखक :
जगदाश अस्मर अली

सम्पादक :
विद्या शारिणि
५० राजेश दीक्षित

प्रथम संस्करण - १९८५ ई.
द्वितीय संस्करण - १९८७ ई.
तृतीय संस्करण - १९८९ ई.
चतुर्थ संस्करण - १९९९ ई.
पंचम संस्करण - १९९५ ई.

मूल्य - सैलानीय पत्रिका
105

68

मुद्रक : राजश्रीय कार्टे प्रिन्टर्स, मोतीलाल नेहरू रोड, भागपा-३

ISLAMI TANTRA SHASTRA

—By Asgar Ali & Rajesh Dixit

चेतावनी

भारतीय कार्पाट्राइट एक्ट के अन्तर्गत इस पुस्तक के सर्वाधिकार दीप पब्लिकेशन्स भागपा के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई सौजन्य इस पुस्तक का नाम, अन्तर का मॉडल, डिजाइन, चित्र या सेटिंग तथा किसी भी अंग को किसी भी भाषा में नकल या टोड़-मोड़ कर छापने का साहस न करें, अन्यथा कानूनी तौर पर दंड-जब्त व क्षति के विषये दार होंगे।

—प्रकाशक

द्वितीय संस्करण की भूमिका

आपके हाथों में 'इस्लामी तन्त्र शास्त्र' का यह द्वितीय संस्करण प्रसन्नता हो रही है। एक वर्ष में पुस्तक का दूसरा संस्करण होना ही इस पुस्तक की लोकप्रियता और उपयोगिता का सबूत देता प्रमाण है। यह संस्करण पिछले संस्करण में इस अर्थ में भी विभिन्न है कि इसे एक बार फिर पूर्णरूपेण अद्ययावत किया गया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इसका संशोधन और परिवर्द्धन विषय के अनुभवशील विशेषज्ञों ने अपनी सम्पूर्ण क्षमता से किया है।

प्रस्तुत संस्करण में विशेष सन्ध मन्त्रों का और अभाक्षिक किया गया है। भिन्न मन्त्रों को इसमें और बढ़ाया गया है। यह अन्यथा उल्लेख नहीं है कि यह इस पुस्तक की उपयोगिता और बढ़ गयी है। पुस्तक में अद्ययावत कालज, छपाई आदि का प्रथम बार आने तथा पुस्तक को पृष्ठ संख्या बढ़ आने के साथ-साथ मूल्य में इति नही की गयी है। इस भाषा करते हैं कि पाठक पूर्णतः सन्तुष्ट अंगो रहेंगे।

—प्रकाशक

ABDUL RAB ROOHANI ELAZ

**Shaikh Abdul Gafar
Majhikhanda, Niali, Cuttack
Odisha, India**

**Mail Id:-bdulgafarshaikh@gmail.com
gtelteleservice754004@gmail.com
Mob: +919861478787**

ISSUU.COM/ABDUL23

ISSUU.COM/SHAIKHBDULGAFAR

इस्लामी तन्त्र शास्त्र

- तन्त्र एक ऐसा कल्पवृक्ष है जिससे छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी कामनाओं की पूर्ति मिल सकती है।
- अद्भुत और विश्वास के सम्बल पर लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला तन्त्र साधक अविश्वीय निरिचल लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

issuu.com/abdul23/niali/odisha

दो शब्द

● हिन्दू-इस्लामी में भिन्न, भक्ति, विष्णु, गणेश तथा सूर्य—ये धर्म प्रमुख माने जाते हैं। इनके उपासकों को क्रमशः शैव, शक्त, वैष्णव, सूर्यपूजक तथा और कहा जाता है। सर्वोपासना इन पाँचों देवताओं के समान ही सम्भव है, तथापि भिन्न, गणेश एवं सूर्य के अधिकार उपासक भक्तिगत तथा शैव और शक्त के उपासक सात्त्विकी, राजसी एवं तामसी धर्म धर्मों परस्पर भी उपासना पद्धतियों में विचारास रखने वाले पाये जाते हैं।

● श्री. राज-विद्या का आदि आचार्य भगवान् भूतभावन शंकर को ही माना गया है। शंकर की मान्यता एक ऐसे देवाधिदेव के रूप में हो जाती है, जो न भक्त आश्रित के स्वामी (पति), गणेश के पिता एवं विष्णु तथा सूर्य के आराध्य ही हैं, अपितु इनके अतिरिक्त अन्यत्र उप-देवताओं, गुरु, गुरु पितामह, गुरु, गुरु, किन्नर आदि के भी अधिपति और पितामह हैं। इसी, ज्ञानी, तारा आदि विभिन्न रूपों वाली शक्ति तो ज्ञानी अनुभवी—पूजनी, प्रेमी, विद्याधरी, चाण्डालिनी आदि के सहित ज्ञानी महाशक्ति हैं ही। अतः हिन्दू-नास्तिकों में त्रिवेदासना का सर्वोपरि महत्त्व है। लोक में गुरु भगवान्, भगवान् एवं पुण्यस्पद, जीवनदायक तथा भगवान् तत्त्वों पर है कि सभी प्रकार के तात्त्विक प्रयोग शक्ति-गुणात्मक द्वारा किये जाते हैं। इसी द्वारा सम्पादित 'हिन्दू-तन्त्र शास्त्र' में कार्मिक कारिका प्रयोगों तथा 'आचार तन्त्र शास्त्र' में राजस, तामस आदि सभी प्रकार के तात्त्विक-प्रयोगों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

● शैव तथा शैव साधकियों की गणना श्री. विराट हिन्दू धर्म के आचार्य ही की जाती है तथापि इनकी पूजा-उपासना एवं तात्त्विक विधियों में भक्ति-आचार, भावा-आचार हैं। इनके विषय में हमारे द्वारा सम्पादित 'दो शब्द' नामक पुस्तक 'शैव तन्त्र शास्त्र' नामक ग्रन्थों में पर्याप्त प्रकाश मिल सकता है।

भावों को प्रकट करने के साधनों के आदिशिव तन्त्र-तन्त्र ही है। तन्त्र तन्त्र के विकास से ही अंक और अक्षरों की सृष्टि हुई है। अतः रेखा अंक एवं अक्षरों का मिलान-जुलान तन्त्रों में व्याप्त ही गया। साधकों के इष्टदेव की अनुकम्पा से बीज-मन्त्र तथा मन्त्रों की प्राप्त किया और उनके जप से सिद्धियाँ पार्थीवो तन्त्र तन्त्र में उन्हें भी अधिक कर लिया

● इसलाभी मजहब में ईश्वर (खुदा) की केवल निराकर रूप की कल्पना की गयी है अतः उसमें किसी देवी-देवताओं की सम्भावना का तो प्रश्न ही नहीं उठता, परन्तु इसके बाद मूल भी बिन, परी, खईस आदि के अस्तित्व को नकारा नहीं गया है। इसला ही नहीं विभिन्न मनोकाय-नामों की पृति हेतु सन्तों, फकीरों की प्रजातों की विधायक (यात्रा) करने, उनको कबो पर बादर चढ़ाने तथा धूप-सोबान आदि से पूजा करने के अविरत विभिन्न प्रकार के नवरा (यन्त्र), यन्त्र तथा तान्त्रिक सामग्रियों का प्रयोग भी किया जाता है।

● प्रस्तुत ग्रन्थ 'मुस्लिम लव् आफ्' में ऐसे सैकड़ों तान्त्रिक यन्त्र-यन्त्रादि संश्लिष्ट किये गये हैं जिनका प्रयोग फकीरों तथा मुस्लिम तान्त्रिकों द्वारा किया जाता है। इसमें कुछ ऐसे लोकप्रिय यन्त्र भी सम्मिलित हैं, जिनका हिन्दू तथा मुस्लिम—दोनों धर्मावलम्बी समान रूप से प्रयोग करते हैं।

● हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक यन्त्र की आकृति फारसी अक्षरों तथा अंकों के साथ ही देवनागरी लिपि में भी प्रस्तुत करके इस ग्रन्थ की उपयोगिता बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है।

● इस ग्रन्थ के सम्पादन एवं सामग्री-संकलन में हमारे परम मित्र यो० असगर अली 'असगर' का विशेष योगदान रहा है। अतः हम उनके प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं।

● आशा है, मुस्लिम-लव् की जानकारी प्राप्त करने के अविश्व-साधियों को यह ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध होगा।

—असगर अली
—राजेश शर्मा

विषय-सूची

पृष्ठान्त	पृष्ठान्त
१७-३७	१७
१८	१८
१९	१९
२०	२०
२१	२१
२२	२२
२३	२३
२४	२४
२५	२५
२६	२६
२७	२७
२८	२८
२९	२९
३०	३०
३१	३१
३२	३२
३३	३३
३४	३४
३५	३५
३६	३६
३७	३७
३८	३८
३९	३९
४०	४०
४१	४१
४२	४२
४३	४३
४४	४४
४५	४५
४६	४६
४७	४७
४८	४८
४९	४९
५०	५०
५१	५१
५२	५२
५३	५३
५४	५४
५५	५५
५६	५६
५७	५७
५८	५८
५९	५९
६०	६०
६१	६१
६२	६२
६३	६३
६४	६४
६५	६५
६६	६६
६७	६७
६८	६८
६९	६९
७०	७०
७१	७१
७२	७२
७३	७३
७४	७४
७५	७५
७६	७६
७७	७७
७८	७८
७९	७९
८०	८०
८१	८१
८२	८२
८३	८३
८४	८४
८५	८५
८६	८६
८७	८७
८८	८८
८९	८९
९०	९०
९१	९१
९२	९२
९३	९३
९४	९४
९५	९५
९६	९६
९७	९७
९८	९८
९९	९९
१००	१००

(१२)

(१८) हाजिरात का तुलैमानो मन्त्र	१८५
(१९) हाजिरात का खवाजा मन्त्र	१८६
(२०) स्वल्प-सिद्धि मन्त्र (१)	१८७
(२१) स्वल्प-सिद्धि मन्त्र (२)	१८७
(२२) स्वल्प-सिद्धि मन्त्र (३)	१८८
(२३) दुश्मन को मारने का प्रयोग	१८८
(२४) शत्रु-भारण मन्त्र	१८८
(२५) शत्रु-मुख स्तम्भन मन्त्र	१८९
(२६) दाढ़ के दर्द का मन्त्र	१९०
(२७) नावले कुत्ते के काटने का मन्त्र	१९०
(२८) नावले कुत्ते का झारा	१९०
(२९) अग्रासोसो का मन्त्र	१९१
(३०) बवासीर का मन्त्र (१)	१९१
(३१) बवासीर का मन्त्र (२)	१९२
(३२) पीडा-निवारक मन्त्र	१९२
(३३) आँख की छुन्नी का मन्त्र	१९२
(३४) सिया का मन्त्र	१९३
(३५) हाकिम को वज्र में करने का मन्त्र-चन्द्र	१९३
(३६) प्रेमी को आकर्षित करने का मन्त्र	१९३
(३७) जादू-टोने का असर दूर करने का मन्त्र	१९४
(३८) दफीना (गढ़ा घना) नजर आने का मन्त्र	१९४
(३९) खूब किया हुआ खपवा बर्षिस आ जाना	१९५
(४०) रोग-दोष मिटाने का उतारा	१९५
(४१) स्वप्न में भविष्य ज्ञान	१९६
(४२) मनवांछित चीज को प्राप्त करना	१९६
(४३) जुए में जीतना	१९६
(४४) मुद्द भेद को जानना	१९७
(४५) रात में भी दिन जैसा दिखाई देना	१९७
(४६) दूर चमने पर भी यकान न आवे	१९७
(४७) खमोन में गहरी डुई बसु दिखाई देना	१९७
(४८) दीठ-मूठ में सुरक्षा	१९८

१०. वशीकरण सम्बन्धी कतिपय अन्य प्रयोग

(१) वशी-वशीकरण मन्त्र (१)

१९८

१९८-२१५

issuu.com/abdu123/hial/odisha

(१३)

(१) वशी-वशीकरण मन्त्र (२)	१९८
(२) वशी-वशीकरण मन्त्र (३)	२००
(३) वशी-वशीकरण मन्त्र (४)	२०१
(४) वशी-वशीकरण मन्त्र (५)	२०१
(५) वशी-वशीकरण मन्त्र (६)	२०१
(६) वशी-वशीकरण मन्त्र (७)	२०१
(७) वशी-वशीकरण मन्त्र (८)	२०२
(८) वशी-वशीकरण मन्त्र (९)	२०२
(९) वशी-वशीकरण मन्त्र (१०)	२०२
(१०) वशी-वशीकरण मन्त्र (११)	२०३
(११) वशी-वशीकरण मन्त्र (१२)	२०३
(१२) वशी-वशीकरण मन्त्र (१३)	२०४
(१३) वशी-वशीकरण मन्त्र (१४)	२०४
(१४) वशी-वशीकरण मन्त्र (१५)	२०४
(१५) वशी-वशीकरण मन्त्र (१६)	२०५
(१६) वशी-वशीकरण मन्त्र (१७)	२०५
(१७) वशी-वशीकरण मन्त्र (१८)	२०५
(१८) वशी-वशीकरण मन्त्र (१९)	२०६
(१९) वशी-वशीकरण मन्त्र (२०)	२०६
(२०) वशी-वशीकरण मन्त्र (२१)	२०७
(२१) वशी-वशीकरण मन्त्र (२२)	२०७
(२२) वशी-वशीकरण मन्त्र (२३)	२०७
(२३) वशी-वशीकरण मन्त्र (२४)	२०८
(२४) वशी-वशीकरण मन्त्र (२५)	२०८
(२५) वशी-वशीकरण मन्त्र (२६)	२०८
(२६) वशी-वशीकरण मन्त्र (२७)	२०८
(२७) वशी-वशीकरण मन्त्र (२८)	२०८
(२८) वशी-वशीकरण मन्त्र (२९)	२०८
(२९) वशी-वशीकरण मन्त्र (३०)	२०८

(३६) सर्वजन-वशीकरण मन्त्र (३)	२१०
(३७) सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (४)	२१०
(३८) सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (५)	२१०
(३९) सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (६)	२१०
(४०) सर्वजन वशीकरण तन्त्र (७)	२११
(४१) सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (८)	२११
(४२) शत्रु-वशीकरण तन्त्र (१)	२११
(४३) शत्रु-वशीकरण तन्त्र (२)	२११
(४४) शत्रु-वशीकरण तन्त्र (३)	२१२
(४५) शत्रु-वशीकरण तन्त्र (४)	२१२
(४६) शत्रु-वशीकरण तन्त्र (५)	२१२
(४७) पुत्रलो वशीकरण प्रयोग	२१२
(४८) आकर्षण का मन्त्र	२१३
(४९) पति-वशीकरण प्रयोग	२१३
(५०) राजसभा मोहने मन्त्र	२१४
(५१) स्त्री-आकर्षण तन्त्र	२१४
(५२) सर्वजन मोहने प्रयोग	२१४
(५३) स्त्री-मोहने प्रयोग	२१५

issuu.com/abdu123/nial/odisha

साधना से पूर्व आवश्यक निर्देश

किसी भी मन्त्र-तन्त्र की साधना से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों को

ध्यानपूर्वक समझ लेना आवश्यक है। आत्म-रक्षा के लिए सरलीकरण की आवश्यकता होती है।

(१) किसी भी मन्त्र-तन्त्र की साधना करने समय उस पर पूर्ण विश्वास रखना आवश्यक है। अन्यथा वांछित फल प्राप्त नहीं होगा।

(२) मन्त्र-तन्त्र साधना के समय शरीर आ इन्द्रिय एवं परिवेश रहूँता साफ़-सफ़ है। जिस जगह हो जहाँ मन से किसी प्रकार की बाधा न रहे।

(३) एक-दो-तीन-पाँच-छह-एकदश स्थान से ही मन्त्र-साधना करनी चाहिए। मन्त्र-तन्त्र साधना की समस्त तत्त्व एक स्थान पर ही करना चाहिए।

(४) जिस मन्त्र-तन्त्र की वेदी साधक-व्यक्ति वर्णित है, उसी के अनुसार उसी वर्ण करके चाहिए अन्यथा परिश्रम करने से जिसका साधक अभिप्राय हो सकती है तथा सिद्ध में भी सन्देह हो सकता है।

(५) जिस मन्त्र की जरूरत है, वह जिसकी लिखी है उसकी ही लिखनी है अन्यथा साधक करवा चाहिए। इसी प्रकार जिस मन्त्र की जरूरत है, उसे भी लिखना हो तो तथा जिस रंग के फूलों का प्रयोग हो, उन सबका प्रयोग ही करना चाहिए।

(६) एक मन्त्र से एक ही मन्त्र की साधना करना उचित है। इसी प्रकार एक समय में केवल एक ही मनोमिलाया की पूर्ति क प्रयोग करना चाहिए।

एक दृष्टि में

- मानव-जीवन की आवश्यकता और आकांक्षाओं की पूर्ति के अनेक साधनों में 'तन्त्र' सरल और सुगम साधन है। issuu.com/abdu123/visual/odishahindi
- यह प्रस सर्वथा निर्मूल है कि तन्त्र केवल शूल-शूलीया बंधन मन बहलाने का नाम है।
- तन्त्र का विशाल प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है।
- आधुनिक विज्ञान और तन्त्र में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्र में स्वायत्त है, सरल है और कल्याण है।
- तन्त्र-विधान का भारतीय परिचय और विधियों का संवर्गीय ज्ञान साधना को सफल बनाकर सिद्धि तक पहुँचता है।
- लोक-कल्याण और आत्म-कल्याण की कामना से किये गये लान्दिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में आनन्ददायी होते हैं।
- फ़ारसी का प्रत्येक अक्षर लान्दिक अर्थ रखता है। इन तन्त्रों के अतिनव-प्रयोग आपकी कष्टों से बचाने में सहायक होंगे।
- इस पुस्तक में दिये गये तन्त्र, मन्त्र प्राचीनतम्, प्रामाणिक, अनुपलब्ध पुस्तकों से संकलित किये गये हैं सिर्फ़ उन्हें मन्त्र, तन्त्र को पुस्तक में स्थान दिया गया है जिनकी सत्यता निर्विवाद है।
- पुस्तक पाठकों को भलाई के लिए बनायी गयी है अतः "कुर् के बन्दर बैसी आवाज देगे बैसी ही प्रतिध्वनि होगी" की तरह साधना आपके सच्चे मन कर्म में होगी तभी उसमें इच्छित फल प्राप्त होगा अन्यथा बेसा करेगा देसा भरेगा। इसमें लेखक प्रकाशक का क्या दोष ?

पारसी अक्षर और उनके मन्त्र

पारसी-अक्षर-मन्त्र

पारसी अक्षरों में मन्त्र अक्षर है, जिससे चिन्त करने से विभिन्न अक्षरों का अर्थ निकल आता है। कुछ अक्षर अक्षरों इस प्रकार हैं—

(११) अक्षर	(१२) उवाच
(१३) ओय	(१४) ओय
(१५) ओय	(१६) ओय
(१७) एय	(१८) एय
(१९) मैन	(२०) मैन
(२१) यू	(२२) यू
(२३) काक	(२४) काक
(२५) गाक	(२६) गाक
(२७) साय	(२८) साय
(२९) सोय	(३०) सोय
(३१) नून	(३२) नून
(३३) बौव	(३४) बौव
(३५) हे	(३६) हे
(३७) हे	(३८) हे
(३९) हे	(४०) हे

अक्षरों का अर्थ निकल आता है। कुछ अक्षर अक्षरों इस प्रकार हैं—

पारसी अक्षरों का अर्थ निकल आता है। कुछ अक्षर अक्षरों इस प्रकार हैं—

अक्षर-मन्त्र का मन्त्र

७८६

८	९	६
२००२	१९९४	१९९४
३	४	७
१९९६	१९९८	२००१
४	६	२
१९९७	२००३	१९९४

२

८८५

८	९	६
२००१	१९९८	१९९८
३	४	७
१९९६	१९९८	२००१
४	६	२
१९९७	२००३	१९९४

३

विभिन्न-मन्त्रों का मन्त्र

“विभिन्न-मन्त्रों का मन्त्र”

यह मन्त्र प्रत्येक ‘अक्षर-मन्त्र’ अथवा किसी भी अन्य प्रकार की मन्त्र के आधार में अवश्य पढ़ना चाहिए।

१८६

“अक्षर-मन्त्रों का मन्त्र”

“अक्षर-मन्त्रों का मन्त्र”

यह मन्त्र प्रत्येक ‘अक्षर-मन्त्र’ अथवा किसी भी अन्य प्रकार की मन्त्र के आधार में अवश्य पढ़ना चाहिए।

issuu.com/abdu123/nial/ogishhah

अक्षर-मन्त्र

“अक्षर-मन्त्रों का मन्त्र”

यह मन्त्र प्रत्येक ‘अक्षर-मन्त्र’ अथवा किसी भी अन्य प्रकार की मन्त्र के आधार में अवश्य पढ़ना चाहिए।

अक्षर-मन्त्रों का मन्त्र

यह मन्त्र प्रत्येक ‘अक्षर-मन्त्र’ अथवा किसी भी अन्य प्रकार की मन्त्र के आधार में अवश्य पढ़ना चाहिए।

यह मन्त्र प्रत्येक ‘अक्षर-मन्त्र’ अथवा किसी भी अन्य प्रकार की मन्त्र के आधार में अवश्य पढ़ना चाहिए।

यह मन्त्र प्रत्येक ‘अक्षर-मन्त्र’ अथवा किसी भी अन्य प्रकार की मन्त्र के आधार में अवश्य पढ़ना चाहिए।

یا جبرائیل	یا جبرائیل	یا جبرائیل	یا جبرائیل
۶	۱	۳۴	۶
۷	۵	۳	۷
۱۹	۲۲	۱۵	۱۹
۲	۹	۲	۲
۱۰	۳۹	۷	۱۰

मन्त्र-अप पुरा हो जाने पर निम्नलिखित वाक्य का ११ बार उच्चारण करना चाहिए—

“या इलाहील बरकत या अलिक या अल्ला हो मुझे धन और दौलत दे या सुदरह ।”

सबसे जल्द में ‘अलिक’ शब्द को क़ायम के १००० छोटे छोटे टुकड़ों पर फ़ारसी-लिपि में लिखकर, उन क़ायम के टुकड़ों को आटे की गोलियों में भरकर, किसी दरिया (नदी) में बहादे, ऐसा करने से काय सिद्ध हो जाता है ।

यह ‘अलिक’ का मन्त्र अरयन्त प्रभावकारी है । यदि सशुचित रीति से साधन किया जाय तो साधक को मनोकामना की अवश्य पूरा करता है तथा घर में धन-धान्य की वृद्धि करता है ।

‘अलिक’ से लेकर ‘ये’ तक सभी फ़ारसी शब्दों को फ़ारसी लिपि में लिखने की विधि निम्न प्रकार दी गई है—

۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۱۰	۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹	۲۰	۲۱	۲۲	۲۳	۲۴	۲۵	۲۶	۲۷	۲۸	۲۹	۳۰	۳۱	۳۲	۳۳	۳۴	۳۵	۳۶	۳۷	۳۸	۳۹	۴۰	۴۱	۴۲	۴۳	۴۴	۴۵	۴۶	۴۷	۴۸	۴۹	۵۰	۵۱	۵۲	۵۳	۵۴	۵۵	۵۶	۵۷	۵۸	۵۹	۶۰	۶۱	۶۲	۶۳	۶۴	۶۵	۶۶	۶۷	۶۸	۶۹	۷۰	۷۱	۷۲	۷۳	۷۴	۷۵	۷۶	۷۷	۷۸	۷۹	۸۰	۸۱	۸۲	۸۳	۸۴	۸۵	۸۶	۸۷	۸۸	۸۹	۹۰	۹۱	۹۲	۹۳	۹۴	۹۵	۹۶	۹۷	۹۸	۹۹	۱۰०
۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۱۰	۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹	۲۰	۲۱	۲۲	۲۳	۲۴	۲۵	۲۶	۲۷	۲۸	۲۹	۳۰	۳۱	۳۲	۳۳	۳۴	۳۵	۳۶	۳۷	۳۸	۳۹	۴०	۴۱	۴۲	۴۳	۴۴	۴۵	۴۶	۴۷	۴۸	۴۹	۵०	۵۱	۵۲	۵۳	۵۴	۵۵	۵۶	۵۷	۵۸	۵۹	۶०	۶۱	۶۲	۶۳	۶۴	۶۵	۶۶	۶۷	۶۸	۶۹	۷०	۷۱	۷۲	۷۳	۷۴	۷۵	۷۶	۷۷	۷۸	۷۹	۸०	۸۱	۸۲	۸۳	۸۴	۸۵	۸۶	۸۷	۸۸	۸۹	۹०	۹१	۹२	۹३	۹४	۹५	۹६	۹७	۹८	۹९	۱००

(फ़ारसी अक्षरों की लिपि)

गैब में रंगी देने वाला

‘ये’ का मन्त्र

‘ये’ का मन्त्र अरयन्त प्रभावकारी है । यदि सशुचित रीति से साधन किया जाय तो साधक को मनोकामना की अवश्य पूरा करता है तथा घर में धन-धान्य की वृद्धि करता है ।

यत्न का स्वरूप निम्नानुसार तैयार करना चाहिए—

८	११	३८६	१
३८८	२	७	१२
३	३६१	६	६
१०	४	४	३६०

६

८	११	१८९	१
१८८	२	८	१२
३	३६१	६	६
१०	४	४	३६०

१०

२१ दिनों तक पूर्वोक्त विधि से मन्त-जप तथा यत्न-पूजन करतै रहने से यथा तथा सम्मान की वृद्धि होती है। अन्त में, यत्न की खाटे की गोली में भरकर तया दूरे में सान कर दरिया के पानी में बहा देना चाहिए।

१००० का मतदान से रक्कने वाला

‘रे’ का मत

१००० मतदान से रक्कने वाला १००० की रक्कत में जप करने का मतदान नहीं रहता।

issuu.com/abulhasan-ahmed-ali

१००० मतदान से रक्कने वाला १००० की रक्कत में जप करने का मतदान नहीं रहता।

मतदान का मत

मतदान का मत

१००० मतदान से रक्कने वाला १००० की रक्कत में जप करने का मतदान नहीं रहता।

१००० मतदान से रक्कने वाला १००० की रक्कत में जप करने का मतदान नहीं रहता।

१००० मतदान से रक्कने वाला १००० की रक्कत में जप करने का मतदान नहीं रहता।

मतदान का मत

मतदान का मत

मतदान का मत

मतदान का मत

मतदान का मत

✓ भये हुए मनुष्य को लौटाने वाला

‘खे’ का मंत्र

‘खे’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या महर्काईल बहकक या खे या खलिको !”

बिधि—(१) इस मन्त्र को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान में आकाश के नीचे बड़े होकर १००० की संख्या में जपने तथा जो व्यक्ति घर से चला गया हो उसके उद्देश्य से आकाश की ओर फेंक मारने से, वह गया हुआ व्यक्ति मीट्र पर लौट आता है।

(२) ‘खे’ को फारसी अक्षरों में ६०० की संख्या में लिखकर तर्किया के नीचे रख कर सोने तथा उन्नत मन्त्र का १००० की संख्या में जप करने से स्वप्न (स्वप्न) में गये हुए मनुष्य के चारों में सारा हाल-बाल माहूम हो जाता है।

(३) यदि ‘खे’ के अन्त में ‘या खलोरो’ गजद और बड़ा लिया जाय तो अधिक हाल माहूम होता है।

इसके साथ भी ‘विसमिलसाह’ और ‘दरुद’ पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें।

शत्रु-नाशक तथा धन-वृद्धि कारक

‘दाल’ का मंत्र

‘दाल’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या दरदाईल बहकक या दाल या दैयानो !”

बिधि—(१) सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पढ़ने से धन की वृद्धि होती है। धन-वृद्धि के लिए इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करते रहना आवश्यक है।

(२) सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को ७० बार पढ़ कर मातृ के घर की ओर फेंक मारने से उसका नाश हो जाता है। यह क्रिया ३० दिनों तक निरन्तर नियमित रूप से करनी चाहिए।

इसके साथ भी ‘विसमिलसाह’ और ‘दरुद’ पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें।

१. आकाश की कृपा प्राप्ति, धन वृद्धि अथवा

अथवा धन के लिए भयुक्त होने वाला

‘दास’ का मन्त्र

मन्त्र—या दास दास दास दास

बिधि—(१) आकाश की कृपा प्राप्ति, धन वृद्धि अथवा धन के लिए भयुक्त होने वाले व्यक्ति को

‘दास’ का मन्त्र १००० बार पढ़ने के बाद प्रतिदिन १००० की संख्या में जप करने से धन प्राप्ति होती है।

(२) यदि ‘दास’ के अन्त में ‘या दासोरो’ गजद और बड़ा लिया जाय तो अधिक धन प्राप्ति होती है।

इसके साथ भी ‘विसमिलसाह’ और ‘दरुद’ पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें।

धन धन प्राप्ति करने वाला

‘रे’ का मन्त्र

‘रे’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या रावा दीस बहकक या रे या रईम !”

बिधि—(१) सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पढ़ने से धन प्राप्ति होती है। धन प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का प्रतिदिन जप करने से धन प्राप्ति होती है।

(२) यदि ‘रे’ के अन्त में ‘या रावोरो’ गजद और बड़ा लिया जाय तो अधिक धन प्राप्ति होती है।

इसके साथ भी ‘विसमिलसाह’ और ‘दरुद’ पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझें।

(३) एक कामज के ऊपर फारसी लिपि में ८०० की संख्या में 'अक्षर लिखकर, उस कामज को मोड़कर अपने कान में रखें। एक घड़ी बाद उसे कान से निकालकर कानों की पाली अथवा कलईदार रकबी में रखकर ऊपर से इतना नयक बिछा दें कि सभी अक्षर ठक जाय, तबपुनः राति के समय पुनः ८०० बार मन्त्र पढ़कर सो जाय। तो स्वप्न में गढ़े हुए धन के स्थान के विषय में ज्ञात हो जायगा।

इस मन्त्र के साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् बत समझना चाहिए।

'जे' का मन्त्र इस प्रकार है—

शान्-भय-नाशक

'जे' का मन्त्र

'या सरफाईल बरकक या जे या जाकियो।'

बिधि—इस मन्त्र का १ मास तक नित्य ५०० की संख्या में जप करते रहने से शत्रु का भय दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

इन्क़िल-अनुभव प्रदायक

'मीन' का मन्त्र

'मीन' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या हम्बाकील बरकक या मीन या समीओ।'

बिधि—इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७ बार जपने से इन्क़िल अनुभव प्राप्त होता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

शान्-भय-स्नग्मक एवं गर्म-ज्ञान प्रदायक

'शीन' का मन्त्र

'शीन' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या इब्राईल बरकक या शीन शहीदा।'

(३) एक कामज के ऊपर फारसी लिपि में ८०० की संख्या में 'अक्षर लिखकर, उस कामज को मोड़कर अपने कान में रखें। एक घड़ी बाद उसे कान से निकालकर कानों की पाली अथवा कलईदार रकबी में रखकर ऊपर से इतना नयक बिछा दें कि सभी अक्षर ठक जाय, तबपुनः राति के समय पुनः ८०० बार मन्त्र पढ़कर सो जाय। तो स्वप्न में गढ़े हुए धन के स्थान के विषय में ज्ञात हो जायगा।

इस मन्त्र के साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् बत समझना चाहिए।

'जे' का मन्त्र इस प्रकार है—

शान्-भय-नाशक

'जे' का मन्त्र

'या सरफाईल बरकक या जे या जाकियो।'

बिधि—इस मन्त्र का १ मास तक नित्य ५०० की संख्या में जप करते रहने से शत्रु का भय दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

इन्क़िल-अनुभव प्रदायक

'मीन' का मन्त्र

'मीन' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या हम्बाकील बरकक या मीन या समीओ।'

बिधि—इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७ बार जपने से इन्क़िल अनुभव प्राप्त होता है।

इस मन्त्र के साथ 'बिसमिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् समझना चाहिए।

वशीकरण कारक एवं कार्य-साधक

'तोय' का मन्त्र

'तोय' का मन्त्र इस प्रकार है -

'या इस्माईल बहकक या तोय या ताहिरो ।'

बिधि - (१) किसी कार्य को सिद्धि के लिए कागज के टुकड़ों पर फारसी लिपि में अलग-अलग 'तोय' अक्षर लिखकर, उन्हें आटे की गोल्डि (गोल्डि) में अलग-अलग धर दें, फिर उन गोल्डियों के ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र को ७०० बार पढ़कर फूँके मारें। तदुपरांत उन आटे की गोल्डियों को दरिया (नदी) के पानी में बहा दें तो ७ दिन के भीतर इच्छित-कार्य सिद्ध हो जाता है।

(२) वशीकरण के लिए एक कागज के ऊपर ७०० की संख्या में फारसी लिपि में 'तोय' लिखकर, उनके नीचे -

'या इस्माईल फलान को फलान के बस में करो बहकक या तोय या ताहिरो ।'

उक्त वाक्य को लिखकर, उस कागज का फलीला बनाकर सुरक्षित तेल में जलाएँ तथा हस्त, फुल, दीपक को उसके आगे रखकर लोबान की धुनी दें। इस तरह ७ दिनों तक नित्य यह प्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० की संख्या में उक्त मन्त्र का वप करने से इच्छित स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है। मन्त्र का वप करते समय, जिस वश में करना हो, दीपक का मुँह उसके धर की ओर रखना चाहिए।

कागज पर जो वाक्य लिखा जायेगा उसमें फलान को, फलान के स्थान पर जिस व्यक्ति का वप में करना हो, उसका तथा जिसका वश में कराना हो उसका - दोनों का नाम लिखना चाहिए।

इस मन्त्र के साथ 'विरिमलसाह' तथा 'दरद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

शत्रु-मय नाशक

'जोय' का मन्त्र

'जोय' का मन्त्र इस प्रकार है -

'या लोआईल बहकक या जोय या ताहिरो ।'

बिधि - प्रतिदिन प्रातःकाल ४० की संख्या में ६ दिनों तक इस मन्त्र को जपते रहने से शत्रु का मय दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'विरिमलसाह' तथा 'दरद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

वशीकरण कारक

'तोय' का मन्त्र

'तोय' का मन्त्र इस प्रकार है -

'या इस्माईल बहकक या तोय या ताहिरो ।'

बिधि - (१) किसी कार्य को सिद्धि के लिए कागज के टुकड़ों पर फारसी लिपि में अलग-अलग 'तोय' अक्षर लिखकर, उन्हें आटे की गोल्डि (गोल्डि) में अलग-अलग धर दें, फिर उन गोल्डियों के ऊपर पूर्वोक्त मन्त्र को ७०० बार पढ़कर फूँके मारें। तदुपरांत उन आटे की गोल्डियों को दरिया (नदी) के पानी में बहा दें तो ७ दिन के भीतर इच्छित-कार्य सिद्ध हो जाता है।

(२) वशीकरण के लिए एक कागज के ऊपर ७०० की संख्या में फारसी लिपि में 'तोय' लिखकर, उनके नीचे -

'या इस्माईल फलान को फलान के बस में करो बहकक या तोय या ताहिरो ।'

उक्त वाक्य को लिखकर, उस कागज का फलीला बनाकर सुरक्षित तेल में जलाएँ तथा हस्त, फुल, दीपक को उसके आगे रखकर लोबान की धुनी दें। इस तरह ७ दिनों तक नित्य यह प्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० की संख्या में उक्त मन्त्र का वप करने से इच्छित स्त्री या पुरुष वशीभूत हो जाता है। मन्त्र का वप करते समय, जिस वश में करना हो, दीपक का मुँह उसके धर की ओर रखना चाहिए।

कागज पर जो वाक्य लिखा जायेगा उसमें फलान को, फलान के स्थान पर जिस व्यक्ति का वप में करना हो, उसका तथा जिसका वश में कराना हो उसका - दोनों का नाम लिखना चाहिए।

इस मन्त्र के साथ 'विरिमलसाह' तथा 'दरद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

'जोय' का मन्त्र

'जोय' का मन्त्र इस प्रकार है -

'या लोआईल बहकक या जोय या ताहिरो ।'

बिधि - प्रतिदिन प्रातःकाल ४० की संख्या में ६ दिनों तक इस मन्त्र को जपते रहने से शत्रु का मय दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'विरिमलसाह' तथा 'दरद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

पिछले वाक्य में जहाँ फलानी का बेटा फलाना' आया है, वहाँ जिसे वध में करना हो, उसकी माँ का तथा उसका नाम लिखना चाहिए और जहाँ मुझ फलानी के बेटे फलाने' आया है, वहाँ अपनी माँ का तथा अपनी नाम लिखना चाहिए।

उक्त प्रकार से वाक्य तथा नाम आदि लिखने के बाद उस कागज का कसीदा बना कर जलायें तथा उस पर इस फूक, मिठाई आदि रखिए। पूर्वोक्त मन्त्र को ८०० बार पढ़ें। इस प्रकार साधन करने से इच्छित स्त्री-पुरुष हजार कोस की दूरी से भी चलकर, साधक के सामने आ खड़ा होता है।

(२) मंगलवार के दिन किसी मन्त्र की खोपड़ी पर एक लॉस में ८० बार फागमी लिपि में 'फो' अक्षर लिखकर, उसे गालू के घर की नींव में गाढ़ देने से, उस घर में निरुध नई आकलें आती रहती हैं।

इस मन्त्र के साथ 'बिसिल्लाह' एवं 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

Handwritten: नींद हराम करने वाला
'काफ़' का मन्त्र

'काफ़' का मन्त्र इस प्रकार है—

'या इतराईल बहकक या काफ़ या काफ़ियो !'

बिधि—एक सफ़ेद कागज के ऊपर फागसी लिपि में ५०० बार 'काफ़' अक्षर लिखकर उसके नीचे—

'या इतराईल फलानी के बेटे फलाने की नींद बन्द करा बहकक या काफ़ या कूहू मो !'

उक्त वाक्य लिखें। इस वाक्य में जहाँ 'फलानी के बेटे फलाने' आया है, वहाँ जिस व्यक्ति की नींद हराम करनी हो उसकी माँ का तथा उसका नाम लिखना चाहिए। फिर उस कागज की पूर्वोक्त मन्त्र 'या इतराईल...' द्वारा ५०० बार अभिधात करे अर्थात् मन्त्र पढ़-पढ़ कर फूँक मारे, तत्पश्चात् उस कागज को किसी भारी परावर के नीचे दबा दे तो साधन-व्यक्ति की नींद बंद आती है अर्थात् उसे नींद नहीं आती।

इस मन्त्र के साथ 'बिसिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

या इतराईल

'काफ़' का मन्त्र

काफ़ का मन्त्र इस प्रकार है—

काफ़ का मन्त्र इस प्रकार है—

काफ़ का मन्त्र इस प्रकार है—

या इतराईल

'काफ़' का मन्त्र

काफ़ का मन्त्र इस प्रकार है—

काफ़ का मन्त्र इस प्रकार है—

लोकायना-दायक

'भाम' का मन्त्र

या इतराईल बहकक या भाम यहमनो !

बिधि—एक सफ़ेद कागज के ऊपर फागसी लिपि में ६०० बार 'भाम' का मन्त्र लिखकर, उसे गालू के घर की नींव में गाढ़ देने से, उस घर में निरुध नई आकलें आती रहती हैं।

इस मन्त्र के साथ 'बिसिल्लाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम पूर्ववत् है।

२ कुफल, दिन और हाजिरात के मन्त्र

क.प्र.स. कं. म.प्र.

इस्लामी मस्जिदों में ६ कुपल प्रसिद्ध हैं। इन कुपलों का अलग-अलग सांस्कृतिक रूप से साधन करने से विशिष्ट मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। कुपलों के मान्य निम्नानुसार हैं—

पहला कुपल

“विभिन्नल्लाहिर्हं हमातिरेहं य विभिन्नल्लाहिम्स मीहल वसीति-
ल्लाजो लैसा कभिस्सर्हो रायदूनदुआ दिक्कल रायइन हकीम
विरेहमंत काया अर हमाहिर्मान सॉल्लल्ला हो अला-मुहम्मदिन
ब अला आलही ब अमदादिना अजमइन ।”

श्रीगुरुभ्यो नमः

“विश्वमल्लोत्तमोऽहमस्मिन्नेव विद्यमानः ।
 विश्वमल्लोत्तमोऽहमस्मिन्नेव विद्यमानः ।
 विश्वमल्लोत्तमोऽहमस्मिन्नेव विद्यमानः ।”

वीमरा कुपल

“ईदस्मिन्ललाहिरेहपानिर्हाम विस्मिललाहिम्मापीडल अली
मिल्लकी लंसा कमिस्संही श्वाइन दूबलानी इलकदीरो चिरह
मत्तका या अरहमर्गाहिर्मान ।”

बोधा कृपया

“बोभमलार्हरेहमानरेहम निभमलार्हिभमर्षल अल्लो
मिलल्लो त्स कम्ममल्लो सुमहन न हुल्ल अञ्जुल करोम निरम
तका या अरहमरर्हिभीन ।”

[illegible][illegible][illegible]

महाराष्ट्र के विद्यार्थियों के लिए

[illegible]

नौकर घर में भगवत्पादों को आगत हो तो नौकर गुरु की आज्ञा के अनुसार प्रणाम करके नौकर का काम शुरू करता है।

मोटा, बेम गाव, भेन, बकरी, बकरा आदि
उपर उलन छोड़ें कुत्ते को पक कर, उसे
दो मं बह जानवर ५ दिन के भीतर हो पर

आत्म-विकास की राह-दर्शक (स्मरण-शक्ति) कमजोर हो जाते हैं। ध्यान की ७ बार अभिवृत्ति करके, नियम मातृ-शक्ति को वापस लाना होता है। तब विद्या का प्रत्यक्ष

॥ १॥ आदर्शों का मिश्रणो काती हो अपवा पणालपन का
॥ २॥ वे व समय उसके कातों में उभर कुर्बानों को उबार



५०४१५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

यन्त्र को रखकर उसका फूल, इतल तथा मिठाई से पूजन करें। यह दीपक सकड़ी के पट्टे पर बैठी बान्पा या बालक की दृष्टि के एकदम सामने रहना चाहिए।

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20

१४

फिर कन्या अथवा बालक के हाथों की हथेलियों पर पूर्वोक्त मेंद्रक की राख को चमेली के तेल में सान कर लगा दें तथा उस दीपक के ऊपर अपनी दृष्टि जमा देने के लिए कहें। जब वह दीपक पर अपनी निगाह जमा दे, तब अपने हाथों में बाबल लेकर उन्हें पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। फिर बालक या कन्या के सिर पर उस दीपक को रखकर, अभिमन्त्रित चावलों को कन्या अथवा बालक के गसीर पर गारहे हूँ, उसमें दृक्छत्र प्रथम का उत्तर भाग तो जो कुछ पूछा जायेगा, उसका उत्तर मिलना चला जाएगा।

०:०:०

१॥ गोर पन्द्रह के यंत्र

ISSUE.COM/ABDUL23/MIAJI/ODISHA

यन्त्र को रखकर उसका फूल, इतल तथा मिठाई से पूजन करें। यह दीपक सकड़ी के पट्टे पर बैठी बान्पा या बालक की दृष्टि के एकदम सामने रहना चाहिए।

यन्त्र की दिशाएँ

यन्त्र को रखकर उसका फूल, इतल तथा मिठाई से पूजन करें। यह दीपक सकड़ी के पट्टे पर बैठी बान्पा या बालक की दृष्टि के एकदम सामने रहना चाहिए।

यन्त्र को रखकर उसका फूल, इतल तथा मिठाई से पूजन करें। यह दीपक सकड़ी के पट्टे पर बैठी बान्पा या बालक की दृष्टि के एकदम सामने रहना चाहिए।

1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16

१५

उदाहरण - 'रामचन्द्र' नाम के २६८ अंक होते हैं (किस अक्षर के कितने अंक होते हैं, इसका वर्णन आगे किया गया है।)

'र' के २००, 'अ' का १, 'स' के ४०, 'च' के ३, 'न' के ५० तथा 'द' के ४। इनमें से ३० घटा देने पर २३८ अंक शेष रहें। चौथाईअंक ६७ है तो यन्त्र को नीचे प्रदर्शित यन्त्र-चित्र के अनुसार घरा जायेगा तथा इस यन्त्र को २६८ का यन्त्र माना जायेगा -

७४	७७	८०	६७
७६	६८	७३	७८
६६	८२	७५	७२
७६	७१	७०	८१

२०

८१	८८	८१	५८
८१	५८	८५	८८
५१	८५	८७	८५
८५	८१	८०	८१

२१

उदाहरण - 'रामचन्द्र' नाम के २३८ अंक होते हैं (किस अक्षर के कितने अंक होते हैं, इसका वर्णन आगे किया गया है।)

११	५७७	१
२	७	१२
५७६	६	६
५	४	५७८

२२

११	७८८	१
५	८	१५
५८१	१	५
७	८	७८८

२३

फारसी अक्षरों के अंक

अभिप्रेत—

4-3000

卅一五〇〇

॥

13

— 50 —

दास-४

आल—७

3-209

9-15

संनि—६

श्रीमन्—

२११५-१

यन्त्रों के लक्ष्म खाने

६. काष्ठक के दन्त के ८ अर्ध खाते होते हैं। पित्त ने पा दन्त हो; बाँटों जहाँ से उतने ही अंक आने पर दन्त होता है। पहला अंक बाहर के दन्तों में से किसी घर में रहना आद, उससे दन्त की दाहि, बाँनी आदि ४ प्रकार की प्रकृति जानी जाती है।

भुक्तिम दान-शास्त्र २१

मन्य के तग का विधान भी हो तो

नना बाह्य, तत्पश्चात्

१. माधवाय नमः (१)

[illegible]

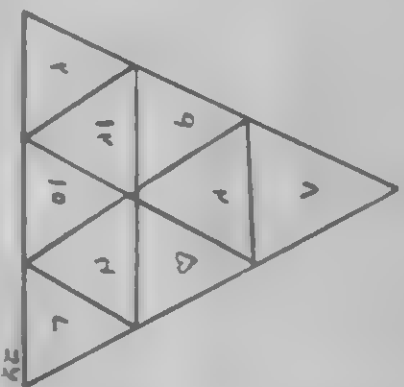
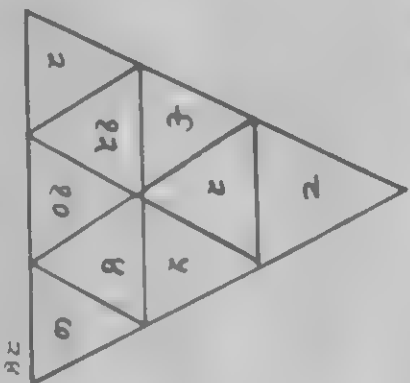
१११।५ अ या रफाईल या लक्रीली

॥ १०८ ॥ वाङ्मय निरन्तरि स्थितं श्रोता मनु

— १६६ —

[illegible]

मन्दिर का रखरखाव इस प्रकार होगा



सन्ध्या के समय मन्दिर की गोली ब्रौष कर उन्हें नदी में डहा देना चाहिए। इस प्रकार मन्दिर सिद्ध हो जाएगा।

मन्दिर के सिद्ध हो जाने के बाद प्रतिदिन १ मन्दिर लिखकर १०१ बार डहा मन्त्र पढ़ना चाहिए। बाद में आवश्यकतानुसार अब किसी मन्दिर की सिद्धि के लिए मन्त्र लिखें तो पूर्वोक्त प्रकार में पढ़न करके ० हजार बार

मन्त्र का पाठ करना चाहिए। मन्दिर-वृक्ष के प्रारम्भ में एक बार '१०००' बार पाठ करके अर्पित तथा अन्त में 'बालीस-बालीस' बार '१०००' बार करना चाहिए।

मन्दिर-वृक्ष को मिट्टी करने के लिए जब मन्दिर का साधन किया जाय तो मन्दिर-वृक्ष के नीचे लिख देना चाहिए तथा बाद में मन्दिर का मन्त्र पाठ देना चाहिए, अथवा सिल के नीचे देना चाहिए।

ISSUE NO. 1/2/3/4/5/6/7/8/9/10/11/12/13/14/15/16/17/18/19/20/21/22/23/24/25/26/27/28/29/30/31/32/33/34/35/36/37/38/39/40/41/42/43/44/45/46/47/48/49/50/51/52/53/54/55/56/57/58/59/60/61/62/63/64/65/66/67/68/69/70/71/72/73/74/75/76/77/78/79/80/81/82/83/84/85/86/87/88/89/90/91/92/93/94/95/96/97/98/99/100

मन्दिर-वृक्ष को मन्त्र १० वर्षों है। इस मन्दिर को कानन पर मन्दिर-वृक्ष के नीचे लिख देना चाहिए। अन्य साधन-विधियाँ मन्दिर-वृक्ष के नीचे लिख देनी हैं।

४	८	३	८
५	६	३	६
६	२	६	२
७	११	५	६

२६

१	८	१३	८
६	५	१३	५
१	१२	११	१२
१	११	१०	११

२७

८ छवर्षी बीसा यन्त्र

नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र की राशि के समय पीपल के पत्तों के ऊपर खनभिन्नी संख्या में लिखते रहने से यन्त्र की अष्टकता निकल जाती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—

८	३	१०
६	७	४
३	११	६

८८

८	३	११
९	८	५
३	११	५

८६

यन्त्र को लिखते समय सर्वप्रथम पूरी 'विस्मिताह' पढ़कर पूर्वोक्त दहे यन्त्र—“या विष्णवे नमः ...” का जप करते जाना चाहिए।

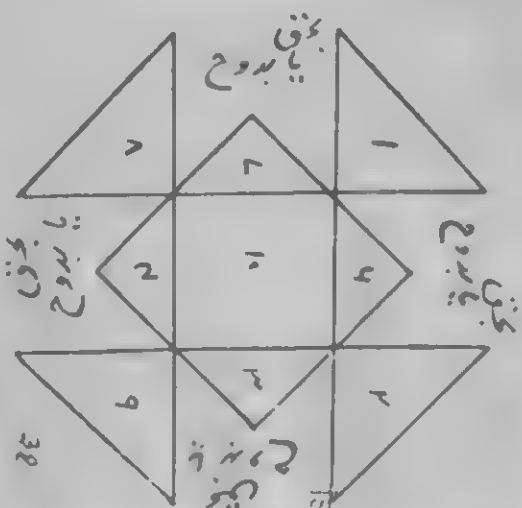
यन्त्र की व्यवस्था की छत्ती देकर तथा एक बार पूरी यन्त्रावाली ११६४ यन्त्रों का “या बुद्ध” मन्त्र को पढ़ना चाहिए। यन्त्रावाली ११६४ यन्त्रों में ४०४० बार बड़ा मन्त्र पढ़ना चाहिए। यन्त्रावाली ११६४ यन्त्रों की संख्या को ध्यान में रखते हुए यन्त्र की रीति से व्यवस्था की जाए।

issuu.com/abul23/muslim/बीसा यन्त्र

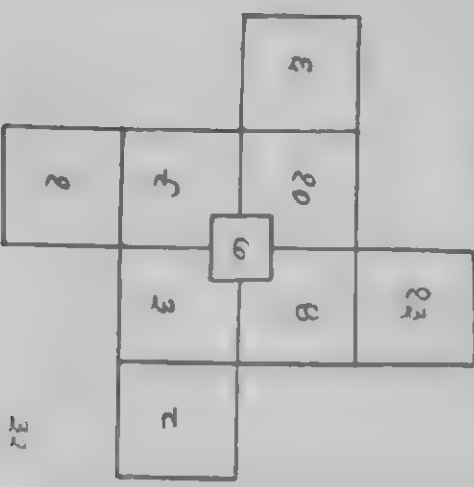
यन्त्रावाली ११६४ यन्त्रों में ४०४० बार बड़ा मन्त्र पढ़ना चाहिए। यन्त्रावाली ११६४ यन्त्रों की संख्या को ध्यान में रखते हुए यन्त्र की रीति से व्यवस्था की जाए।



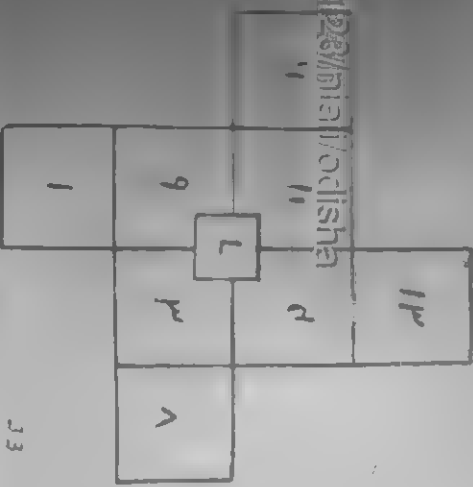
३०



६ ज्योतिषीय यन्त्र (२)



तुल्यम रत्न-माला | २७
 १. १००० वर्षों की गणना के अनुसार, जहाँ है। इसे लिखते तथा प्रमाण करने
 के लिए १००० वर्षों की गणना के अनुसार ही समझनी चाहिए।



यन्त्र का यन्त्र

यन्त्र का यन्त्र (१) यन्त्र, (२) यन्त्र, (३) यन्त्र तथा (४) यन्त्र।

यन्त्र का यन्त्र यन्त्र प्रकार होता है—



यन्त्र का यन्त्र यन्त्र प्रकार होता है।

पर विभिन्न कामनाएँ पूर्ण होनी हैं। इस सम्बन्ध में निम्नानुसार मर्यादा काहिदा।

रविवार रविवार के दिन आक के दूध में मरघर की भस्म मिलाकर पट्टर का यन्त्र लिखें तथा उसके नीचे शय्य का नाम लिखकर बिना की अग्नि में डाल दें। ऐसा १०८ बार करने में प्रायः विधिफल हो जाता है।

सोमवार सोमवार के दिन सफ़ेद दूध, केला, मक्के के निम्बूरी तथा क्षपिला माय का दूध इन सबको मिला कर मरघा के समुद्र में डाल दें। यन्त्र को विनोम रीति से लिखकर चाहु अथवा कठ में दौध लें तो राजा भी वशीभूत हो जाता है अन्य लोगों के विषय में तो कहना ही क्या है ?

मंगलवार मंगलवार के दिन कौल के पत्थ की बसम द्वारा कौल के ही रक्त में, मुँह के ककन के ऊपर साध्य-व्यक्ति के नाम सहित यन्त्र को लिखकर, उम्मा (साध्य-व्यक्ति) के दरवाजे पर गाढ़ दें तो साध्य-व्यक्ति का उच्छादन होना है।

बुधवार बुधवार के दिन नाग केजरा तथा गोरोजन में यन्त्र की बगल पर लिखकर चली बनाए फिर उग सरासों के तेल के दीपक में जलाकर मरघा की न्यायदी में काजल पाई भथा तम काजल का अपनी आँखों में लगाकर त्रिस माध्य न्योन्मुख के सामने जमाएँ, वह देखते ही वशीभूत हो जायेंगा।

गुरुवार गुरुवार के दिन हन्नी, गोरोजन तथा पी... इन सब वस्तुओं के मिश्रण में यन्त्र को लिखकर उसके नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम लिख कर उस यन्त्र को अग्न में डाल दें, आशान के नीचे दवा दें तो साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है।

शुक्रवार शुक्रवार के दिन चण्ड वन, गुड पीर गहिर इन सब वस्तुओं की भस्म कर यन्त्र को लिखकर उग सरासों के तेल में दौध लें तो साध्य-व्यक्ति अग्न में जलाने से निवृत्त हो जाता है।

शनिवार शनिवार के दिन बिना की सबही की कलस तथा दूध के रक्त द्वारा उच्छादन लिखकर उसके नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम लिख, फिर उसे मरघर में गाढ़ देने में साध्य-व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

यन्त्रलेखन के विषय में अन्य ज्ञानव्य

विभीषी गन्ध की लिखने समय निम्नलिखित नियमों का पालन करना आवश्यक है।

१. यन्त्र लेखन में पूर्व पीच-रत्नादि में निहित हो जाना आवश्यक है।

विभीषी पवित्र स्थान में, शुभ मुहूर्त का विचार करके 'कुम्हिल' का बंधुकर हो यन्त्र लिखना चाहिए।

२. बिना दिनों तक यन्त्र-साधन करे, उतने दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा हर प्रकार की बुराई, पाप-कर्म-असत्य-वाच, भ्रम, निन्दा, ईर्ष्या, क्रोध आदि से दूर रहना चाहिए।

यन्त्र लिखने का समय निश्चित कर लेना चाहिए अर्थात् प्रति-यन्त्र में पूर्व पाकी में भरे कलश (पड़े) की अपने सामने स्थापित करना चाहिए अथवा रात्रि में लिखना हो तो सामने दीपक जला लेना चाहिए।

५. यदि एक से अधिक मरघा में यन्त्र लिखने हो तो अन्तिम बार यन्त्र लिखने वाले यन्त्र का विधिपूर्व पूजन करना चाहिए। जहाँ केवल एक यन्त्र लिखने का विधान हो, वहाँ पहले ही यन्त्र का विधिपूर्व पूजन करना चाहिए। यन्त्र पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि का होना आवश्यक है।

६. मुस्लिम-विधि में यन्त्र की मक्के कागज पर कासी स्याही से लिखा जाता है। हिन्दू-विधि में यन्त्र लिखने के विभिन्न प्रकारों के विषय में यन्त्र बनाया जा चुका है।

८. मित्रता के लिये यन्त्र लिखना हो तो मुँह में मिश्री अथवा माय लाकर लिखना चाहिए तथा अगर-नगर, चन्दन चूरा, गन्ध, मिश्री, चूरा आदि शहर, कपूर, दाल चीनी, जायफल तथा मेथा... इन सबको यन्त्र धूप दनी चाहिए।

९. मारण-उच्छादन के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में मोम रख कर लिखना चाहिए (मोम) का घुनी देनी चाहिए।

१०. यदि स्वयं चन्द करे के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में चूरा रखना चाहिए तथा उसी (चमक) की घुनी देनी चाहिए।

११. यन्त्र लिखने वाले तथा साध्य-व्यक्ति की रात्रि का मिलावट करना लिखना उचित है। यदि साधक की रात्रि आधी तथा साध्य व्यक्तियों हो तो 'आधी' यन्त्र लिखना चाहिए। क्योंकि जल अग्नि में

मिलता है। इसी प्रकार साधक की रात्रि 'आधी' और साध्य की रात्रि 'आधी' यन्त्र लिखना चाहिए।

गान्ध को पानो में घोलकर रोगी-व्यक्ति को पिलाने से उपकार
पानो जाता है।

जन्मो-रिती ग्रहण के समय उस यन्त्र को १०००० बार कानन
लक्ष्मण गुरुन करने में यन्त्र सिद्ध हो जाता है। मिद्ध हो बाने के बाद
गणपति में सानन चाहिए।

http://abdu23/mali/odisha

४ | कार्य-साधक एवं रोजी-दायक प्रयोग

इस प्रकार में मनोकासना पुरक, रिरिता नाकक, रोजीसिद्धि।
कार्य-साधक तथा दूतान की विरिी खोलने से सम्बन्धित कतिपय मुख्य
प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है।

इस प्रयोगों में 'मन्त्रिम' में पूर्व के दो प्रयोग 'कार्य साधन मन्त्र मन्त्रा
'मन्त्रिम' टालने का मन्त्र 'ये नीनों प्रद्व' 'इलापो प्रयोग' न होकर नोकि
प्रचालन है, परन्तु इन्हें तथा मन्त्रमन्त्र दोनो ही प्रयोग में साने है,
अनः उनका उल्लेख भी साथ ही कर दिया गया है।

मनोकासना पुरक यन्त्र तथा रोजी मिलने का प्रयोग मन्त्रा (६)
इत दोनों में पहले में केवल यन्त्र का साधन किया जाता है तथा दूसरे में
यन्त्र तथा मन्त्र दोनों की साधना करे जाती है। जेय मन्त्रा प्रयोग केवल
मन्त्र साधन के है, अनः जिस प्रयोग के साथ जिस विधि का उल्लेख किया
गया है, उसका यथोचित रूप में साधन करना चाहिए।

जंसा कि प्रथम प्रकार में हो बनाया जा चुका है कि किसी भी
मुसलमान मन्त्र का साधन करते समय सर्वप्रथम गुरो 'विमिलनाह' को
पहला आवश्यक है नदुपरातन मन्त्र के अरम्भ तथा अनः में दकद' पुरना
भी निहायत जरूरी है। अनः इस नियम का पालन आवश्यक करना चाहिए।
'विमिलनाह' तथा 'दकद' पहले की आवश्यकता का उल्लेख अधिकांश
प्रयोगों में साथ ही कर दिया गया है, परन्तु वही ऐसा निरंन न हो, वही
भी इस नियम का पालन करना आवश्यक है।

मनोकासना पुरक यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कपाज पर काली स्याही में लिखकर
गुल तथा लाबान की धनी देन के बाद लाबीज में भरकर जिस व्यक्ति को
वाह में बांध दिया जाता है, उसकी सभी मनोकासनाएं पूर्ण होती है।

इस यन्त्र को लाबीज में भरकर गले पर भुजा में बांधने में धन सग
तथा स्वास्थ्य का साथ होता है एवं शत्रु मित्र बन जाता है।

रोगी माला	१२	१६	२६	असि गुरुमर
३०	७२६३ २६	८६७ २	९१६७२५ ८	कामादुर्गेन
७१६१६७ २३	७६८	७३०७	७२६१	६००
३	६	१५	१६	२३
७२८६	८६५	७२६२६६ १६	७५६	२३०७
११	१८	२३	७	१५
७५६	१३०५	७७६६	८६६	७२७७६६ १६७०
भरकरी	५	६	१२	दूसा कानन
गुरुमर	२३७१६६	७५७	१३०८	अनी दूसा
भाना	१६७	७५७	१३०८	७७८
१६६				७५

जिन ۱۲	۱۴	۲۹	۹۰ جین
۳۰	۷۲۹۳	۸۹۷	۹۹۹۹۹۹
۲	۲	۸	۸
۳	۹	۱۵	۱۴
۴	۱	۱	۲
۵	۱	۱	۱
۶	۱	۱	۱
۷	۱	۱	۱
۸	۱	۱	۱
۹	۱	۱	۱
۱०	۱	۱	۱
۱१	۱	۱	۱
۱२	۱	۱	۱
۱३	۱	۱	۱
۱४	۱	۱	۱
۱५	۱	۱	۱
۱६	۱	۱	۱
۱७	۱	۱	۱
۱८	۱	۱	۱
۱९	۱	۱	۱
۲०	۱	۱	۱
۲१	۱	۱	۱
۲२	۱	۱	۱
۲३	۱	۱	۱
۲४	۱	۱	۱
۲५	۱	۱	۱
۲६	۱	۱	۱
۲७	۱	۱	۱
۲८	۱	۱	۱
۲९	۱	۱	۱
۳०	۱	۱	۱

मनोकासना पुरक प्रयोग

सर्वप्रथम उर्दू के सवा पाब आठ में खमीर उठाकर तथा उसकी रोटी बनाकर उसे दो तरह वाले एक सफेद कपाल में रखें। फिर उसमें से चौथाई रोटी को अंगूली आरबेरी के बराबर की १०१ गोमियां बनाकर प्रत्येक गोली को निम्नीलिखित मन्त्र में ग्यारह-ग्यारह बार आधमनिन्न करें, तदुपरांत जेब रोटी सहित सभी गोमियों को किसी नदी में मछलियों को खाने के लिए डाल दें। इस प्रकार ४० दिन तक प्रयोग करने से साधक की सभी मनोकासनाएं पूरी होती हैं तथा रोजी भी प्राप्त होती है।

मन्त्र—“या इलाक़िल बहक़क़ या अल्लाहा।”

उक्त मन्त्र के आरम्भ में एक बार पूरी ‘बिस्मिल्लाह’ तथा आदि और अन्त में ७७ बार ‘दरुद’ पढ़ना आवश्यक है।

दरिद्रता-नाशक प्रयोग

यान बाल किसी से बानबीत करने में पूर्व, हाथ-मुंह धोकर एक बार ‘या बिस्मिल्लाह’ पढ़ने के बाद निम्नलिखित मन्त्र का १२०० बार प्रयोग करें।

मन्त्र—“या कर्कियो या मर्कियो या मर्कियो या कर्कियो।”

इस प्रयोग को निरन्तर ४० दिनों तक करते रहने से दरिद्रता दूर जाय। यदि इस प्रयोग को प्रतिदिन किया जाय तो दरिद्रता से हमेशा दूर रहना सुटकारा मिल जाता है।

रोजी मिलने का प्रयोग (१)

रोजी मिलने के लिये सर्वप्रथम पहले एक बार पूरी ‘बिस्मिल्लाह’ पढ़ें। फिर नीचे लिखे मन्त्र को ७ दिनों तक, नित्य १००० की संख्या में पढ़ना चाहिए। मन्त्र-अप के आरम्भ तथा अन्त में तौमन्तीन बार ‘दरुद’ पढ़ना आवश्यक है।

मन्त्र—“या बुवदह या या हयियां या क़ियुमो या अल्लाहा या फ़दो या शिरो या समदो या रहीमो या कारिसो या अहदो या लमयलिदो बलम पुलद बलमयकुन जुह क़ुवन अहद।”

उक्त मन्त्र के प्रयोग में रोजी प्राप्त होती है। जब रोजी मिलना आसानी हो जाय, तब नित्य १०८ बार इस मन्त्र का अर्प करते रहना आवश्यक है।

रोजी मिलने का प्रयोग (२)

रातों तथा लग्न पाने के लिए आधी रात के समय सबसे पहले एक बार पूरी ‘बिस्मिल्लाह’ पढ़कर, फिर नीचे लिखे मन्त्र को १००० बार प्रयोग करें।

‘या मक़ूरो’

उक्त मन्त्र को पढ़ने के पहले तथा बाद में २१ बार ‘दरुद’ पढ़ना आवश्यक है।

दरुलोस दिनों तक उक्त प्रयोग करने से लग्न तथा रोजी-गारि की पूर्ण इलाह दैन लगती है।

जब रोजी मिलने लगे तब इस मन्त्र का नियम १०८ बार जप करने रहना चाहिए।

रोजी मिलने का प्रयोग (३)

मन्त्र—“बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम या इलाहील बरकत या अल्लाहो अल्ला हुन्नमल्ला मुहम्मद नब धारक नमस्तलम।”

बिध—शुक्रवार या बुधवार दिन बार में इस प्रयोग को आरम्भ करना चाहिए। सर्वप्रथम सेवा पाव उद के आठे की दो रोटियां हाथ में लिये जायें। उन्हें एक-एक करके खाएँ, फिर उन रोटियों में धार के बराबर की १०१ गोलिएं बनाये तथा उनमें से प्रत्येक गोली को उन्नत मन्त्र से अभिमन्त्रित करें। तद्वरान्त उन गोलियों तथा जेप बनी हुई रोटियों को इमाम से रखकर किसी नदी के किनारे पहुँचे और गोलियों को नदी की धारा में फेंक कर, जेप वही रोटियों को टुकड़े-टुकड़े करके पक्षियों को खिला दें।

उन्नत प्रयोग की ५० दिनों तक नियम नियमित रूप से करते रहने पर रोजी प्राप्त होती है।

मन्त्र के आरम्भ में पहले एक बार पूरा ‘बिस्मिल्लाह’ तथा शुरू एवं बाकीर में ७७ बार ‘दरुद’ भी पढ़नी चाहिए।

रोजी मिलने का प्रयोग (४)

सर्वप्रथम महीने के पहले बुधवारिधार को सूयोदय से पहले सकेद कागज पर नई स्याही से नीचे प्रदर्शित मन्त्र को लिखें—

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

४६

५	१५	१५
३५	१५	१२
५०		१५

४८

इसके बाद किसी नदी या तालाब में नार्थ के अगुआ गान्ते में अभिमन्त्रित किया की ओर मुँह करके खड़े हो जायें तथा एक बार पूरा ‘बिस्मिल्लाह’ पढ़कर, नीचे लिखे मन्त्र की ४४४४ या ३३३३ बार पढ़ें—

मन्त्र—“अजिजो या जिब्राईल बरकत या वासिलो।”

उन्नत मन्त्र के आदि तथा अन्त में ७१-७१ बार ‘दरुद’ पढ़नी चाहिये। दरुद का मन्त्र इस प्रकार है—

दरुद—“अल्ला हुन्नामल्ले अल्ला मुहम्मदिन व अलअले

मुहम्मदिन व वारिक वमल्लम।”

उन्नत प्रकार में नियम ७२ दिनों तक मन्त्र जप करने रहने में मन्त्र प्राप्त हो जाता है।

यन्त्र की प्रतिदिन एक घण्टे में सितोकर अथवा घर के दरवाजे पर जा देना चाहिए और दूसरे दिन आठे में गोली बाँधकर, उस गोली की जाँच करें। ये लपेट कर यन्त्र की नदी में बहा देना चाहिए। ७० दिन पौछे तक यन्त्र लिखकर ७० मन्त्र जप करने चाहिए। इस प्रयोग को आरम्भ करने के १० दिन बाद ही रोजी प्राप्त होने लगती है। ७० दिन के बाद फर्मावें को ध्यान में रखना है।

रोजी मिलने का प्रयोग (५)

सर्वप्रथम ‘या बुद्ध यन्त्र’ को किसी शुभ महीने के पहले बुधवार को पहण के दिन अथवा दिवाली की रात को लिखना चाहिए।

यहल चतुर्न्ली के तेल का दीपक जलाकर, उसके सामने सत्ता पात्र भिठाई तथा मुग्नियत इत्र रखकर, लोद्यान का धनो दे । फिर नोचे प्रदाजान रत्न को १८ बार अणुले द्वारा पृथ्वी पर लिखे । एक एक यन्त्र लिखकर इस पर एक एक बलासा तथा पूल नरुकर यन्त्र की विरले जायें । यन्त्र लिखते समय 'वा भुह ह' यह मन्त्र पढ़ते जायें ।

दोमव दन्त को संफुद कागज के ऊपर काली स्याही में लिखें तथा उस पर चर्चो हुई 'मोठाई' मूल. इन् आदि सबका चर्चा द. फिर दोहरा ली को ऊपर यन्त्र को रखकर, लोचान को धरो दं ।

फिर एक बार पूरो 'विभिन्नमाह' पढ़कर २१ बार 'दक्ष' तथा ४० बार 'वश' मन्त्र पढ़ो। वश मन्त्र इस प्रकार है-

‘या जिवाहेल या दराहेल या रफाहेल तुन्कार्मेल बरकक या बुद्ध ।’

यन्त्र का स्वरूप यह होगा—

या	या	या	या
कुइह	कुइह	कुइह	कुइह
या	दा	दा	या
कुइह	ल	ल	कुइह
या	दा	ल	या
कुइह	ल	दा	कुइह
या	या	या	या
कुइह	कुइह	कुइह	कुइह

629

मन्त्रों का प्रयोग करने वाले लोग 'या हुं हूँ' पढ़कर, यात्रा को सौतेला बनाना चाही के लिये 'या हुं हूँ' पढ़कर, यात्रा को सौतेला बनाने की कोशिश करते हैं।

[illegible]

ق	ق	ق	ق
ق	ق	ق	ق
ق	ق	ق	ق
ق	ق	ق	ق

33

रसिद्रता-नाञ्क ७६ का यन्त्र प्रयोग

नीच प्रशासन प्रणाली को संकेद कागज पर काफी स्थायी से लिखें।
नया गवर्नर आते हैं तब से 'विस्मिल्लत' लिखें, इस प्रश्न का पूजन
नहीं करना या कुछ हद तक प्रश्न की भाँति ही करें।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनेगा—

१६८	२०२	२०५	१६१
२०४	१६२	१६७	२०३
१६३	२०७	२००	१६६
२०१	१६५	२०६	२०६

५०

१९८	१०४	१०६	१९१
१०५	१९४	१९६	१०४
१९५	१०६	१००	१९९
१०१	१९७	१९९	१०५

५१

यन्त्र लेखनोपरान्त पहले एक बार पूरी 'विस्मयलाह' पढ़ें, फिर १००१ बार निम्नलिखित यन्त्र को पढ़ें—

“या अल्लाहो या रहमानो या रहीमो या हैयो या कैयूमो ।”

इस यन्त्र के बाद तथा यन्त्र में प्यारह-प्यारह बार 'दरुद' पढ़ें।

उत्प्रेषणार्थ यन्त्र को सोने या चांदी के ताबीज में मढ़वाकर अपनी दाईं भुजा में धारण करें। साध ही प्रति दिन प्रातःकाल यन्त्र को लोबान की धुनी अवश्य देंगे रहें।

१८ प्रयोग, से रोजी प्राप्ति होगी है तथा दरिद्रता दूर होगी है।

मुसीबत टालने का मंत्र

मन्त्र—“शेख फरीद की कामरी और अधिपारी निसि ।

ISLAMIC LIBRARY/DELHI/अस्सलाम्/उदाहिने जग ओला-यानी विस ॥

बिधि—यदि रास्ते में आग लग पाय या पानी बरसने लगे या ओले पड़ें या किसी के द्वारा जहर देने का भय हो तो इस मन्त्र को तीन बार पढ़ें। यानी बजाने में मुसाद्वय टन जानी है।

दुकान की बिक्री खोलने का यन्त्र

यदि किसी ने जादू-टोना अथवा साँपक प्रयोग करके दुकान को बंद कर दी हो तो निम्नलिखित यन्त्र का साधन करने में दिवसी पूजा जाती है तथा माल खूब बिकने लगता है।

बिधि—पुर्वल पक्ष के पहले गुरुपूजिचार को कर्म चक्र की रीति से बजाने पर बैठकर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को कामात्र के ऊपर स्याही में ७ बार लिखें। फिर यन्त्र पर फूल रखकर लोबान की धुनी दें, तबुपरान्त एक बार पूरी 'विस्मयलाह' पढ़कर ११ बार 'दरुद' पढ़ें, फिर निम्नलिखित यन्त्र को १०१ बार पढ़ें—

मन्त्र—“बिर्जुकुलफत हू दुकान फलाने की विमुक्त फलाने का आर्थागर्दी बहक या फलाहो या वामितो ।”

उक्त मन्त्र को १०१ बार पढ़ने के बाद फिर ११ बार 'दरुद' पढ़ें। यान्त्रिक आखिर में लिखें हुये एक मन्त्र का फलीला बनाकर उसे भीठे तेल में डालें, ७ दिनों तक जलाय तो दुकान की बिक्री खुल जायगी है।

बिधेय—यन्त्र के नीचे उक्त मन्त्र को लिखना भी आवश्यक है। यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है—

८२४	८२७	८३०	८३६
८२६	८२७	८२३	८२८
८२८	८२३	८२५	८२२
८२६	८२९	८२६	८३९

५३

८४९	८४८	८४०	८१५
८४९	८१८	८४५	८४८
८१८	८४५	८४७	८४४
८४५	८४१	८१९	८४१

५३

कार्य-साधन मन्त्र (१)

मन्त्र—“ओम् नमो सात समुद्र के बीच शिला जिस ।
सुलेमान पैगम्बर बैठा, सुलेमान पैगम्बर के चारों दिक चार
मन्त्रिकल तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया, एक मन्त्रिकल
पूरव को धाया, देव-दानवों को बाँध लाया, दूसरा मन्त्रिकल

गन्धम को धाया भूत-प्रेत को बाँध लाया, तीसरा मन्त्रिकल
जल को धाया अऊल-पितर को बाँध लाया, चौथा मन्त्रिकल
रक्षक को धाया दक्षिणी शक्तिनी को पकड़ लाया । चार चार
मन्त्रिकल चहुँ दिशि धावे, अल-खिदर कोऊ रहन न पावे, रोग दोष
मर दूर बढ़ावे । शब्द सौचा पिढ कौचा कुरा मन्त्र इश्वरदाया ।”
इस मन्त्र को जप करके शिला को सात के समय चारों
दिशा में गाढ़ दे, फिर धूप-दीप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र को जपे तो
गन्धम-काय सिद्ध होता है । पहले इस मन्त्र को ग्रहण, दिवाली या हली
दिवाली में एक लाख को सकृद्वार में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये ।

कार्य-साधन मन्त्र (२)

मन्त्र—“ओम् नमो विष्णुललाहि रहिमान रहोम राजनी मों
ज्या मुहम्मदा पीर, बला जला मवासर का तोला स्याय, अरमी
बास का धावा जाय, सफेद घोड़ा सफेद पलान, जावे चरा
गन्धमदा उजान, नौ सौ कुनक आगे धले, कुनक पीछे चले, कौचा
गन्धमदा जाला ध्याया बलि बालि-बालि रे मुहम्मदा पीर,
गन्धम नही कोई धीर, हमारे चौर को ल्याव, सात समुद्र
को बाई सों ल्याव, प्रता के वेद मों ल्याव, काजी की कुरान सों
ल्याव, अठारह पुराख सों ल्याव, जाव जाव जहाँ होय तहाँ मों
ल्याव सौ पवन सौ कोट सों किला सों ल्याव, मुहल्ला गली सों ल्याव,
क्या चौगाहा सों ल्याव, इवेत खाना सों ल्याव, बारह आभूषन
गालह सिंगार सों ल्याव, काजल कर्जोटा सों ल्याव, मही की
सीम सौ, हाट बाजार सों ल्याव, खाट सों, पाया सों, नौ नाड़ी
गन्धम कोटा की धूमनी बलाय सों ल्याव, दे ताहया मिनार जिन
गन्धम बास निख-मिख रोम-रोम सों ल्याव, रे ताहया मिनार जिन
गन्धम माली पीटनी तोहनी पछाहनी हाथ हथकड़ी पाँव चढ़ी गला
गो क उलटा कब्जा चढ़ाय मुख बुलाय सीम खिलाय कैम कैम
हो भयार, बिन लिखे मत जाव, ओम् नमो आदम गुरु को ।”

विधि—रात के समय गोबर का बीजा लगाकर धूप-दीप, चन्दन, माला तथा नैवेद्य चढ़ाकर, सवा सेर मोहन भोग का भोग लगाकर, इस मन्त्र को १०८ बार अया अया तो सिद्ध हो जाता है।

जब किसी काम को सिद्ध करना हो उस समय इस मन्त्र को पढ़कर उड़द को मस्तक पर रखें तो कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र से भूत-प्रेत आदि को भी दूर किया जा सकता है।

पीर का क्रलमा

मन्त्र—“या जरावाजखिन्न मैं तेरा इलियास लिलामकादिल
चित मेरे पास।”

विधि—कुछ के हाथों पर रात्रि के समय एकान्तस्थान में लोबान की धूप देने लगा इस मन्त्र को उन्नीस माला पर १०८ बार पढ़ने से २१ दिन के भीतर पीर प्रत्यक्ष आकर प्रजन का उत्तर देता है।

५. भूत, प्रेतदि दोष-निवारक प्रयोग

इस प्रकरण में भूत-प्रेत, जिन, परी आदि के प्रकोप से मुक्ति दिलाने का विषय प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है। इनमें से सभी प्रयोग जिन के जो हिन्दू नया मुसलमान दोनों समझाने में एकजिन्त हैं। इन प्रयोगों के कुछ मन्त्रों में ‘मुहम्मदावीर’ का नाम है, वही कुछ का प्रारम्भ ‘आय’ या ‘आम’ नामों आदिज गुरु को इस वाक्य के साथ हुआ है। कुछ के अन्त में ‘फुराफन्च हैणरोवाचा’ वाक्य भी आता है। परन्तु ये सभी मन्त्र-पद पञ्चावधानों के तथा हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही द्वारा मान्यता प्राप्त हैं, अतः उन्हें इस प्रकरण में स्थान दिया गया है।

पन्त्रों का प्रयोग करने में पूर्व यह आवश्यक है कि उन्हें किसी पहलू पर अस्मर पर १०८ की संख्या में काली भगिनी द्वारा सवेद कथन पर लिखकर पुस्तनादिक के द्वारा सिद्ध कर लिया जाय। तद्वरान्त आवश्यकता के समय प्रयोग में लिया जाय। मन्त्र प्रयोग एवं साधन के विषय में जहाँ वेसा मिलता है, तदनुकूल ही कार्य करना चाहिये।

षट्चो के लिए आरामदायक गंड़ा देने का मन्त्र

मन्त्र—“बंध तो बंध सोला मुल् जा अली का बंध, कीड़े भीरु मंगोड़े का बंध, ताप और निजारी का बंध, जूही और चुस्कार का बंध, लज्ज और गुलर का बंध, दीठ और मूठ का बंध, कीये और कराये का बंध, भेजे और भिजाये का बंध, नाचन पर दायन का बंधन देव तो बांध सोला मुल् जा अली का बंध, राह और बाट का बंध, जमीन और आसमान का बंध, घर और बाहर का



مجتبای فضایل

یا جبرائیل

5	2
>	7

یا ایها الذی
یا ارحم الراحمین

حافظ احمد
باب خروج باب خروج

۱۔ وہ قتل
 ۲۔ قتل کے قاتل
 ۳۔ قتل کے قاتل
 ۴۔ قتل کے قاتل

۲۰۰۰ ۲۰۰۰ ۲۰۰۰

भूत-जिन उतारने का यन्त्र

22	22
22	22

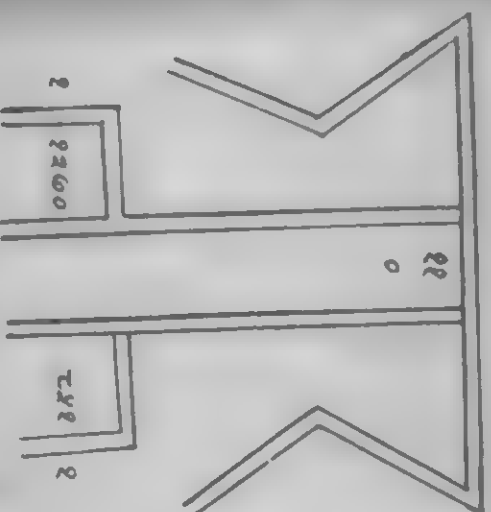
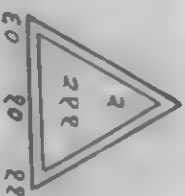
3	2
3	1

निर्लेप पुरुष पर प्रदीप्त मन्त्र को संवेद का गाऊँ के ऊपर काली म्यही
 प्रतीति, प्रतीति बनाय तथा उसमें गई भरकर जलाय एवं रागी को
 साध में लाने दे तो भूत-जिन आदि उतर जाते हैं ।

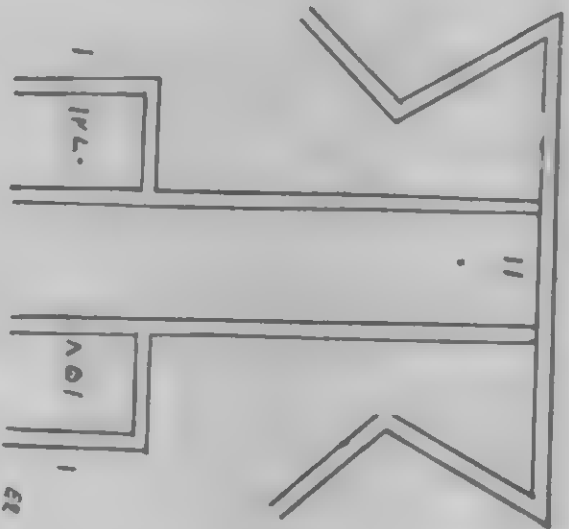
प्रत निवारण यः

[isilur.com](#)

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर के द्वारा लिखकर
 श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः इत्येतत् प्रमाणं
 श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः इत्येतत् प्रमाणं
 श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः इत्येतत् प्रमाणं



(प्रेत निवारण-मन्त्र, हिन्दी)



(प्रेत निवारण-यन्त्र, उर्दू)

भूतनाद दोष-निवारण यन्त्र

अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र अष्टदश कादर बीसानी को सजाम करके सफेद कागज के ऊपर केसर से लिखना चाहिए।

यन्त्र में ऊपर बायाँ की ओर भूत-प्रेतनाद में प्रसन्न होनी का नाम, जो लिखना चाहिए। यन्त्र में 'जह' फलाने प्रसन्न आया है, वही भी रोनी का नाम लिखना चाहिए।

यावसत	यावसत	यावसत	यावसत	यावसत	यावसत
११	१५	१८	२०	२४	२८
५	५	१०	१५	२०	२५
६	३	१६	२१	२६	३१
१३	१२	७	२	३	४

वह एक या निगडित
या भीकालि या सुसाफील या इगडित
जो कोई फलाने की देही को दूख
दे रहा है, उसे उस फलाने से जला दीजिए

(भूतनाद दोष-निवारण यन्त्र, हिन्दी)

वेसलोपरांत यन्त्र पर पाल-मूल बटाये तथा धूप-दीप देकर पूजा की। फिर उभे एक नये गकेद कराहे में लोठ कर बत्ती बना लें तथा दीपक व गेसी का तेल धारकर उसमें बह बत्ती टाँपकर पीता मिट्टी द्वारा नीचे गण पवित्र स्थान पर रखें।

दीपक के सामने फूल तथा मिठाई भी रखें। जब दीपक जल जाय तब श्रुत प्रवृत्त रोगी को अपनी निगाह दीपक की भी पर जमाने के लिए कहे। इस प्रयोग से श्रुतादि दूर भाग जाते हैं।

११	१२	१	८
१	५	१०	१५
५	३	१५	९
१३	१२	८	१

११ १२ १ ८
 १ ५ १० १५
 ५ ३ १५ ९
 १३ १२ ८ १

११ १२ १ ८
 १ ५ १० १५
 ५ ३ १५ ९
 १३ १२ ८ १

११ १२ १ ८
 १ ५ १० १५
 ५ ३ १५ ९
 १३ १२ ८ १

११ १२ १ ८
 १ ५ १० १५
 ५ ३ १५ ९
 १३ १२ ८ १

(श्रुतादि दोष-निवारण मन्त्र, उर्दू)

परियों का खलस दूर करने का मंत्र

मन्त्र—“ओम् मह कृष्ण कृष्णम्ह विमलम्ह बही मदी में चार देव करैल करैल अहंकार महंकार मुहम्मदा वीर ताश्या सिलार बजाई ख्वाजे मुअय्यदीन तुम्हारी खुशबोई में बही कमाख सुलैमान परा संक परी को हुकूम कीले कौन कौन परी स्याह परी सराफ परी ए

परी अर्थात् कुर्म की लाऊली बीबी फातमा कीली भीली आयना पाला फन आय स्नेना सवा भेर शर्वत का प्याला आप ले आप हाजिर होना भीर मुहम्मदीन मखदूम जहानी या शेख सरफ अहिंया पठाख आप हाजिर न हो तो रोज कयामत के दामनगीर हूँगा।

बिधि—प्रयोग को जगह को अच्छी तरह से साफ कर, वहाँ आटे का चूल्हा/लोटा/दिहे/मिठाई/मिल/मिठाई/मिल का बीड़ा लेकर तथा शर्वत का कच्चा प्याला भरकर जिस रागी पर परियों का खलस हो, उस बीराह पर खड़ा करके, इन वस्तुओं का उतारा करके मन्त्र में १५ बार सादा दे, फिर सब वस्तुओं को कुएँ की में दे रख आये तो परियों का खलस दूर हो जाता है।

इस प्रयोग को करने के लिये आने-जाने समय बोलना नहीं चाहिए।

भूत वगैरह का गण्डा

मन्त्र—“ओम् नमो आदेश गुरु को लहमादी सों मुहम्मद पठाख चढ़या रवेत पोड़ा रवेत पलाख भूत बाँधि प्रेत बाँधि कारिषया मसाख बाँधि बाँसठ जोगिनी बाँधि अहमद स्थाना बाँधि, बाँधि, बाँधि रे बाँसी तुर्किया का पूत बाँधि बाँधि जोहू न बाँधे तो अपनी माता की सेवा पर पांव धरे, मेरी शक्ति गुरु की शक्ति फुरा मन्त्र ईश्वरवाचा।”

बिधि—पंच वैभ की (जब सवा रुपये की), मिठाई तथा दीपक को सामने रखकर लोबान की धुनी दे तथा रोगी की बोटी में लेकर एड़ी तक एक मतलब डोर को नापकर, उबल मन्त्र को पढ़ते हुए, उसमें २१ गोटें लगायें। फिर उस रोगी के गले में बाँध दें। इस गण्ड को धारण करने से भूत-प्रेतादि का दोष दूर हो जाता है।

मुहम्मदापीर का मंत्र

मन्त्र—“ओम् नमो हाकान्द जुगशान फाटन काया जिस कारख जुगशान में तोंको ध्याया, इंकारत जुगशान आया धारत आया, सिर के फूल बख्शत आया, और की बाँकी उठाबन्त आया, आर्का र्वाकी देठावंत आया, और का किबाद तोहता

आया, आधका किनाह मेरला आया, बाँधि बाँधि किमकी बाँधि, भूल की बाँधि प्रेत की बाँधि, देव-दानव की बाँधि, उड़ने गड़ने योगिनी की बाँधि, शर-धिरसागर की बाँधि, निरसठ कलुषा की बाँधि, बीसठ जोरिनी की बाँधि, बावन बीर की बाँधि, आकाश की परियों की बाँधि, दारिनी-शाकिनी की बाँधि, चूटक की बाँधि, बल की बाँधि, बिद्ध की बाँधि, द्वार की बाँधि, हाट की बाँधि, गर्जना की बाँधि, गिरार की बाँधि, किश की बाँधि, कराये की बाँधि, अयनी की बाँधि, पराई की बाँधि, लीली की बाँधि, पीली की बाँधि, म्याह की बाँधि, मफ़द की बाँधि, लाली की बाँधि, बाँधि र रे गढ़ गजनी के मुहम्मदपार चले तरे संग मत्तर सी बीर, जा धिमरि जाय ती सी गवा हलाल जाय, उल्टी मार, पझाड़ मार, प्राद मार, कजा चड़ाय, सुड़िया हलाय, शीश खिलाय, शब्द साँचा पिढ़ काँचा फुरा मंत्र ईश्वरवाचा ।”

बिधि—किमी ग्रहण की रात में इस मन्त्र को १००८ की संख्या में जपे तथा मांस-मदिरा का भोग लगायें तो मुहम्मदवापीर आकर उपस्थित होता है और प्रार्थना करने पर भूत-प्रेत, शक्तिनी-शाकिनी आदि को भगा देता है।

आफ़त दूर करने (दिव्यन्धन) का मन्त्र

मन्त्र—“याहि सार सार त्रिष देव परी जबर कुकार एक लाई दूसरी निर्द पमार निर्द बगिर्द मलायक असवार दायें दस्त रखे जिमाईल, बाँये दस्त रख मीकाईल, पीठ रख इनाफील, पेट रखे इजाईल, दस्त चपटभन दस्त रास्त हुमैन पेशवा मुहम्मद निर्द बगिर्द अली ला इलाह कौट इलिललाह की लाई हजरत अली की बाँकी बैठी मुहम्मद रखािललाह की दुहाई ।”

बिधि—इस मन्त्र को ७ बार पढ़ कर चारों ओर हाथ फिराकर घुटकी बजाने से दिशा-बन्धन होता है अर्थात् सब ओर की आफ़त दूर होती है। इस मन्त्र को पढ़कर अपने चारों ओर लकीर खींचकर उसके घेरे में बैठने अथवा सोने से देह-रक्षा होती है। मसान आदि का प्रकीर्ण होने पर इस मन्त्र का उच्चारण करने से संकट दूर हो जाता है।

६ मोहन एवं वशीकरण प्रयोग

मोहन तथा वशीकरण

मोहन, आकर्षण तथा वशीकरण—इन सभी का उद्देश्य किसी अन्य व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित कर, उसके द्वारा इच्छित अभिलाषा की पूर्ण करना है।

आकर्षण तथा वशीकरण के प्रयोग प्रायः सभी धर्म-मतवादी में पाये जाते हैं। हिन्दू धर्मियों के अतिरिक्त मुस्लिम धर्मिक भी इन प्रयोगों को असल में लाते हैं।

प्रचलित प्रकरण में मोहन तथा वशीकरण सम्बन्धी कश्चित् विधि-पट प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है। इनमें से कुछ विषय मुस्लिम मत के हैं और कुछ ऐसे हैं, जिनका प्रयोग हिन्दू तथा मुसलमान दोनों मतों के सन्तानों द्वारा सामान्य रूप से किया जाता है।

मोहन तथा वशीकरण सम्बन्धी प्रयोगों का दुरुपयोग न किया जाय, इस सम्बन्ध में सदैव सतर्क रहने की आवश्यकता है। मात्र वासना-पुन क उद्देश्य ने इन साधनों का प्रयोग हुआ नही करना चाहिये, अथवा पवित्र नाम जपानेवाक भा मिद हो सकता है। पवित्रता रितियों, वनारो-कन्याओं तथा सन्तानों के अथवा धुंधों पर इनका वासनाजन्य दूर्भावना-पूर्ण प्रयोग स्वयं के लिये अहितकर सिद्ध होगा।

प्रत्येक प्रयोग के साथ वेसा निर्देश दिया गया है, उसी के अनुसार साधन करने में सफलता-प्राप्ति सम्भव होती है।

रुबी-वशीकरण काक यन्त्र-नन्त्र

बिधि—चीट की पृष्ठनी अथवा दूसरी नागीख को एक चौक की एक छोर पर रख कर दे ओर उसे सामान्य बाला-पानी देते रहें। फिर जब पानिबार आये, तब उस दिन किसी एकान्त तथा शांत कमरे में बैठकर निम्नलिखित प्रयोग करें—

संक्षेपम नीली मट्टी में एक तथा दीपक बनाकर उसमें तिल का

सेल भरकर रखें। फिर एक सफ़ेद क़ाग़ज़ के ऊपर क़ाली रंग़ाही में नीचे प्रदर्शित यन्त्र लिखें -

६	२२	१६	२६
क़ाला क़लना	ओ न लावे	सुसी को दीजा	लाव फ़रसानी
२०	१५	१०	३१
ये हाल काय	क़लना वीर	क़ाली रात	फ़िर हलिक
१४	१७	६	११
ल मूअलोग	वेठी को	सेज पर	क़ाला ओयूं
सारी रात	उठा लाव	पा घरे	क़ाला ओयूं
२३	१२	१३	१५
तो सही कहि	अग़री रात	अस वद अने	सेनी को
ओसी के	अग़री रात	अग़री रात	अग़री रात

६५

१	१२	१९	१५
क़ाला	जु-द	क़ाला	क़ाला
१०	१५	१०	१५
क़ाला	क़ाला	क़ाला	क़ाला
१३	१५	१५	१५
क़ाला	क़ाला	क़ाला	क़ाला
१३	१५	१५	१५
क़ाला	क़ाला	क़ाला	क़ाला

६५

यन्त्र लिखकर क़ाग़ज़ को लपेटकर बत्ती ज़सा बना लें। फिर क़ाग़ज़ की उस बत्ती के चारों ओर सफ़ेद रई में लपेटकर, उस बत्ती की धीमि बंद दें। इस प्रकार लिपटी हुई रई में जो बत्ती तैयार हो, उस पूर्वोक्त सेल में धरे हुये दीपक में टाल दें। फिर क़ोए की पित्रह के ठीक दीर्घा-दीर्घा

लाकर, उक्त दीपक की पित्रह के ऊपर रखकर जला दें। फिर स्वयं पित्रह के सामने बैठकर निम्नलिखित मन्त्र की उक्त स्वर में ४१ बार पढ़ें

मन्त्र—'क़ाला क़लना आधी रात।

क़ाला मेरू आधी रात ॥

अब वह आगे आधी रात।

तब मुक़ लामे सारी रात ॥

तब मुक़ लामे सारी रात।

वही को उठा लाव ॥

भोरी का जमा लाव ॥

सड़ी का दौड़ा नाव ॥

हाल लाव फ़िलहाल लाव ॥

ओ न लावे तो सर्गी बहिज ॥

मर्जा के सिर पर पग घरे ॥'

अब मन्त्र अप की संख्या ४१ पुरी हो जाय, तब दीपक की चाली की बोहा-बोहा बढ़ाकर साठ तेल का सफ़ाया कर दें तथा दीपक की पित्रह के ऊपर से छटाकर सावधानी पूर्वक अलग रख दें।

दूसरे दिन प्रातःकाल जंगल में जाकर उस दीपक की पृथ्वी के भीतर कहीं ग़ाढ़ दें तथा दूसरे दिन तथा दीपक बनाकर पूर्वोक्त सभी क्रियाओं की दुहरावें। इस प्रकार २१ दिन तक सर्वा क्रियाओं की दुहरावें रहें तथा दीपक की प्रतिदिन जंगल में दवा आकर करें।

दशकीम दिन का प्रयोग पुरा हो जाने पर एक अन्य यन्त्र क़ाग़ज़ पर लिखें तथा यन्त्र की पित्रह में बन्द क़ोए के दीये पात्र में बांध दें तथा रात की १२ बजे बाद, उक्त क़ोए की उसी स्थान पर जे जाकर छोड़ दें, जहाँ से कि उसे पकड़ा था। क़ोए को छोड़ने के बाद मुह की पीछे घुमाये बिना अर्थात् रास्ते में कहीं भी मुड़कर पीछ की ओर न देखते हुए, सीधे अपने घर चले आये तथा बिरतार पर पहुँचकर सो जायें।

उक्त प्रयोग की समाप्ति के एक सप्ताह के भीतर ही अभिलषित स्त्री कंसो भी पयार-दिल क्यों न हो, आकर्षित होकर स्वयं ही साधक के पास चली आती है।

टिप्पणी—पूर्वोक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुक' शब्द आया है, वही साधक स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए, तथा यन्त्र में भी 'अमुक' शब्द के स्थान पर साधक-स्त्री के नाम की लिखना चाहिए।

वशीकरण यन्त्र (१)

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही में लिखकर उसका फनीता बनायें। फिर उसे लोथान की धुप देकर, एक कोरे दीपक में रोगन चमेली (चमेली का तेल) भरकर, उसमें फनीता को डालकर जलायें। यन्त्र में जिस जगह 'मायका' और उसकी माँ का नाम लिखा है, वही साध्य-स्त्री तथा उसकी माना के नामों को लिखना चाहिए।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है —

७८६

३५२९	३५२८	३५२५
३५२६	मायका और उसकी माँ का नाम	३५२०
३५२६	३५२४	३५२७

६६

८८५

३५२१	३५१८	३५१७
३५१५	मायका और उसकी माँ का नाम	३५२०
३५१९	३५१५	३५१८

६७

उक्त प्रयोग लगानार ११ दिन तक नित्य करते रहने से मनोमि-
लाना पूर्ण होती है।

वशीकरण यन्त्र (२)

नीचे प्रकट पर प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही में लिखकर, फनीता बनायें। फिर एक कोरे धातु के रोपण कुरंज भरकर उसमें फनीता डालें। जिस व्यक्ति को वश में करना

७८६

११	८	१	१०
२	१३	१२	७
१६	३	६	८
५	१०	१५	४०

६८

८८५

११	८	१	१०
२	१३	१२	७
१९	३	६	९
५	१०	१५	१०

६९

हो, दीपक का मुंह उसके घर की ओर रखना चाहिए। ११ दिनों तक नियमित प्रयोग करने से मनोकामना पूर्ण होती है तथा अश्विनि-व्यति (स्त्री या पुरुष) साधक के पास स्वयं चला आता है।

प्रोमिका-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सफेद कागज पर काली स्याही से लिख कर फलीला बना लें तथा उसे कोरे साँकेरे में कुटूँख का रोमन भरकर, पुरे हो कर विधि से जलाकर प्रयोग करें। ११ दिन तक नियमित प्रयोग करते रहने से मनोकामना पूर्ण होती है।

५८२७२	५८२७२	५८२४०
५८२७४	५८२४२	५८२७६
५८२४८	५८२७८	५८२७४

७०

७८२७२	७८२७२	७८२७०
७८२७४	७८२७४	७८२७६
७८२७८	७८२७८	७८२७४

७१

पति-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को प्रातःकाल सफेद कागज पर काली स्याही से बना धोत्राख पर केसर से लिखकर, धूप या सोमन की धूनी दें। फिर यन्त्र की पृथ्वी में गाढ़ दे लें जब तक यन्त्र जमीन में गड़ा रहेगा, तब ही पति अपनी पत्नी के बशीभूत बना रहेगा।

यह प्रयोग पालिया (रखवा) की अग्नि पति को बशीभूत रखने के लिए करना चाहिए।

८	३	४	असुर प्रमां	६	७	२
९	४	५	वन फला	७	८	३
१०	५	६	असुर	८	९	४
११	६	७	फलावन कलां	९	१०	५

७२

८	३	४	असुर प्रमां	६	७	२
९	४	५	वन फला	७	८	३
१०	५	६	असुर	८	९	४
११	६	७	फलावन कलां	९	१०	५

७३

७ विविध कार्य-साधन प्रयोग

दुश्मन को जूती मारने का तन्त्र

किता निरुद्ध महीने के बाखिरी मंगलवार को, फोलाद की घुसी से, कच्ची ईंट के ऊपर एक ओर नीचे प्रदर्शित मन्द को लिखें तथा उसी ईंट के दूसरी ओर सिर्फ दुबमन का नाम लिखें ।

दन्त का स्वरूप इस प्रकार है—

अ	ह	व	ल	म	म	म	द
ह	च	ख	फ	य	ज	य	ह
ह	ह	ह	म	अ	ल	त	ल
ह	ह	ह	व	द	अ	म	अ
ल	ल	दा	म	अ	र	व	अ
ह	व	म	अ	क	न	म	न
न	ह	व	अ	न	ह	व	अ
ल	ह	न	अ	न	ह	व	अ

25

उक्त यन्त्र को लिखने के बाद एक बार 'विभिन्नानाह' पढ़कर ४९ बार 'दक्षद' पढ़े, फिर १००० बार निम्नलिखित मंत्र को पढ़े—

मन्त्र—या कह हारा या इतराहला या दाराहला या अम बाकिलो फलाने के सारे जिन्म औगुंइ को मेरी जूती की चोट से धाएल करा बदकक या कह हारो ।”

د	س	ر	ا	ج	ب	ل	ح	۱
ح	د	ع	ت	ل	۲	۲	ج	ح
ل	ا	ا	ت	ل	۱	۱	ح	ت
ا	ر	۲	۲	ر	۱	۱	ح	ح
ے	س	د	و	س	ک	۱	و	ح
ل	ا	۱	۲	ح	ن	۱	ن	ک
ا	ا	۱	۲	ب	ت	و	ح	ل
ے	ب	ا	ا	د	ع	ت	و	ت

64

मन्द के अप के अन्द में पुनः ४१ बार 'दुःख' को पढ़ना चाहिए ।

सक विधि से इस दिनों तक निरख १००० की संख्या में मन्त्र का ध्यान करो, परन्तु हर १०० बार मन्त्र को पढ़ने के बाद श्रुत का नाम लिखने पर एक कागज पर ५ बार जुती बरबस मारनी चाहिए। मन्त्र ध्यान करते समय यन्त्र लिखित ईंट की छपने सामने रखना चाहिये तथा तैल का धारण भी जलाये रखना चाहिए।

काठिनी अर्थात् हमने दिन जब मन्त्र का अप पुरा हो जाय, तब बाधो रात के समय यज्ञ-निमित्त ईंट के सामने बमसीपी की का धिराग बनाकर उस पर फूल, हल तथा मिठाई चढावें, फिर मन्त्र का अप शुरू कर लया हर बार १०० मन्त्र जपने के बाद ईंट के जिल्ह ओर शत्रु का नाम शिखा हो, उस पर कीर्तना-त्रुतिपाँ गारते जावें ।

इस प्रयोग से जल के ऊपर बुलें पड़ते हैं तथा उसे कस्ट प्राण
बोला है।

जिह्वा-स्तरभजन मन्त्र

मन्त्र—“अलफ अलफ अलफ दुश्मन के मुँह में कुलक में हाथ कुंजी रूपा तेरे कर दुरमन जेर कर ।”

ब्रह्म शनिवार के दिन में आरम्भ करके ७ दिन तक एक घी का दीपक जलाकर एक कागज के टुकड़े पर इस मन्त्र को लिखें, फिर उस पर फूल माला, फल तथा यनामा चढ़ाये, तदुपरान्त उस कागज के पक्षों में धरती देकर, प्रत्येक टुकड़े को मन्त्र में अभिमन्त्रित करके अभिषेक में डालते जायेगा ता मन्त्र सिद्ध हो जाता है ।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर हाकिम के सामने १०८ बार मन्त्र पढ़कर बाल कर तथा दुश्मन की ओर फेंक मार तो दुश्मन का बोलन निकल सके, किसी अर्बो पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर फेंक मार और उसे लोबान की धरती देकर हाकिम के हाथ में दे दो तो मनोरथ पूरा हो ।

शत्रुनाशक प्रयोग

नीचे प्रदर्शित मन्त्र को सकेत कागज पर काली स्याही में लिखकर फलीला बनायें । फिर एक कोर शकोर में रोगान तल्लू (सरसों का तेल दहीरु) भरकर, उसमें फलीले को डालकर जलायें । दीपक का मुँह शत्रु के घर की ओर रहना चाहिए ।

१६५६१८	१६५६२१	१६५६२५	१६५६१९
१६५६२५	१६५६२२	१६५६१७	१६५६२२
१६५६१३	१६५६२७	१६५६१९	१६५६१६
१६५६४०	१६५६१५	१६५६१५	१६५६२६

उक्त प्रयोग को २१ दिनों तक लगातार करते रहने से शत्रु का नाश हो जाता है ।

७६

१५०५१८	१५०५११	१५०५१०	१५०५११
१५०५१५	१५०५१२	१५०५१८	१५०५१२
१५०५१२	१५०५१८	१५०५१९	१५०५१५
१५०५१०	१५०५१०	१५०५१९	१५०५१५

७७

कैदी को छुड़ाने का प्रयोग

यदि कोई यादगरी कैद (जेलखाने आदि) में पड़ा हो तो उसे छुड़ाने के लिए निम्नलिखित प्रयोग करना चाहिए—

७८६

या हाकिम	३३२	३३८	२२१०
या हाकिम	३३२	३३४	२३६
६६	३३७	३३०	३३५
कैदी का नाम या हाकिम या हाकिम का नाम			

७८

रविवार के दिन एक जंगली काला कबूतर एकड़ साये, फिर प्र
मोक्ष यन्त्र को केसर द्वारा भोजयत्र पर लिखकर, धूप-दीप देने के बाद
उस कबूतर के गले में बांध दें तथा उड़ा दें।

यन्त्र में जिस जगह कैदी का नाम तथा उसके पिता का नाम लिखा
है, वही कैदी तथा उसके पिता नाम लिखना चाहिए।

८८५

يا حافظ	३३२	३३८	४२१०
يا حافظ	३३२	३३९	४३४
११	३३८	३३०	३३६
فِيهِ نَفْسٌ مُّؤْمِنَةٌ تَبِيحُهَا وَدَلِيلُهَا	يا حافظ	يا حافظ	يا حافظ

८६

चोरी का पता लगाने का प्रयोग

यन्त्र - "उद्दुहजलजलास एकरु बोटी धर पकार मेज कुरा
हयाव सुरा या कहुदारी या कहुदारी।"

प्रयोग विधि—किसी नदी अथवा कुएँ के किनारे बैठकर इस यन्त्र
को १२१ बार पढ़कर वहीं हो जाय। एक सप्ताह तक निरन्तर इसी नियम

का पालन करे तो इसी अवधि में किसी दिन स्वप्न के माध्यम से चोरी
का सारा भेद भासूम हो जाएगा। जो व्यक्ति कुरा ले गया होगा, उसका
नाम वही पर चोरी का पता रक्खा होगा, उसका—सब बातों का हाल
भासूम हो जाएगा।

चिजारी का यन्त्र

नौबे प्रदोषत यन्त्र को सकेर कागज पर काली स्याही से लिखें या
भोजयत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिखें और जिस आदमी को चिजारी
पुकार आया हो उसकी दहिर् भुजा में बांध दें तो चिजारी उबर आना बन्द
हो जाता है।

८८

८१	८१	८१
८१	८१	८१
८१	८१	८१

८०

८१	८१	८१
८१	८१	८१
८१	८१	८१

८१

८ वशीकरण सम्बन्धी विशिष्ट प्रयोग

वशीकरण सम्बन्धी कुछ प्रयोगों का उल्लेख पिछले प्रकरण में किया जा चुका है। इस प्रकरण में अमलियात-ए-मुहब्बत के अनेक प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है, जिन्हें पहले हुए कसिमी की भूहरबानी द्वारा बड़ा कठिनाई से प्राप्त किया जा सका है।

वशीकरण सम्बन्धी ये प्रयोग यन्त्र-साधन की श्रेणी में आते हैं। इनमें से किसी भी प्रयोग को करने से पूर्व निम्नलिखित हिदायतों पर अमल करना आवश्यक है।

भविष्य भालूम करने का तरीका

अमलियात-ए-मुहब्बत (वशीकरण सम्बन्धी प्रयोग) के लिए सर्व-प्रथम ताला (भाय या भाविया) भालूम करना आवश्यक है। इसकी विधि निम्नानुसार है—

जिस किसी का भविष्य भालूम करना हो, उसके नाम के अक्षर तथा उसकी मा के नाम के अक्षर निकाल कर जमा करें (जोड़ लें)। फिर उसमें १२ से सरह (भागा दें)। यदि १ बचे तो 'दसल', २ बचे तो 'अबर', तीन बचे तो 'जोआ', चार बचे तो 'सरतान', पांच बचे तो 'अबर', छह बचे तो 'सनवाला', सात बचे तो 'मेजान', आठ बचे तो 'अकरब', नौ बचे तो 'कोस' दस बचे तो 'जरी', ग्यारह बचे तो 'दली' और ० (शून्य) बचे तो 'हवत' है—यह समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए—तालिब बेगी का नाम 'मोहम्मद दीन रहमत' है। इसके अक्षर (सात से छियालीस) अक्षर होते हैं। इनमें अब १२ का भाग दिया गया तो शेष २ बचे। इसका ताला (भाविया) शुब (राशि) 'अबर' है। इसी तरह मल्लू (श्रेयिका) के नाम के अक्षर लिखल कर उसका शुब (राशि) भालूम कर लें। यदि आशिक की राशि 'आसरी' और भाग्य की राशि 'आबी' है तो 'आतिब' अर्थात् अतिन और 'आब' अर्थात् 'पुष्पी'—ये दोनों एक दूसरे के युक्तालिक (विरोधी) होंगे, ऐसी स्थिति में वो तालीब (यन्त्र) लिखने चाहिए एक 'आसरी' और दूसरा 'आबी'। अगर ताला भागिक 'बादी' है और ताला भाग्य 'आसरी' है तो इसमें

गवाकल (अनुकूलता) होने के कारण एक तालीब ही काफी रहेगा। देना विज्ञात हो, उसके मुआफिक (अनुसार) तालीब लिखना चाहिए। तालीब के लिए आसरी और आबी के लिए आबी।

तालीब की किरमें

तालीब चार किरम (प्रकार) के होते हैं—(१) आसरी, (२) बर्दा,

(३) आबी और (४) आकी।

तालीब 'आसरी' उसे कहते हैं जिसे बानान या कोरी अक्षरी या गान की सान पर या बीनी की नब्दी आदि पर लिखकर आग में दासा जाता है या हल्ले के नब्दीक (समीप) गारह दिया जाता है।

'बर्दा' तालीब उसे कहते हैं, जिसे लिखकर दरलन (हथ) अथवा किसी अन्य ऊँचे स्थान पर सटका दिया जाता है, ताकि वह हवा से क्षतता रहे।

'आबी' तालीब को लिखकर तालाब, नदी या कुएँ जलाशय आदि में दासा जाता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध पानी से है।

'आकी' तालीब वह है, जिसे लिखकर खोखट, चौराहे या कब्रिस्तान वगैरह में दफन किया जाता है।

अब तालीब की किरमें भालूम हो गई, लिहाजा इसके लिए एबार हकफ का इल्म जरूरी है।

जद दिल अठब (वर्णमाला) इल्म अकर (कामयाबी) से है। इसके मान कल्प है और हर कल्प के चार हकफ हैं और हर एक का सबा शयारः स नान्युक्त है। इन हकफों में जो हकफ जिस शकस के सरे असम पद, उसका और उसके नाम का तालुक्त जिस सिलारे में होगा, उसी के मुआफिक नब्दर (पानी) जमाने में बहुत जन्द अमर होना है।

किस सिलारे के आसरी बादी, आबी तथा आकी के हिसाब से किस हकफ के किन्तों अक्षर (संख्या) होते हैं, इसे आगे प्रदर्शित बिबल संख्या दर और ८३ में बताया गया है। नाम के हकफों को अक्षरी अक्षरों के आधार पर ही लेना चाहिए। अन्य किसी भाषा के आधार पर नहीं।

[illegible][illegible]

तालिब (श्रेमी) अब ताबीज लिखे तो जिस सितारे की सादह में लिखने का इस्तेफाक हो, उसके शुभाफिक नज्म (धूनी) बलायें । हर सितारे के नेजबरात (श्रुन्या) बसना-अलग होते हैं । यदि धूनी सितारे के शुभाफिक न हैगी तो फायदा भी नहीं होगा ।

किस सितारे के नजवर (धूनी) गया-गया है, इसे नीचे लिख अनुसार समझ लेना चाहिए—

(१) जौहाल अवत, लोवान, रास, करनकुल ।

(३) भस्मरा मुष्क, जौ दाना, कापूर, कपूर, सन्तल मुखं (लाल चन्दन), कबड कपूर (हल्दी या चोनी) ।

(३) मिर्चास - लोबान, अमर, राज...

(४) शब्द-धारवाणी, अवद, मुक्क (कस्तूरी). आकारान (केदार) ।
(५) जोहरा-अवद, दन्व, मुक्क, संदल लफेद (सफेद बनवन),

काङ्क्षुः, क्षयपदं ।

(६) अतारद—संदल मुछं, करनफन, कापूर, नमकसंग, अबद ।
(७) कंगर—साहद, कापूर, अबद ।

(७) कर्मर-महद, काकूर, अनंद ।

सितारों के द्विज में

सिंह (शुभ) है तो कोई नष्ट (अशुभ) है। किसी की कुछ तासीर है, किसी की कुछ है। हर एक सितारा एक वक्त का हाकिम होता है। इसलिए आमतौर पर सितारे की सार्ईत (मुहलत) देखा मुकरर किया है यानी शुभ-अशुभ मुहलत देखकर ताज्ज (यन्त्र) लिखना चाहिए, ताकि मेहनत नर्बाद न हो। हर सितारे की साइत एक घण्टा होता है। इसलिए (ग्रहण) सुदृढ़ ७ नवें से मुकरर की गई है अर्थात् सितारा का मुहलत प्रातः सात बजे से आरम्भ होता है।

नीब सितारों की साझत (मुहूर्त) का नक्शा दिया आ रहा है, इसके आधर पर किस वक्त (समय) का हाकिम (अधिवर्ति) कीन सा सितारा है, यह माहस करन के बाद उसी के मुताबिक (अनुसार) नक्कर (जूनी) चलानी बाहिर् ।

خاسته اول	خاسته دوم	خاسته سوم	خاسته چهارم
شب روز خاسته اول	شب روز خاسته دوم	شب روز خاسته سوم	شب روز خاسته چهارم

६—अमल के दौरान अपने परिचायीयनों, विशेषकर वालदेन (याता-पिता) का प्रसन्न बन रहना आवश्यक है।

७—अमल के दौरान जो भी शुभ काम किये जा सकते हों, उन्हें अवश्य करने रहना चाहिये।

८—अमल के दौरान यदि कोई साइल (याचक) अपने दरवाजे पर आकर मन्त्राल (याचन) करे तो उसे महत्त्व (निराशा) नहीं देखना चाहिए। तब कुछ-न-कुछ देना आवश्यक है।

यदि उक्त नियमों का पालन नहीं किया गया तो अमल जो अवधि में किया गया परिश्रम व्यर्थ हो जाता है तथा मनो-अन्तर्भाव को पूर्ण नहीं हो पाती। परन्तु यदि उक्त दिशयनों का पूरा-पूरा पालन किया जाय तो इजा अन्तर्भाव माना मतमद में काययाची जरूर हासिल होती है।

कर्म-कर्म भी ऐसा भी होता है कि किसी प्रयोग का माधन करने के बाद तब भी महत्त्व नहीं मिल पाती। ऐसी स्थिति में प्रयोगकर्ता को यह देखना चाहिए कि जिन नियमों का पालन करने की दिशायत दी गई है, उनमें कौन से त्रुटि रह गई। जब वह त्रुटि पकड़ में आ जाय, तब उसका निराकरण करने हुए दुबारा प्रयोग आरम्भ करना चाहिए ता उसमें सफलता मिलने की आशा रहेगी। यदि दूसरी बार भी असफलता हाथ लगे तो अपनी कमियाँ पर नजर दोड़ानो चाहिए। क्योंकि विना कोई कमी रहे अमलका फल मिलने का संभाव ही नहीं उठता। अतः उस कमी को जानकर और उस दूर करने हुये तीसरी बार प्रयोग आरम्भ करना चाहिए। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी त्रुटि के कारण एक बार असफलता मिलने पर प्रयोग बन्द नहीं कर देना चाहिये अपितु हिमाल एव अन्तः-विश्वास के साथ उग्र बार-बार इहराना चाहिए। पूरे अन्तः-विश्वास एवं श्रद्धा के साथ तथा नियमों का पालन करते हुये जो अमल किया जाता है, उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रहता। इसलिए कभी नाकाम नहो जाय। अगर महत्त्व में नाकामी हुई तो सम्भव है कि चाहे कि तुम्हारी ही कोई गलती है क्योंकि इन्सान में भूल अवश्य हो जाया करती है।

अमल करने से पहले आभिल की स्वसुसिधान

प्रयोग आरम्भ करने में पूर्व प्रयोगकर्ता को अपनी योग्यता पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। यदि अपने अन्दर कुछ कामयाबी दिखाई दे तो उन्हें दूर कर देना चाहिए। क्योंकि किसी काम को शुरू करने से पहले ही जो इन्सान अपनी क्षमियों और कमियों पर नजर टालता है और

उन्हें दूर कर देता है तो उसका दिल बेजोह हो जाता है और उस अपने महत्त्व (मन) में कामयाबी (सफलता) भी हासिल (प्राप्त) होता है। अतः आभिल के लिये यह आवश्यक है कि वह अमल शुरू करने से पहले उसी की पाबन्दी करे।

अभिलिपात (प्रयोगों) के मिलाने में उत्पादों ने अपने तत्त्वों के आधार पर कुछ नियम तथा सिद्धान्त निश्चित किये हैं। ताकि अमल करने वाले को फल मिले और शरीर में शक्ति उत्पन्न हो सके। अमल के फलकीन लोग आवश्यक नियमों का पालन तो करते नहीं हैं, अपनी सुविधानुसार जैसा चाहते हैं, वैसा करना आरम्भ कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाते और उनका संपूर्ण परिश्रम व्यर्थ चला जाता है। इस प्रकार अपनी ही गलती का वे क्षामियाजा उठाते हैं। यदि सही तरीके से उसी का पालन किया जाय तो उनकी महत्त्व यथावत नहीं होगी।

अतः अभिलिपात के मिलाने में आभिलीन ने जो शरायत और तरीके अपने अथक परिश्रम तथा अनुभवों के बाद निश्चित किये हैं, उन उसी पर पूरी तरह से अमन करना निश्चयन बकरी है। ऐसा न करने वालों को कभी कामयाबी नहीं मिल सकती।

आभिलीन के लिए शराइन

अभिलिपात के उक्तानों में लिखा है कि जो लोग अमल करना चाहते हों उनके लिये निम्नलिखित बातों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है।

१—आभिल इन्सान की शराइन का पाबन्द हो अर्थात् इन्सान महत्त्व के हर नियमों तथा उसी की मानने वाला हो। यही सूरत आभिल सुसलमान जैसी तथा नम्र और रोज का पाबन्द हो।

२—हराम चीजों को छोड़ न आने दे।

३—जानकारी (अभिचार) तथा बदकारी (दुर्कर्म) बर्गातः से अद्वारा करे अर्थात् दूर रहे।

४—हमाल तरीके से रोजी कमाने का आदी हो।

५—मूठ चीजन में बन्द परहेज करे।

६—महत्त्व के नियमों का पालन करे।

७—चुगली, बदचरानी, खराब हमालों और तमाम दुष्टों बातों से लीना करे।

८—अमल शुरू करने से पहले अभिल को चाहिए कि गुरुस करके पवित्र वस्त्रों को धारण करे और उन पर इज लगाये ।

९—अमल शुरू करने से पहले खुराददार धुनी, मस्सन—नोवान, अलद, अगारवत्ती या इसी किस्म की कोई और चीज जैसा कि पहले बताया जा चुका है, सुलगा कर जगह को पवित्र एवं सुगन्धित बनाये ।

१०—अथमर अयन्निदान (तार्त्रिक-प्रयोगों) में तब हैवानन (पूज में परहेज) की शर्त भी जरूरी होती है, अतः पंजे प्रयोगों में, जिनमें सूर्यस्त में वसंत आदेशक बताया गया हो, यह जरूरी है कि प्रयोगों की अवधि में गोअन, दूध, बी, अण्डा, मछली सहस्रान, प्याज और इसी किस्म की दमरी चीजें हरमिज-हरमिज इस्तेमाल न की जायें । अगर इनके खिलाफ चला जायगा तो भूद को मर्दोद खतरा हो सकता है ।

११—गरीब एवं मोहताजों के साथ नैक सलूक करे तथा खैराती-जका (दान-मुण्य) से हाथ न रोके ।

१२—छयाल रहे कि हर अमल बेरोज-माह की पहिली जुमेरात को जिसे नौबंदी जुमेरात कहते हैं, शुरू किया जाय ।

१३—अमल पहले (तार्त्रिक-साधन करने) के लिए सत्रसे बेहतर वक्त नमाज-ए-इया (रात की नमाज) के बाद माना गया है ।

शुभ साइत (सुहूत)

मुहतररी, जोहरा, अतारद और शरव की साइतें अमलियाते-मोहन्मत और ताबीजि-मोहन्मत के लिए बेहतरीन (शुभ) हैं । जुमा, जुमेरात, बुध और पीर के दिन बेहतर हैं । अरबी महीने की तारीखों में जो शुभ हों, उन्हें में अमल शुरू करना चाहिए और ताबीज (यन्त्र) लिखना चाहिए ।

जो तारीख अशुभ है उनका नक्शा भी चे दिया जा रहा है । इन तारीखों में कोई अमल नहीं करना चाहिए ।

शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
१०-१	१०-१	१०-१	१०-१
१०-२	१०-२	१०-२	१०-२
१०-३	१०-३	१०-३	१०-३
१०-४	१०-४	१०-४	१०-४
१०-५	१०-५	१०-५	१०-५
१०-६	१०-६	१०-६	१०-६

राशि	शुभ	अशुभ	राशि	शुभ	अशुभ
१२-१	२०-१०	३-१	११-१४	११-१४	११-१४
१२-२	२४-१३	४-२	११-१५	११-१५	११-१५
१२-३	२४-१३	४-२	११-१६	११-१६	११-१६
१२-४	२४-१३	४-२	११-१७	११-१७	११-१७
१२-५	२४-१३	४-२	११-१८	११-१८	११-१८
१२-६	२४-१३	४-२	११-१९	११-१९	११-१९

हरक महुजीव के हिसाब में अहद (मंथरा) निकाल कर जब ताया मान्य हो तो इलम-ए-कन को कलाओं के मुताबिक ताला आखी, आखी, खाकी और वादी के माह जलानो (मोभाव्यभालो महीना) दवायत करें । शुरू में माह-ए-जलाली पदरंम उल अहराम का महीना है । इलम-ए-मरह मुहंरंम को 'नरोज' भी कहते हैं और तमाम साल की कैफियत इसी से बनाते हैं । आसानी के लिये माह जलाली का दायरा (मंथरा) अना दिया जा रहा है ।

शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ
१०-१	१०-१	१०-१	१०-१
१०-२	१०-२	१०-२	१०-२
१०-३	१०-३	१०-३	१०-३
१०-४	१०-४	१०-४	१०-४
१०-५	१०-५	१०-५	१०-५
१०-६	१०-६	१०-६	१०-६

इस मुकदसर कायदे के मुताबिक हजक-मोहवीब के हिसाब से नाम मलसुब के बायदाद से बुर्ज (राशि) मासूम करे और सितारा देखें। फिर साइल बकत और साइल तारीख (मुहूर्त का समय और तारीख) को जिस अक्षर की मुनासियत समयों करे या तारीख-ए-मोहबल (बणीकरण पन्ना) लिखें और उसी के मुताबिक धनी जलायें। इना अल्लाह ऐसा करते में जलद असर होगा और महबूब बेकारार होगा।

राहे उस मासमा हुई केहर नाकेह बादी ओरे नर है	सालर उस मुहूर्त कायदे हजक मोहवीब मासूम करे नर है	मुहूर्त उस असराफ महूर जु १ रास मालद अरबी को नर है
असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है	असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है	हजक मोहवीब मासूम करे नर है
असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है	असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है	असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है
असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है	असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है	असराफ उस हजक मोहवीब मासूम करे नर है

६१

नकश-ए-मोहबल

नकश (१)

(बणीकरण पन्ना)

आगे दिया हुआ नकश (पन्ना संख्या ६२, ६३) बणीकरण के लिए बहुत प्रयोजनीय है। यदि मासूम नाराब हो गया हो या मोहबल न करता हो तो बस साइल साइल मजबूत चौदह ओ मजबूती इस नकश आबम को कागज के पुर्जे पर बाण्डरियाल (मावसानोपूर्वक) लिखें और तारीख में भरकर, जग लंबान को धनी देकर बॉणिक अपने बाजू पर दीखें तो मासूम बनीपूत होकर आकाफारी दन जायेगा।

नकश इस प्रकार है—

11	15	18	5
42	80	43	40
44	49	48	49

६३

12	14	17	4
66	44	68	66
46	70	62	60
68	47	47	67

६३

नकश (२)

आगे प्रदर्शित नकश (पन्ना संख्या ६४, ६५) को कागज पर लिखकर जग जवंत में छोड़ें। फिर वह जवंत मासूम को पिला दें तो वह मोहबल व बकार हो जायेगा।

६०० नक़्श लिखने लगे। दोआबा लिखे हुये नक़्शों को मेहं के आटे की मोलियों में भरें तथा उन मोलियों को दरिया में बाल दिया करें तो मायूक मोहब्बत में बेकार हो जाएगा।

ح	د	ب	پ
۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲

६६

ه	وا	دا	پ
۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲

६६

नक़्श (५)

अगर किसी को अपने सामने हाथिद करना हो तो हिरन की बाल पर मुक्को-आफ़रान (कस्तूरी और केसर में एक बाधरा लीचें और उस पर नीचे प्रदर्शित नक़्श (संख्या १००, १०१) बनाकर, उसके ऊपर एक छोटी सी सेब गाढ़ दें तथा 'या बुद्ध' या 'हुद्' को पढ़ें। इस प्रयोग से मलहूम (मायूक) बेकार हो, सामने आकर हाथिद हो जाता है।

۱	۲	۳	۴
۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲

१००

۱	۲	۳	۴
۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲

१०१

नक़्श (६)

अने प्रदर्शित दोनों नक़्शों (संख्या १०२, १०३ तथा १०४, १०५) को एक कागज पर लिखकर गोली बना लें फिर उसे कन्द सेकंद (सेकंद बनकर) की गोली में भर दें तथा यह गोली मतलूब की जिलायें तो उसे

۱	۲	۳	۴
۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲

१०२

۱	۲	۳	۴
۱	۲	۳	۴
۵	۶	۷	۸
۹	۱۰	۱۱	۱۲

१०३

١	٢٨	٣	٢٨	٤	٥
٦	٧	٨	٩	١٠	١١
١٢	١٣	١٤	١٥	١٦	١٧
١٨	١٩	٢٠	٢١	٢٢	٢٣
٢٤	٢٥	٢٦	٢٧	٢٨	٢٩
٣٠	٣١	٣٢	٣٣	٣٤	٣٥
٣٦	٣٧	٣٨	٣٩	٤٠	٤١
٤٢	٤٣	٤٤	٤٥	٤٦	٤٧
٤٨	٤٩	٥٠	٥١	٥٢	٥٣
٥٤	٥٥	٥٦	٥٧	٥٨	٥٩
٦٠	٦١	٦٢	٦٣	٦٤	٦٥
٦٦	٦٧	٦٨	٦٩	٧٠	٧١
٧٢	٧٣	٧٤	٧٥	٧٦	٧٧
٧٨	٧٩	٨٠	٨١	٨٢	٨٣
٨٤	٨٥	٨٦	٨٧	٨٨	٨٩
٩٠	٩١	٩٢	٩٣	٩٤	٩٥
٩٦	٩٧	٩٨	٩٩	١٠٠	

[illegible]

ऊपर प्रदर्शित विनिर्दिष्ट (यस संख्या १०८, १०९) को जुड़े की रात को मातलूब (भाषक) के पहिले हुए पुराने कपड़े पर लिखे फिर उसका फलीता बनाकर, कोरे बिस्तरा में रीठन गुणवृद्धात भरकर जमाते । बिस्तरा का खल खाना मातलूब (भाषक के घर) की तरफ रहना चाहिए । फलीता के रीठन होने ही मातलूब बेकरार हो जायगा ।

अनुसूची (2)

शाने प्रशस्तिर इत्यामल (चिन संख्या ११०, १११) को कान्हा पर लिखे और हलओ-सहद कान्हा पर मसकर, पाक रुई में बोटकर, सुगन्धधार लेन को चिराग में बासकर रोजन करें। चिराग का दण्ड शाना भगवान को लच्छा करें और खुद हाथिर रहें।

अगर दुबसातिर (लगातार) एक हफ्ते तक पावे-रोज (रात-दिन) फसलो रोशन (असता) रहे तो फसलून बेकसार होगा और हाजिर न्हेण ।

दूसरा तरकीब यह है कि भागा गो सफ़ा पर बिलकर, गहद मल कर, आग के नीचे दहन कर दें तथा आग एक क्षण तक दूर नज़र नमान (बसती) रहे गो मलसूत्र बेकार होता है।

۲۵۱۷	۱۸۵۰	۲۷۲۲	۶۷
میں	۱۸۰۸ء	عز و سعادت	ج
۱۸۱۸ء	۱۸۷۷ء	۱۸۷۷ء	۱۸۷۷ء
مسلک	حب غلام	بن	غلام
علی	حب	غلام	بن
غلام	بن	غلام	بن

सीसरी तरकीब यह है कि कोरी ठोकी पर इसे लिखकर आग के नीचे रखें तो भी मतलब बेकार होगा। इसे साइत अकवाब में जाला

[illegible]

سید	سید	سید
سید	سید	سید
سید	سید	سید
سید	سید	سید

288

समस्त	हो	समस्त	समस्त
समस्त	हो	समस्त	समस्त
समस्त	हो	समस्त	समस्त
समस्त	हो	समस्त	समस्त

224

नव्या (१३)

आगे प्रदर्शित दस्तावेज (रज्ज संख्या १२०, १२१) को माथूक के पहले हुए कपड़े पर लिखें और कोरे चिराग में तिलों का तेल डालकर, उसका फलीला बनाकर रीजान करें तो माथूक कदमों में आ हाँबिर होगा।

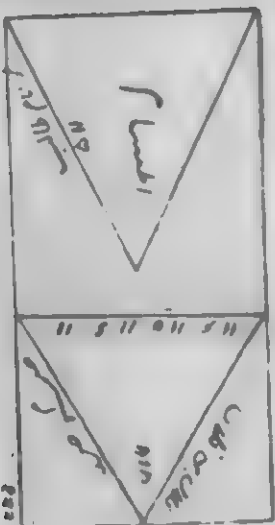
مظفر بن مظفر علی حب مظفر بن مظفر یا نبیست مظفر	دوره ۵۵	۱۱۱۷	۱۱۱۷	۱۱۱۷
abdul 33rd/1st/odisha	دوره ۵۷	۱۱۱۷	۱۱۱۷	۱۱۱۷

10	22	210	222
11	23	220	232
12	24	230	242
13	25	240	252
14	26	250	262
15	27	260	272
16	28	270	282
17	29	280	292
18	30	290	302
19	31	300	312
20	32	310	322
21	33	320	332
22	34	330	342
23	35	340	352
24	36	350	362
25	37	360	372
26	38	370	382
27	39	380	392
28	40	390	402
29	41	400	412
30	42	410	422
31	43	420	432
32	44	430	442
33	45	440	452
34	46	450	462
35	47	460	472
36	48	470	482
37	49	480	492
38	50	490	502
39	51	500	512
40	52	510	522
41	53	520	532
42	54	530	542
43	55	540	552
44	56	550	562
45	57	560	572
46	58	570	582
47	59	580	592
48	60	590	602
49	61	600	612
50	62	610	622
51	63	620	632
52	64	630	642
53	65	640	652
54	66	650	662
55	67	660	672
56	68	670	682
57	69	680	692
58	70	690	702
59	71	700	712
60	72	710	722
61	73	720	732
62	74	730	742
63	75	740	752
64	76	750	762
65	77	760	772
66	78	770	782
67	79	780	792
68	80	790	802
69	81	800	812
70	82	810	822
71	83	820	832
72	84	830	842
73	85	840	852
74	86	850	862
75	87	860	872
76	88	870	882
77	89	880	892
78	90	890	902
79	91	900	912
80	92	910	922
81	93	920	932
82	94	930	942
83	95	940	952
84	96	950	962
85	97	960	972
86	98	970	982
87	99	980	992
88	100	990	1002
89	101	1000	1012
90	102	1010	1022
91	103	1020	1032
92	104	1030	1042
93	105	1040	1052
94	106	1050	1062
95	107	1060	1072
96	108	1070	1082
97	109	1080	1092
98	110	1090	1102
99	111	1100	1112
100	112	1110	1122

200

नवव्या (१४)

नीचे प्रस्तुत तालिका (संख्या १२२, १२३) को ध्यान पर निम्नकर तलसे रोजन पुनःनदर धरे । किर कलकल पर की निम्नकर कमीठा धाराध नीर धिरान का कल धाला-ध-मलधूत की धरक रलधे । धाले धे धालिध का धाल धधरधान धिधधे ।



123

८८५

८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१

१३०

८८६

८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१

१३१

नवम (१६)

आगे प्रदर्शित नवम (संख्या १३२, १३३) को कागज पर लिखकर फर्मावा बनाये और विचार में रीक्षण करें। विचार का इस ज्ञाना मतलब को सरकर बना बाहिए। इसमें मतलब के कारण होकर मोहकत कहल करता है।

८८५

८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१

१३२

८८६

८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१
८८८१	८८८१	८८८१	८८८१

१३३

नवम (२०)

मतलब को मोहकत से बेकार करने लिए बर्क आकलाव में जाने की कोह (माहीज) नियार करें और उस पर आगे प्रदर्शित नवम (संख्या १३४, १३५) कुत्सा करें। फिर उस पर अपना नाम और बाहिए का

नाम लिखकर धारा में जलाये। फिर जब मलबूब हाजिर हो, तब भी बाजू में बांध लें तो वह हमेशा खिदमत की तैयार बना रहेगा।

१	२	३
१७१	१८	१०१०५५
१०१०५५	१०१०५५	१०१०५५
१०१०५५	१०१०५५	१०१०५५
१०१०५५	१०१०५५	१०१०५५

१३५

issuu.com/abdtah23/nam/naam

४	५	६
४७१	४८	४०१०६०६
४०१०६०६	४०१०६०६	४०१०६०६
४०१०६०६	४०१०६०६	४०१०६०६
४०१०६०६	४०१०६०६	४०१०६०६

१३५

नक़्श (२१)

बगर किसी को इशक में मुजिबत करना ही वो धोड़ का ऐसा नाम था, जिसमें ६ सूरतों में और उस पर मलबूब और उसकी माँ के नाम के साथ नीचे प्रदर्शित नक़्श (संख्या १३६, १३७) लिखें और लिखने के बाद उस नाम को आग में इस तरह गाढ़ दें कि वह हमेशा गर्म बना रहे। इससे भूकंप सहन होगा।

११८८	११८८	११८८	११८८
११८८	११८८	११८८	११८८
११८८	११८८	११८८	११८८
११८८	११८८	११८८	११८८
११८८	११८८	११८८	११८८

१३६

२३८८	२३८८	२३८८	२३८८
२३८८	२३८८	२३८८	२३८८
२३८८	२३८८	२३८८	२३८८
२३८८	२३८८	२३८८	२३८८
२३८८	२३८८	२३८८	२३८८

१३७

नक़्श (२२)

मलबूब की मोहब्बत बढ़ाने के लिए जोहरा व सुलतरी की तबलीख में नीचे की पढ़ी बनवाकर उस पर आगे प्रदर्शित नक़्श (संख्या १३८, १३९) छुड़वाये।

۲۴۹۸	۲۴۹۱	۲۴۹۴	یا شاں
۲۴۹۲	۲۴۹۵	۲۴۹۷	یا شاں
۲۴۹۶	۲۴۹۹	۲۴۹۲	یا شاں
علیّا	علیّا	علیّا	یا شاں

۲۴۹۸ ۲۴۹۱ ۲۴۹۴ ۲۴۹۲ ۲۴۹۵ ۲۴۹۷ ۲۴۹۹ ۲۴۹۲ ۲۴۹۵ ۲۴۹۷ ۲۴۹۹ ۲۴۹۲

۲६६८	२६६९	२६६६	दा
२६६३	२६६४	२६६६	दा
२६६७	२६६८	२६६३	दा
दा	दा	दा	दा

२६६८ २६६९ २६६६ २६६३ २६६४ २६६६ २६६७ २६६८ २६६३ २६६४ २६६६ २६६७

अपने और अपनी भी, महारवा और उसकी भी—इन नामों के बदल भी निकालें और आपस करोमा के बदल से बिलानकर तकसीर करें और सहर मोहार को नकले भरवा के चारों ओर लिखें और योगन शतुर-ब-महर

म फलीता बनाकर जलायें। मतलब हाजिर होगा। जो नकल तबे की ५५ पर खुदवाया गया हो, उसे लावीज की तरह दाहिने बाजू पर बाधना चाहिए।

नकश (२३)

आगे प्रदर्शित लावीज-मुबारक (बिन्न सख्या १४०, १४१) को, आगे प्रदर्शित लावीज-मुबारक (बिन्न सख्या १४०, १४१) को, बल के लिए मतलब (मायक) का तसबुन (ध्यान) करके लिखें और अनार के दरज के साथ बोध दें। इस समय में इमा बलसाह मोहब्बत पदा होनी। इसको सिरहाने रखना भी मुकौद है।

यहाँ पर जोरों की तरह इस नकल के उर्दू तथा हिन्दी—दोनों के पत्र दिए जा रहे हैं। इनमें किसी को भी समय में लाया जा सकता है।

۱۰	۱۱	۱۲	۱۳	۱۴	۱۵	۱۶	۱۷	۱۸	۱۹	۲۰	۲۱	۲۲	۲۳	۲۴	۲۵	۲۶	۲۷	۲۸	۲۹	۳۰	۳۱	۳۲	۳۳	۳۴	۳۵	۳۶	۳۷	۳۸	۳۹	۴۰	۴۱	۴۲	۴۳	۴۴	۴۵	۴۶	۴۷	۴۸	۴۹	۵۰	۵۱	۵۲	۵۳	۵۴	۵۵	۵۶	۵۷	۵۸	۵۹	۶۰	۶۱	۶۲	۶۳	۶۴	۶۵	۶۶	۶۷	۶۸	۶۹	۷۰	۷۱	۷۲	۷۳	۷۴	۷۵	۷۶	۷۷	۷۸	۷۹	۸۰	۸۱	۸۲	۸۳	۸۴	۸۵	۸۶	۸۷	۸۸	۸۹	۹۰	۹۱	۹۲	۹۳	۹۴	۹۵	۹۶	۹۷	۹۸	۹۹	۱۰۰
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

(नकश २३ का उर्दू स्वरूप)

मलिक	लम	उस्सम	कालि	अहद	अल्लाह	हो	आल
कालम	पुलर	लम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	आल
मलिक	कालि	लम	उस्सम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो
कालम	पुलर	लम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	आल
मलिक	कालि	लम	उस्सम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो
कालम	पुलर	लम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	आल
मलिक	कालि	लम	उस्सम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो
कालम	पुलर	लम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	आल
मलिक	कालि	लम	उस्सम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो
कालम	पुलर	लम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	आल
मलिक	कालि	लम	उस्सम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो
कालम	पुलर	लम	अल्लाह	अहद	अल्लाह	हो	आल

(नकश २३ हिन्दी स्वरूप)

नकश (२४)

अगर औरत और खानिद के दरम्यान नाबान्की (मनमुदाब) रहनी हो तो नीचे प्रदर्शित नकश (संख्या १४२, १४३) ताबीज लिखकर दोनों की बिलाने से दोनों में मोहब्बत पैदा हो जाती है।

८८५

५१५७८	५१५८९	५१५९०
५१५९१	५१५९२	५१५९३
५१५९४	५१५९५	५१५९६

८८२

६१६५३	६१६५४	६१६५५
६१६५६	६१६५७	६१६५८
६१६५९	६१६६०	६१६६१

८८३

नकश (२५)

नीचे प्रदर्शित नकश (संख्या १४४, १४५) को बुध के दिन सूरज निकलने वक्त लिखकर आग में फेंक दें तो मनमूस ताबी होगा और आशिक के पीछे जाया और तालिय को कहीं खरत न होगी। इस नकश की असनाद बहुत सी खयाल में साबित है।

६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५

उक्त नकश को लिखकर आग में फेंक दें तो मनमूस ताबी होगा और आशिक के पीछे जाया और तालिय को कहीं खरत न होगी। इस नकश की असनाद बहुत सी खयाल में साबित है।

२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५
३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५

उक्त नकश को लिखकर आग में फेंक दें तो मनमूस ताबी होगा और आशिक के पीछे जाया और तालिय को कहीं खरत न होगी। इस नकश की असनाद बहुत सी खयाल में साबित है।

नमः (२६)

नीचे प्रदर्शित नकशा (संख्या १५६, १५७) को मतलब के कवरों पर लिखें और उसकी बर्ती बनकर चिराग में रख कर जला दें। चिराग का मुह मतलब के घर की तरफ रखना चाहिए। इसा सत्साह मतलब के घर की तरफ आगिक की मुराद पूरी करेंगा।

issuu.com/abduh3

[illegible]

نصف ابن خلدون على حجب عهد ابن خلدون
٩٨٤

200 463868 308 482444

[illegible]

नक्षत्रा (२७)

यह नकल (संख्या १४८, १४९) हथ के लिए निम्नोक्त मुखबार है ।
 मुखार की वृत्त में बकरी के झाने पर चारों के नाम लिखे और तबबर या
 चूड़ के लिये उपन कर और आग में जलाये । ईशा बदमाह तबासार्द मोट-
 नवल मतसुल के दिख में जगो गो और यह देकरार होना ।

नमः (२८)

अगर अच्छात हो और किसी को अपनी मोहब्बत करानी मंजूर हो तो एक टुकड़ा मतलब के लिबास (कपड़े) का सेकर हफ्ते के दिन बाहर मसाला अच्छा टुकड़े पर जागे प्रदर्शित मक्का (संख्या १५०, १५१) को लिबे बारी बली बनाकर सैस के पी में तार करें, फिर फसीले को जला दें तो मतलब को मोहब्बत होती है ।

[illegible]

अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ए	ऐ	ओ	क
ख	ग	घ	ङ	च
छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त
थ	द	ध	न	प
फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	ष
स	ह	ळ	स्	क्ष
फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	ष
स	ह	ळ	स्	क्ष

अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर	अक्षर
अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ए	ऐ	ओ	क
ख	ग	घ	ङ	च
छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त
थ	द	ध	न	प
फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	ष
स	ह	ळ	स्	क्ष
फ	ब	भ	म	य
र	ल	व	श	ष
स	ह	ळ	स्	क्ष

नकशा (२८)

नीचे प्रदर्शित नकशा (चित्र संख्या १५०) कलम अतीफ, जो तल्लाम नकशा में दर्शाया है, वह कई मुरादी को पूरा करता है। मोहब्बत के लिए

الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا

१५०

एक तील रोख लिखे तथा हर रोज मनसूब को पिलाये तो मोहब्बत होगी और मुराद हासिल होगी। महबूब दीवाना होकर सामने हाजिर होगा। इस अजीब बल का प्रयोग है।

नकशा (३०)

नीचे प्रदर्शित नकशा (चित्र संख्या १५३) भी ऊपर कहे गए नकशा मोहब्बत के लिए मरकूबा (उपयुक्त) तरीक़ों ही इस्तेमाल कर सकते हैं।

संख्या	संख्या	संख्या	संख्या
१०	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५
१५	१५	१५	१५

१५३

नकशा (३१)

नीचे प्रदर्शित अल्लामत (चित्र संख्या १५४) को मनसूब के पुराने कपड़े पर इसी तरह लिखे और नये चिराग में तिल का तेल डालकर, फलित बनाकर जलाय। मनसूब जल्द हाजिर होगा।

الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا
الله	لا	الله	لا

१५४

उपको अजोभी-अकारबमव खिलाफ हो, सब नीचे प्रदर्शित नमूना में संख्या ५५०) को काम में लाये। ईशा अन्तर्गत कामवादी होना। इसका लक्ष्य है कि खिलाफ-प्रचार काम के लिए इस नमूना में दर्शाए गए हस्ताक्षर काम न ले, क्योंकि ऐसा मूलतः खुद को शरीर खतरे का प्रयोग है।

٧	٢	١٠
١٠	١٠	١٠
١٠	١٠	١٠

036

इसका तबीका यह है कि चांद रात (अमावसा) के गोज या इसमें एक गोज पहने नभय मजबूत राता तेरह अदद के छाने आकरान और रायल के कलम में दणोटा करके रख लें और मिस रोड चांद दिखाने, पोरन खाती भी जो पहने न तैयार किए रख है, नभय के मुताबिक पुर कर लें (भर लें) । इन खाकों को भरते में इनती जल्दी करे कि चांद गलब (धुप) न हो जाय । अगर इसकाम चांद गलब हो गया और वर सांके जो पहले तो तैयार करके रख लिए हैं, भरे न जा सके तो फिर अगल रात चांद के रोश हो दुबारा यह अमल करना होगा । ही, अगर मान या नो तयब चांद के गलब होवे (छिन्ने) में पहले भरे जा चुके हों तो भी कोई हल नही है - अमल कमयाब होगा और आइना माह के लिए मुताबकी तबी करना पड़ेगा ।

जब नक्शा पुर हो जाँए तब मुबुह होने पर नाम उस शरका का, जिसमें कोई काम सेना हो। या उस सड़की का जिसमें शादी करना मक-सूद हो। लिखें और बाद में शोली बनाकर दिया, नहर या कुएँ में डाल दें। इस तरह हर रोज यह असल करते रहें, जब तक कि यह नक्शा यानी कि तेरह या सात खता न हो जाय। ईशा अल्लाह यकीनी कामयाबी होना।

नोट - तेरह अरब नवशों की लकीरें इन खाकों में पणानियो पर ७८६ की संख्या पहले ही लिखकर रख सें और इनको भ्रान में भीषता करें, क्योंकि पहले दिन का बाद बहुत जल्दी ही छिप जाता है। मतलब का नाम दरिया में डालने से पहले हर रोज लिख निया करें। इन शर्तों की पाबन्दी जरूरी और साजगो है।

पृ. ३८)

नीचे प्रदर्शित नक्शा (चित्र) चित्र संख्या १९९१ व १९६२ विम. बंगलाह को जो कोई भूशक (कंपनरी), जागरान (कैणर) तथा अक. पुनार के मिश्रण से लिखकर अपना पास रखना, वह निर्मागमर का

१२५

325

Итого:

[illegible]

442 25

256

उत्तर प्रदेश

الله	الله	الله	الله
الله	الله	الله	الله
الله	الله	الله	الله
الله	الله	الله	الله

البرص

१३२

1

मोहताज न रहेगा। अगर चालीस दिन तक सात सौ छियासों तक नकश लिखकर और उन्हें आटे की गोखियों में भरकर दरिया में बहाया तो समाप्त मुष्टिकों आसान होगी और जिस काय का क़दम करणा, इसका सहल कर लेगा और वह शरस अर्धोज खलायक (सर्वाप्रय) बन जायेगा।

नकश (३८)

नोबे प्रदर्शित नकश (चित्र संख्या १६३, १६४) को कागज पर प्रकृत कर जो प्रकृत अपने पास रखता है, उसे दीव से सीजी मिलती है। इसका प्रकृत इस प्रकार है

७८६

४	८	१
२	५	७
८		६

या बहाय

१६३

२	१	१
५	७	६
८		४

या बहाय

१७१ (४०)

नोबे प्रदर्शित नकश (चित्र संख्या १६५ और १६६) को कागज पर बीस की संख्या में लिखकर तथा उसे आटे की गोखियों में भरकर बहाया में डालता है, उसकी सब मुष्टिकों आसान हो जाती है—
नकश का स्वरूप इस प्रकार है—

७८६

३		२
२		३

१६५

५		८
५		८

नकशा (४१)

10000

नीचे प्रदर्शित नक्शा (जिस संख्या १६७ और १६८ की निखकर अपरा पास रखने वाले की सभी मामलों में पूरी होती है। पर्याप्तियां दूर होगी, रंज सिटींग, इतिहास जलिन या उसका कोई छद्म हो तो मसल्लर हो जायगा। बीमार के गले से वीधने से बीमारी दफा हो। डासेब का खलल हो तो साठ रोज तक सिलकर, घोल कर पिलाने से आसब दूर हो। नवाजिहल का गुमान हो तो इसे गले में बांध दें।

नक्शा मुकर्रम इस प्रकार है

७८६			
२७३२९	२७३२४	२७३२७	२७३७४
२७३२६	२७३७४	२७३२०	२७३२४
२७३७६	२७३२९	२७३२२	२७३२९
२७३२३	२७३७२	२७३७७	२७३२२

१६९

८८५

१८१८१	१८१८८	१८१८८	१८१८८
१८१८५	१८१८७	१८१८०	१८१८७
१८१८५	१८१८९	१८१८८	१८१८९
१८१८८	१८१८८	१८१८८	१८१८८

१६८

नकशा (४२)

नीचे प्रदर्शित नक्शा (जिस संख्या १६९, १७०) की बहुत सी खसलियां हैं। जिस अंश के लिए अपने पास रखना, बहुत अरद फायदा होगा। रंजदरनी से फरागत मिलेगी। रिजक से मालामाल होगा। यह नक्शा जिसके पास होगा उसका दुश्मन दोस्त बन जाएगा। जिस अमीर के पास जायेगा, वह उसकी इज्जत, शान, बीमार होगा वा सेहत पायेगा। उमीर प्रमोदनी होगी।

नक्शा मोकर्रम यह है—

७८६			
१४८२	१४७९	१४७५	१४८१
१४७५	१४८२	१४८६	१४८१
१४८१	१४७७	१४८६	१४८६
१४७७	१४८१	१४८६	१४७७

८८५

१८१८१	१८१८१	१८१८७	१८१८१
१८१८५	१८१८५	१८१८७	१८१८७
१८१८५	१८१८५	१८१८७	१८१८७
१८१८८	१८१८८	१८१८८	१८१८८

१७०

नक्षत्र (४३)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विश्व संख्या १७१, १७२) को कागाज पर लिख कर, जिस भास्वर की दुकान की बिक्री कम होती हो, उसके दरवाजे पर चरपा करे तो खरीदार पैसों से आवे, माल बिकने लगे, बखूबी माल हो तथा रोज-ब-रोज मांस बढ़ता जाए।

नक्षत्र मोक्षजन्म व मुक्तिम इस प्रकार है -

७८६

८०	८३	६	७३
८५	७४	८	८४
७४	८८	८१	७८
८२	७७	६	८७

२७१

८८५

८०	८३	५	८३
८५	८४	९	८४
८५	८८	८१	८८
८५	८८	५	८८

१७२

नक्षत्र (४४)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विश्व संख्या १७३, १७४) को कोरे सकोरे में लिखकर सरपट या कब्रिस्तान में दफन करने से जिन दो दोस्तों के बीच बराबर करना मंजूर हो, उनमें आपस में दुश्मनी पैदा हो जाती है। सकोरे को दफन करते वक़्त दोनों दोस्तों का जिनके बीच बराबर कराना

नक्षत्र इस प्रकार है -

१७३

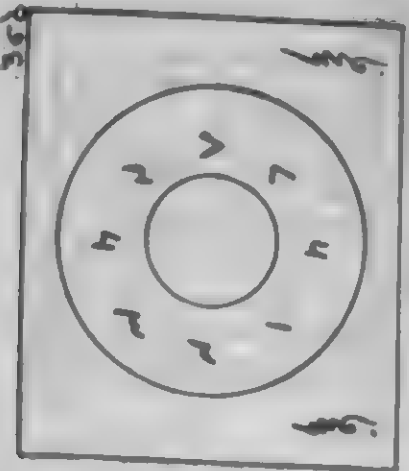
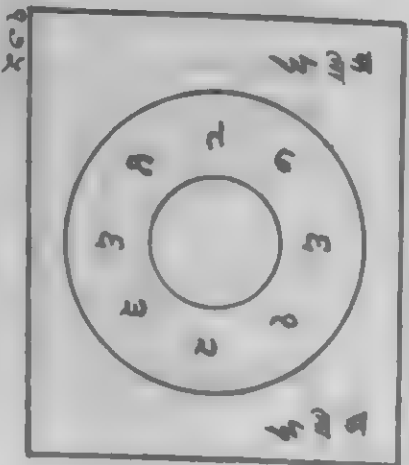
१८	३	२३	१६
२३	१२	१७	२२
१३	२६	१८	१६
२०	१५	२४	२५

१७४

१८	३	२३	११
२३	१२	१६	२२
१३	२६	१८	१६
२०	१५	२४	२५

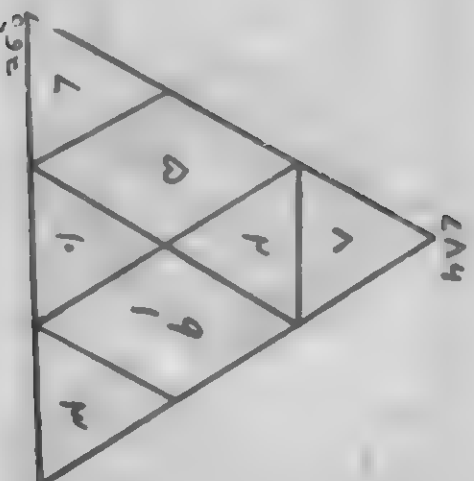
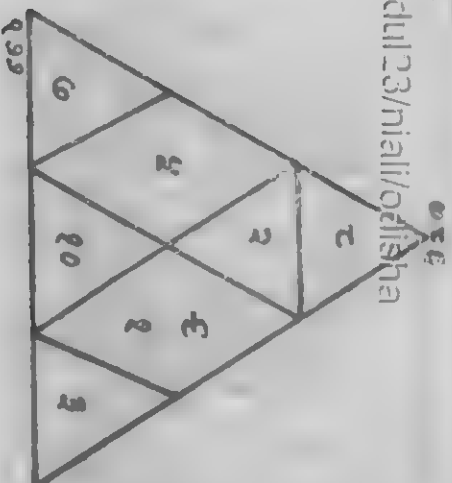
नक्षत्र (४५)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विश्व संख्या १०५, १०६) को कागज पर लिख कर, उस कागज को भाँवल में डालकर, भाँवल अपने मायुक्त को प्रभावित नक्षत्र लिखने में पहुँचे 'या' शक्तियों द्वारा वाक्य का कई बार उच्चारण करके कागज पर फुँक भाँदे तो इस तरकीब में 'गणक' बना में पता चलता है।



नक्षत्र (४६)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विश्व संख्या १०७, १०८) को लिखकर पानी में डाल दे फिर उस पानी को खेत में डालें तो ऊसल को उकसान न दे और नक्षत्र को लिखकर पाल में रखें तो पाल को किसी तरह का उकसान नहीं पहुँचेगा।



११४. मुस्लिम नन्व-शास्त्र

कालु व अन ससलसी व तसलस अला सैयद नाम मोहेयद द्य अल १० सह बह व अन तकसी फी हुलाक फला या कुद्वार या काहिर या कालि या मुकदर या मुल्किम या बल्लाह या अल्लाह ।

७१६

७ बहुर	१३	१६	२५	१
२०	२१	२	८	१३
३	६	१४ अल्लाह	१६	२२
११	१७	२३	१५	१०
२४ अदर यला विल यला	५	२	१३	१८

१८३

८९४

१३५६	१३	१९	१०	१
१०	११	१	८	१०
१	९	१० अल्लाह	१९	११
११	१६	१३	१५	१०
१२ अल यला विल	५	९	१३	१८

१८३

मुस्लिम नन्व-शास्त्र । ११५

‘कली’ के स्थान पर जालिम बरस का नाम सेना थाहिए । यह नाम विलानाया ११ रोज तक पढ़े तो जालिम के हाथ से हुकतामा निबालेगा ।

नकसा (५०)

जिहल/अहिल/मुहि/मिहल/विम/मुह्या १८५, १८६ को कालु पर लिखकर हुवा में बाटका दे । जब हुवा में यह नकसा हिनेगा, तब मतलब (माहक) बेकरार होगा । नकसा मुकरंद व मोजरबन इस प्रकार है—

७८६

८	१	६	अल्लाह काल विम काल	६	१	८
२	५	७	अल्लाह काल विम काल	७	५	३
५	६	३		२	६	५

१८३

८९४

८	१	९	अल्लाह काल विम काल	९	१	८
२	५	७	अल्लाह काल विम काल	७	५	३
५	६	३		२	६	५

१८६

नकशा (५१ तथा ५२)

नीचे प्रदर्शित नकशा (विश्व संख्या १८७, १८८) तथा (१८९, १९०) — इन दोनों को कागज पर लिखकर, शरीर में बोल कर मायब पिशा देने से वह, हर बड़ा खिदमत में दायिर बना रहता है। नकशा, ५२ में नीचे मायूक के नाम के साथ अपना नाम लिखना चाहिए।

नकशा इस प्रकार है—

७८६

ISSUE NO. 123/456

२१६२	२१८८	२१६४
२१६३	२१६९	२१८९
२१८८	२१६०	२१६०

१८७

७८५

(11)

२१९२	२१८८	२१९२
२१९३	२१९१	२१८९
२१८८	२१९०	२१९०

१८८

७८६

६८५	६८०	६८८
६८६	६८७	६८२
६८९	६८८	६८३

अनवर फलाना बिन फलाना

अनेक फलाना बिन फलाना

१८६

७८५

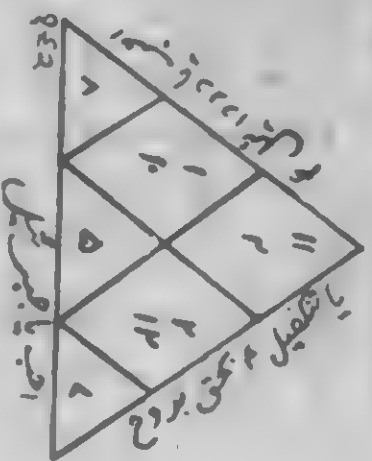
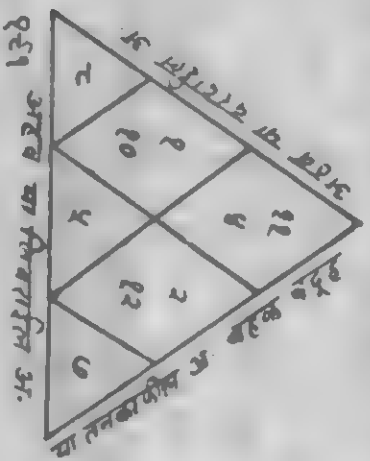
(12)

९८६	९८०	९८८
९८७	९८७	९८२
९८९	९८८	९८३

अनेक फलाना बिन फलाना १८६

नकश (५३)

नीचे दर्शाया नकश (चित्र संख्या १६१, १६२) वास्ते मुस्लिम के, जुमेगाह के दिन जाफरान में लिखकर जलाये तथा जोड़ा सा गाव का दूध उसके आगे रखे। नकश लिखने से पहले उन्हें 'बिस्मिल्लाह' पढ़नी चाहिए। इससे मायूक बिदमत में खड़ा रहता है।



नकश (५४)

आगे प्रदर्शित नकश चित्र संख्या (१६३, १६४) को कागज पर लिख कर फनीला बनाये, फिर कोर सफाई में रोगन धुसेली धरकर उसमें फनीले जल से तो मायूक कदमों में आहुति होला है। यह नकश मोहब्बत के वास्ते बड़ा कारगर है।

नकश इस प्रकार है—

८८६		
३५२९	३५९८	३५९५
नाम		
३५२९	३५२०	३५२०
३५२९	३५२२	३५२०

८८५		
३५२९	३५१८	३५१५
३५२९	३५१८	३५१५
३५२९	३५१८	३५१५
३५२९	३५१८	३५१५

नकश (५५)

आगे प्रदर्शित नकश (चित्र संख्या १६५, १६६) को जो गजब जिस काम के वास्ते लिखेगा वह काम अवश्य होगा। इसे लिखकर अरब बाजू पर बायें में किमा आफल में नहीं फनीला और अगर दगाहल होगा तो रज्जक धुत्तलक रोजो गैर म देगा। कभी मोहब्बत न रहेगा। साहेब नीकीर हो तो दशमन उसका दोस्त होगा। अगर दोस्तर के बाजू पर हम योखा आय या पानी में धोल कर पिनाया आय तो मजबूर होगा और महीन जका पावेगा। अगर आलिय हाकिम में बरता हो तो इसे अपनी टोपी या पगड़ी में रख कर उसके सामने जाय तो वह रस पर मेहरबान होगा। इस नकश की बहुत सी खसूसियतें हैं।

[illegible]

١٥
 ١٦
 ١٧
 ١٨
 ١٩
 ٢٠
 ٢١
 ٢٢
 ٢٣
 ٢٤
 ٢٥
 ٢٦
 ٢٧
 ٢٨
 ٢٩
 ٣٠
 ٣١
 ٣٢
 ٣٣
 ٣٤
 ٣٥
 ٣٦
 ٣٧
 ٣٨
 ٣٩
 ٤٠
 ٤١
 ٤٢
 ٤٣
 ٤٤
 ٤٥
 ٤٦
 ٤٧
 ٤٨
 ٤٩
 ٥٠
 ٥١
 ٥٢
 ٥٣
 ٥٤
 ٥٥
 ٥٦
 ٥٧
 ٥٨
 ٥٩
 ٦٠
 ٦١
 ٦٢
 ٦٣
 ٦٤
 ٦٥
 ٦٦
 ٦٧
 ٦٨
 ٦٩
 ٧٠
 ٧١
 ٧٢
 ٧٣
 ٧٤
 ٧٥
 ٧٦
 ٧٧
 ٧٨
 ٧٩
 ٨٠
 ٨١
 ٨٢
 ٨٣
 ٨٤
 ٨٥
 ٨٦
 ٨٧
 ٨٨
 ٨٩
 ٩٠
 ٩١
 ٩٢
 ٩٣
 ٩٤
 ٩٥
 ٩٦
 ٩٧
 ٩٨
 ٩٩
 ١٠٠

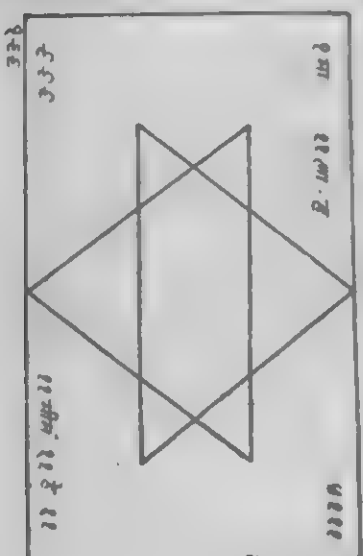
नमः (५६)

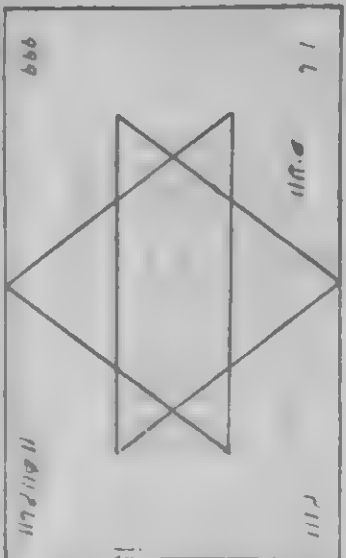
नीचे प्रदर्शित नरस (चित्र संख्या १९७०, १९८८) को बाम्पे मोहब्बत के निम्नकर, कभीता बनाकर कोरे सकोरे में रोगन फुंजद डालकर पाक बनाइ से रोगन करे बीर मुंह चिराम का घातसूब की तरफ हो बीर कला विन कलां घला हुआ फला विन फला, निहा दे । जब चिराम फल हो जावे तो बीरीन पर कलेहा हबरात महबूब सुकहानी बीर शाह प्रभुसोमोवालिदे ओहा झोला लोता रोगनकर लकसीम करदे । मगर इस नरस मुताबर को हाराम को लिह हारिज न कर बरना वासीर न करेगा ।

2	2	2	2
2	2	2	2
2	2	2	2
2	2	2	2

10	14	2	11
1	3	13	7
10	4	15	1
2	9	7	12

तथा (५७)





२००

कथर प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या १६६, २००) को अर्धक पर कुल्ह करके ओगठी में पहुँचे तो कभी किसी का मोहताज न रहे। इस नक्शा को चौड़ी की ओगठी पर खुदवा कर भी पहना जा सकता है।

नक्शा (५८)

नीचे प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या २०१, २०२) को कागज या मोख पत्र पर लिखकर आग में दहन करे। नक्शा के बीच में अपना और मायक का नाम लिखना चाहिए। यह नक्शा मोहबल के मामले में कार्यावाही दिवाता है।

३	८	६	अल हव यन्त्रों	४	३	६
४	३	१	येन यन्त्रा	५	२	१
५	२	६	नल हव यन्त्रों	६	१	५
			येन यन्त्रा			

२०१

३	८	६	अल हव यन्त्रों	४	३	६
४	३	१	येन यन्त्रा	५	२	१
५	२	६	नल हव यन्त्रों	६	१	५
			येन यन्त्रा			

२०२

नक्शा (५९)

नीचे प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या २०३, २०४) को कागज पर लिख-
कर बाजू पर अपना मले में बाँधने से सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं।

६	४	७	१	१	८
२	३	५	१	३	५
१०	२	८	१०	१	१
१०५	५	१०५	१०५	१०५	१०५

२०३

२०४

नक्शा (६०)

नीचे प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या २०५, २०६) वास्ते मोहर है। मोर

७८६

६	७	२
१	३	६
८	३	४

२०५

८८५

५	८	१
१	६	१
८	१	१

२०६

शेर मुलतफत के लिए इसे लिखकर मोहर के बाजू [पर बाँधे तथा अपने बाजू पर भी बाँधे तो सुराख पूरी होगी।

नकशा (६१)

नीचे प्रदर्शित नकशा (चित्र संख्या २०७, २०८) बाँधते मुख के तरफ़, आसिफ़ को जबके जुर्ग हथाल से क्रमर तुल्ल करे, सीखा की तहती पर फाँद कराने।

नकशा हम प्रकार है—

८८६

८९	८६	८९
८०	८२	८४
८४	८७	८३

२०७

८८५

८१	८५	८१
८०	८१	८१
८०	८६	८१

२०८

नकशा (६२)

नीचे प्रदर्शित नकशा चित्र (संख्या २०९, २१०) नकशा तरफ़ 'ब' को

८८६

२०५	२१०	२०३
२०४	२०६	२०८
२०९	२०२	२०७

२०९

८८५

१०७	११०	१०१
१०१	१०५	१०८
१०१	१०१	१०८

२१०

१६६। मुस्लिम सन्तान-शासन

आवधिक क्रमर बुर्ज टिप्पू में शुद्ध करे गये की पोस्त पर लिखकर जायें। यह रज्ज ली मुसल पूरी होगी।

नक्शा (६३)

मीने प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या २११, २१२) के दुर्क 'मीन' की जाया में जब क्रमर शुद्ध करे, मुर्ग के अडे पर लिखें। यह भी मोहम्मद आली के लिए कारगर है।

८८६

२३३	२३८	२३९
२३२	२३४	२३६
२३७	२३०	२३५

२११

८८५

१११	११८	११९
११२	११५	११७
११६	११०	११३

२१२

नक्शा (६४)

आगे प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या २१३, २१४) हरक 'मीन' की जाय

मुस्लिम सन्तान-शासन : १६७

बुर्ज अरस में तुल करे। यह भी मोहम्मद के लिए कारगर है।

नक्शा इस प्रकार है—

८८६

१३०	१३५	१३८
१३६	१३९	२३३
१३४	१३७	१३२

२१३

८८५

१३०	१३५	१३८
१३९	१३९	१३३
१३४	१३७	१३२

२१४

नक्शा (६५)

आगे प्रदर्शित नक्शा (चित्र संख्या २१५, २१६) नक्शा हरक 'मीन' की जाय क्रमर बुर्ज कीस में तुल करे, सिफास आबनारसीदा पर लिखें। यह भी मुहम्मद के लिए है।

शुद्धिगत गन्ध-भाष्य

८८४

१०५	१०५	१०५
१०५	१०५	१०५
१०५	१०५	१०५

२९५

८८५

३८८	४०४	३८८
३८८	३८८	३८८
४००	३८८	३८८

२९८

नवम (६६)

शुद्धिगत गन्ध (शुद्धिगत गन्ध २९०, २९८) शुद्धिगत 'शुद्धि' को अर्थ

शुद्धिगत गन्ध-भाष्य (शुद्धिगत गन्ध २९०, २९८) शुद्धिगत 'शुद्धि' को अर्थ

शुद्धिगत गन्ध-भाष्य

८८५

१०५	१०५	१०५
१०५	१०५	१०५
१०५	१०५	१०५

२९९

८८६

१०५	१०५	१०५
१०५	१०५	१०५
१०५	१०५	१०५

२९८

नकशा (६७)

नीचे प्रदर्शित नकशा (विषय संख्या २१६, २२०) तरक 'नून' की अक्षर क्रम बुद्धि सासद में तुल्य करें, कागज पर लिखें। यह भी मोहम्मद के लिए है।

नकशा इस प्रकार है -

८८६

३५	४०	३३
३४	३६	३८
३६	३२	३७

२१६

८८५

३५	३०	३३
३४	३६	३८
३६	३२	३७

२२०

नकशा (६८)

नीचे प्रदर्शित नकशा (विषय संख्या २२१, २२२) तरक 'वाओ' की बुद्धि सासद में अब क्रमर तुल्य करें, कागज की तस्वीर पर कुल्हा करावें। यह भी मोहम्मद के लिए है।

नकशा इस प्रकार है -

८८५

३४	३६	३२
३३	३५	३८
३८	३१	३६

२२२

८८५

३४	३६	३२
३३	३५	३८
३८	३१	३६

२२२

नवम (६६)

नीचे प्रदर्शित नवम (विषय संख्या २२३, २२४) हटाकर 'छोटी' (११) नवम क्रम में वर्ज्य और में सुद्ध करे। पोहोच आह पर लिखे। यह भी मोहकन के लिए है।

नवम इस प्रकार है -

२३८	२४३	२३६
२३७	२३६	२४१
२४२	२३५	२४०

२२३

८८५

२२८	२२७	२२५
२२७	२२६	२२४
२२२	२२१	२२०

२२४

नवम (७०)

नीचे प्रदर्शित नवम (विषय संख्या २२५, २२६) हटाकर 'छोटी' को वर्ज्य करके नवम क्रम में सुद्ध करे, 'रत्ना' कवच पर लिखे। यह भी मोहकन के लिए है।

नवम इस प्रकार है -

१८१	१८६	१८६
१८०	१८२	१८४
१८५	१८८	१८३

२२५

८८५

१९१	१९५	१८९
१९०	१९४	१९८
१९७	१८८	१९३

२२६

नकशा (७१)

नीचे प्रदर्शित नकशा (विजय संख्या २२७, २२८) को शरयत में मान कर पिला देने से मायूक हूर वयत ज़िदमत में खड़ा रहता है।

नकशा इस प्रकार है—

७२६

६	१२	१५	२
१४	३	८	१३
४	१७	१०	७
११	६	५	१६

८४५

१	१५	१७	५
१५	५	४	१५
५	१६	१०	८
११	१	७	१५

६ विविध कामना पुरक प्रयोग

इस प्रकार हमें विभिन्न मनोरंजनप्रदाता की पूर्ण एवं विभिन्न कार्यो प्रयोगों का ज्ञान भी किया जा रहा है।

उनमें से अधिकांश प्रयोग ऐसे हैं, जिनमें हिन्दू तथा मुस्लिम तादिकों द्वारा नमान कर से प्रयोग में लाया जाता है। इन प्रयोगों के मन्त्र भी इस प्रकार हैं कि उनमें मुस्लिम पौर-पण्डित तथा हिन्दू देवी-देवताओं आदि कर्तव्यों का एक साथ उल्लेख हुआ है।

इन प्रयोगों में से कुछ के मन्त्र तो शुद्ध इस्लामी हैं और कुछ के हिन्दू मन्त्र इस्लामी शब्दों के मिश्र-बुन हैं।

दूसरे प्रकार हमें हाजिरात मरकथी दो प्रयोगों का उल्लेख किया जा चुका है इस प्रकार से भी हाजिरात विषयक कुछ अन्य प्रयोग दिये गये हैं। इनके अतिरिक्त बर्जोकरण, मोहन, बरतन-मिर्द, शान की वरद, पर्वेशाने बन्दन-मुक्ति तथा चोरी का पला लगाने आदि विषयों से सम्बन्धित प्रयोगों की भी इसमें सामिलित किया गया है।

प्रत्येक प्रयोगों का अन्तिम निम्न जामात साधन करना आवश्यक है। जिस प्रयोग के निष्पत्ति से सामयिक प्रयोग में पूर्ण उभय मिश्र वरत्न का उल्लेख किया गया है, उसे पहले मिश्र करना आवश्यक होगा, अन्यथा नारकान्तिक रूप में वह प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो सकेगा।

राज सभा-मोहन प्रयोग

पहले एक बार पूरी 'विमिलता' पढ़कर, फिर नीचे लिखे मन्त्र को अपने दोनों शरीरों की हथेलियों पर १ बार पढ़ने के बाद, दोनों हथेलियों को अपने मुँह पर करकर, जिस राज सभा में पहुँचा जायेगा वही मकसद प्राप्त होगा तथा सब लोग भागिल (प्रसन्न) हो जायेंगे। मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र:—“सलायन कालिनाधिनरचिर्हीम नन मीकुल अभीर्जुं हीम।”
इस मन्त्र के आरम्भ में एक बार 'विमिलता' तथा अन्त में ७ बार 'दकर' पढ़ना आवश्यक है।

मन्त्र—“कालौ भुंक्ष्येति कलं सलाम मेरी औखों में सुग्गा
 बसं जो देखे सो पामन परे दुहाई मौसुन आदम दरगौर की
 छः छः छः।”

बिबि—भुक्तार के दिन सवा साख गेहूँ के दाने बैकर एकड़ में ११॥
 दाने पर एक एक मन्दा पड़े। फिर उनमें से आधे दानों को भिसवाकर,
 उस आटे में भी भस्कर मिलाकर हलुआ सज्जार करें और गोसुख आरम
 दस्तगीर को नियाज देकर, उसे स्वयं खायें। फिर उक्त मन्दा को ७ दार
 पक्कर अपनी आँखों में सुरमा आज कर जिस सभा में भी पहुँचेंगे, वहाँ के
 सब लोग मोहित हो जायेंगे।

मन्त्रः—“विमिश्रलाह दाना कुतह अलाह यमाना दिखह
सखल तुम हो दाना हमारे बीच फजाने को करो दिवाना ।”

उक्त मन्त्र में 'वहां' अर्थात् 'सब आया है, वहां जिस राज्य-कर्म-
पाटी को वश में करता हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए' ।

प्रयोग विधि:—इकतालीस बिजोने साकर आबो रात के समय उनमें से एक-एक बिजोले को इकतालीस-इकतालीस बार बर्धिमन्त्रित करके अगिने में डालता जाय। इस क्रिया को निरन्तर दोन दिनों तक करके रहने से इन्विषल राजप-कर्म-बारी यथोपेत हो जाता है।

साधन-विधि:—कार्य-साधन से पूर्व २१ दिनों तक उक्त मन्त्र को २१ जिनोलों पर २१-२१ बार पठकर अग्नि में आहुति देने से मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

मल्लः—“काला कलवा कौसठ गीरा मेरा कलवा गंगा तीर
जहाँ को मेरुं वहाँ को जाइ, मास मन्त्री को कुचन न जाय,
प्रयत्न मारा अपारि लाय, बलद बाल माल उलट मूढ माह

भार भार कलक ठेरी ब्रास थार चौमुखा दीया न बाती जा माह
बाही की छाती इतना काम मेरा न करे तो तुझे अपनी भों का
दूध पिया हूँ ।”

साधन-विधि—बी का दीपक जलाकर गुलाल की धूनी में तथा जोड़ा गुलाल और सिन्दूर रखकर २१ दिनों तक निरन्तर १००८ की संख्या में जप कर ता प्रभु नमो भिक्षुको ज्ञाता

सबसे पहले एक बार पूरी 'विमिश्रताह' पढ़कर फिर निम्नलिखित मन्त्र को १०० बार पढ़ें—

तक मन्त्र के प्रारम्भ तथा अन्त में गारह-भारह बार "इन्द" भी पढ़नी चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

‘दृष्ट’ का मूल दृश प्रकार है—

मन्त्र—अला हुमा सलते अला मुहम्मदिन व अला आले
ही मुहम्मदिन व बारक व सलतस !’

फिर अग्रगण्यता के समय उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़कर अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ५ कंमारों तथा फिर दोनों हथेलियों को दही और से फर्ग (दुधनी) पर मारते हुए इस प्रकार कहें—

“या अस्माकं फलानि (या फलानि) को मेरे पास कर।”

उक्त 'शान्त' में जहाँ 'कलाने (या कलानी)' शब्द आया है, वहाँ शाब्द-प्रत्यय अथवा स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

उक्त प्रयोग को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहने से साध्य-स्थिति साधक के बनी हुई हो जाता है ।

वशीकरण के लिए सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र का २१ दिनों तक
नित्य १०४ बार जप करें। मन्त्र जप से पूर्व एक बार पूरी 'विश्वस्तुति'
तथा अन्त में ७ बार 'ब्रह्म' पढ़ना आवश्यक है।

मन्त्र—“लाइलाह इलिललाह धरती से आसमान तक लाइलाह इलिललाह अशं सं कुर्मी तक लाइलाह इलिललाह लोह से इस्लाम तक लाइलाह इलिललाह मुहम्मद रसूलिलाह फलानी के बेटे फलाने को मेरे पास में कर ।”

उक्त मन्त्र में जहाँ ‘फलानी के बेटे फलाने’ शब्द आया है, उसी स्थान पर जिस व्यक्ति को बशीभूत करना हो, उसकी मां के नाम के साथ उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

उक्त विधि से जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब इसी मन्त्र द्वारा ११ बार अभिमन्त्रित गनी या पिठाई को जिस अभिमन्त्रित व्यक्ति को खिलाना पिला दिया जायेगा, वह साधक के बशीभूत हो जाएगा ।

स्त्री-मोहिन प्रयोग

मन्त्र—“अल्लाह बीष हथेली के मुहम्मद नीच रूपार, उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार । मुझे करे मार मार उसे बीषे करम तरे तार, जो न माने मुहम्मद की आन, उस पर पड़ ब्या का बान, वहमक लाइलाह अल्लाह है मुहम्मद मेरा रसूलि-रसाल ।”

विधि—किसी भी शनिवार से आरम्भ करके दूसरे शनिवार तक प्रतिदिन १००१ बार इस मन्त्र का जप करे । जप करते समय की का दीपक तथा पिठाई अपने सामने रखे तथा लोबान की धूप दें । इस प्रकार आठ दिन तक साधन (जप) करने में मन्त्र सिद्ध हो जाएगा ।

प्रयोग के समय साधक-स्त्री के बीषे पांव के बीषे की मिट्टी लाकर, उसे इस मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करके मसलक पर बाल देने से वह स्त्री मोहिन होकर साधक के बशीभूत हो जाती है ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (१)

मन्त्र—इया आरतैना शैताना मेरी शिकल बन फलानी के पास जाना, उसे मेरे पास खाना, न खावे तो तेरी बहन भाननी पर तीन सौ तीन सलाह ।”

विधि—एक चारपाई के पर्णते नीचे खड़े होकर, शीर्षों में गुड़ की एक डली लेकर, उस डली पर उक्त मन्त्र को १२१ बार पढ़ कर फूँके, गलबगल उस गुड़ की डली को खाट के नीचे रखकर सो जाय । प्रतः-प्रतः खाट बहुत गुड़ बालकों को बाँट दे । इस प्रकार ७ दिन तक यह क्रम करे जो साधक-स्त्री बशीभूत होकर पास आ गती है । उक्त मन्त्र में जहाँ ‘फलानी’ शब्द आया है, वही मन्त्र-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (२)

मन्त्र—“कामरुद्देस कामारुद्देस देवा जहाँ बने इस्माइल बेगी इस्माइल बेगी ने दिया पान का बाँदा, पहला बाँदा आती बानी, देवा, बाँदा दिखावे छाती, तीजा बाँदा अंग लिपटाई, फलानी साथ पास चली आई, दुहाई श्री गुरु गोरखनाथ की ।”

विधि—दिवाली की रात में यह मन्त्र १०४ बार पढ़ने से सिद्ध हो जाता है । फिर आवश्यकता के समय बिना कट पान के बीड़े का इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह बशीभूत हो जाएगी । इस मन्त्र में जहाँ ‘फलानी’ शब्द आया है, वही अभिमन्त्रित स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (३)

मन्त्र—“कामरूप देस कामारुद्देस देवी जहाँ बने इस्माइल बेगी, इस्माइल बेगी ने लगाई फुलबारी, फूल तोड़ लोना बमारी, जो इस फूल की सैंबे पास, जिस का मन रहे हमारे पास, महल छोड़े, घर छोड़े, औंगन छोड़े, लोह-कुट्टम की खान छोड़े, दुहाई लोना बमारी की, धनन्तरी की दुहाई फिर ।”

विधि—जानवार में आरम्भ करके २१ दिनों तक निरन्तर १०४ बार इस मन्त्र का जप करे तथा घुए, दीप और आदरा रखकर पूजन करे । इस प्रकार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर किसी फूल को ७ बार इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके साधक-स्त्री को दे दे तो वह तब फूल की धूपते ही बशीभूत हो जाएगी ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (४)

मन्त्र—“यद् पीपल का यान, जहाँ बैठे आञ्जलीय शान्त मेरी शरीर मेरी घरत बन फलानी को आ रान, जो न राग तो धोनी की नाद चमार की खाल कुलाल की माटी पर आ राजा साहे राजा का, मैं चाहूँ अपने काल को, मेरा कामाञ्जली। तो जानसी में तेरा दायनगीर रहूँगा ।”

विधि—किसी भी जनिवार में आरम्भ करके २१ दिनों तक, भात के समय जला होकर ११ नाई के दोने हाथ में लेकर, प्रत्येक दिन १ ऊपर उक्त मन्त्र को ध्या रह-ध्या रह बार पढ़कर आग में डालता जाय, मन्त्र में किस जगह पर ‘फलानी’ बदल आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

उक्त क्रिया को निरन्तर-निरन्तर रूप से करते रहते पर साध्य-स्त्री वशीभूत होकर स्वयं सामने आ उपस्थित होती है ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (५)

मन्त्र (१)—“अलफ गुरु गुप्तार रहमान, जग जग १ अलहादीन शैतान सात बार फलानी को आ रान, न राने तो तेरा माँ की तलाक, बहिन की तीन तलाक ।”

मन्त्र (२)—“अलफ अलोप एक रहमान, सुन शैतान मेरा शकल बन फलानी को आ रान, न राने तो तेरी माँ बहिन को तीन सौ तीन तलाक ।”

उक्त दोनों मन्त्रों की प्रयोग-विधि नीचे लिखे अनुसार एक जैसी है । उक्त मन्त्रों में जहाँ ‘फलानी’ शब्द आया है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए ।

विधि—वेसन का चौमुखा दीपक बनाकर उसके चारों कोनों पर मोटे का रक्त (खून) तथा अपने दाहिने हाथ की अनामिका (कीची) अंगुली का रक्त (खून) लगाकर, उसमें तेल भरकर चार बत्तियाँ रखें । फिर ११ (गिर्वन्त) होकर, दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय तथा दीपक की बत्तियों बलाकर, सोनान की धूप दें । योग के लिए मुनि हुने की अपन

भाल रखें । फिर उक्त दोनों मन्त्रों में से किसी भी एक को १०८ बार बप कर नगे ही सो जाय तथा दीपक को जलता हुआ छोड़ दें । इस क्रिया को निरन्तर ७ दिनों तक करते रहने से साध्य-स्त्री वशीभूत होकर स्वयं साधक के पावों पर आ गिरती है ।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (६)

मन्त्र—*Om Namah Shivaya* (१०८ बार)।
सात बार फलानी के जिया आन जो न माने तो तेरी ब्रम्हा की तलाक हमशीरा की तलाक ।”

विष्णु—यह मन्त्र भी पूर्वोक्त मन्त्रों के पाठान्तर जैसा ही है । इसको प्रयोग-विधि भी मिलती-जुलती है, जो विष्णुनुसार है—

विधि—वेसन का एक चौमुखा दीपक बनाय, फिर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के रक्त में वही की भिंगोकर बल्ला तथ्यार करे, तदुपरान्त दीपक में बमेली का तेल भरकर उसमें पूर्वोक्त बल्ला डालें तथा लोबान की धूप दें । फिर भुने हुए जवला (बी) का भाग रख कर दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठें तथा १०८ की संख्या में मन्त्र का जप करें । ७ दिन तक यह प्रयोग करने से साध्य-स्त्री वशीभूत होकर साधक के पास चली जाती है ।

प्रयोग विधि—मिद हो जाने पर प्रयोग के समय उक्त मन्त्र को ११ बार सुपारी को छाल पर पढ़ तथा उक्त पान में रखकर अभिर्वापित व्यक्ति को खिला दें ता मनोमिलता की पूर्ति होती है । यह मन्त्र आकर्षण कारक होने के साथ-साथ वशीकरणकारक भी है तथा मूँठ की उल्टी भेजने का काम भी करता है ।

सर्व जन-मोहन मन्त्र

मन्त्र—“कामरुदेस कामाख्या देवी जहाँ बनें हरमहल जोगी, हरमहल जोगी न कोई बाढ़ो, फूल उतारे लोना चमारी । एक फूल हंस, दूजा बिहँसे, तीजे फूत्र में ओटा-बहु नाहराई बसे । जो धुंध इस फूल की बास, वा आवे हमार पास । और के पास जाय तो दिया फाटि मरि जाय । मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र देवरोवाचा ।”

विधि—रविवार के दिन स्नान करके लीला, सुपारी, पान, मिठाई से, दीपक जला, १०८ मुनिघट फूलों की धी से सानकर प्रारंभ की १०८ बार उक्त मंत्र से अभिमन्त्रित कर अग्नि में होम करें। इस प्रकार २१ दिन तक निरन्तर होम करने से मन्त्र सिद्ध होता है। इस अवधि में ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए। २२वें दिन ब्राह्मणों को भोजन कराकर दीक्षा देने चाहिए।

आवश्यकता के समय किसी मुनिघट पुष्प की इस मंत्र से उ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्तित्व की सुंघा दिया जायेगा, वही मोहित हो जायेगा।

रत्नी-मोहन चरपा फूल मंत्र

मन्त्र—“कामरुदेस कामाख्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी ने लगाई बारी, फूल चुनै लीला चमारी, एक फूल राता, दूजा फूल भाता, एक फूल हँसा, दूजा फूल बिहँसा, वहाँ बसे दया ध। पेड़, चरपा के पेड़ मे रहै काला भैरू, भूत प्रेत ये मरे, मसान, ये आवे, किसके काम ये आवे टांजा टामन के काम, मेचूँ काला भैरूँ को लावे मुरके बाँध बेठी हो तो बेगी लाव, सुली हो तो उठा लाव, वह सोवे राजा के महलों, प्रजा के महलों, मुझमें होनी राजी, फूल दूँ उसी के हाथ, वह उठ लायें मेरे साथ, हमका झोड़ पर घर जाय, काठी काटि वहीं मर जाय, मेरी शक्ति मुर की शक्ति पुत्रोमन्त्र हररोयाचा चूके उपाह सब्जे लीला चमारी महरे जोगी के कुंड में पड़े, बाधा छोड़ कुवाचा जाय तो नार लखार में पड़े।”

विधि—शनिवार के दिन चरपा के पेड़ की चूील कर उसकी शाली में सात बलावे का दोरा बाँध जाये। रविवार के दिन प्रातः काल उसी शाली की, उगत मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित कर तथा गुगल की धूनी दण धूप देकर, लोड़कर पार से कायें। फिर घर लाकर रात के समय टालो के बागे दीपक रखकर धरंवर का पूजन करें तथा २१ बार मन्त्र का जप

करें। भोग में शराब, उदरे के बड़े, तैल, गुड़ तथा बड़ी रक्खें। इस प्रकार नियम २१ दिनों तक साधन करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र सिद्ध हो जाने पर आवश्यकता के समय चम्पा के फूल की इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके, जिस स्त्री को सुंघाया जायेगा, वही मोहित होकर बग में बनी रहेगी।

पीर बिरहना का मन्त्र

मन्त्र—“पीर बिरहना धुंधु करे सवा सेर सवा तोला खाय बरसी कोस धावा करे साठ से कुतक आगे चले, साठ से कुतक पाछे चले, छप्पन से छूरी चले, बावन से बीर चले जिसमें गढ़ गजना का पीर चले और की घजा उलाड़ता चले, अपनी घजा टंकता चले, सोंन को जगाला चले, बंट को उठाना चले, हाथों में हथकरंदी भेरें पैरों में बेड़ी गेर हलाल माहीं दीठ कर मुरदार माहीं पीठ करे कलवान नबी कै याद करे ठः ठः ठः।”

विधि—किसी ग्रहण की रात में गुरू करके रोजाना ४० दिनों तक इस मन्त्र का नियम १०८ बार जप करें तथा मुनिघट तैल का दीपक जलाकर चमेली के फूल चढ़ावे एवं सवा भेर हनुवा का भोग रक्खे तो ब्यासीसवें दिन पीर बिरहना सामने हाजिर होया। उस देखकर हरना नही चाहिए। अगर बरेंगे नही तो फिर वह पीर हमेशा खिदमत में हाजिर रहा करेगा तथा उसम जिस काम के लिए कहा जायेगा, उसमें वह पूरा करता रहेगा।

मुहम्मदा पीर का मन्त्र

मन्त्र—“विस्मिल्लाहरेहमासिर्हीम पाँच पैघरा कोट जंगीर जिस पर सेले मुहम्मदा पीर, सवा मन का तीर जिस पर खेलाता आवे मुहम्मदा पीर, मार मार कराता आवे, पाँच पाँच करता आवे, टाकिकी को बाँध कुवा बावड़ी से लावो, सोता को लावो, पीसती को लावो, एकाती को लावो, जल्द आवो हजरत हमाम हुसेन की जाँच से निकाल कर लावो, बीबी कातमा के दामन में लोलकर लावो नही तो माता का चूला दूध हराम करे।”

विधि—इस मन्त्र को नीचे दी जुमेरात की सफाया से अपना आरम्भ करके नियम १० बार पढ़कर लोबान की धूप देते जायें। इस प्रकार जुमेरात कीत जाने पर मुहम्मदा पीर हाजिर होजा है तथा उससे जो काम करने को कहा जाता है, उसे पूरा करता है।

इस मन्त्र को यदि किसी बीमार आदमी के ऊपर पढ़कर फूँक मारें जाय तो उसे आराम मिलता है।

मुहम्मदा पीर का हाजिराती मन्त्र

मन्त्र—‘विस्मिल्लाहुरहेमानिर्हीम मुहम्मदा साहयासिला रत्नलसता जीका असवार यदा चलता कौन कौन चाह्या, अर्जोपर पर पर्यंत चले, हाजी चले, गाजी चले, टोली गाजंत मेरी गाजंत अहेमदा चलंत, महेमदा चलंत, सत्तर सिला चलंत, बहत्तर चलंत एक लाख अरसी हजार पीर पैगम्बर चलंत, बावन वीर चलंत, चौंसठ जोगनी चलंत, नौ नारसिंह चलंत, बारह राबल चलंत चौंसठ मूसा चलंत, सुलेमान पैगम्बर का तख्त चलंत, लाला परी चली, सुफेद परी चली, ज़रद परी चली, स्याम परी चली, सख्त परी चली, हूर परी चली, जूर परी चली, अलोल परी चली, आसमान परी चली, आकाश से उतरी बराय खुदा मेरे काम हूँ सितायी उतार लयावला एक चलता, एक सौ चलता दीय चलता दीय सौ बह्या तीन चलता, तीन सौ बह्या बड़े वेग सँ चलता उठा कुदादेव चलता मंदारु कालेश्वरी चली लंका वैरावण बह्या हनुमंत चले घूमन गरमूँ देवी घुमा चली नदी नालेसँ चली मन्दोदरी रावनपुरी सँ चली उलटी पाखर सुलटी लानी, जो काई करे हमारी घुरी उलटी सोमरली देखूँ तंताल मन्त्र तेरी शक्ति विस्मिल्लाहुरहेमानिर्हीम उत्तर का बाजा बजा उधर का बाद-शाह आया, परिवस का बाजा बजा परिवस का बादशाह आया, पुरव का बाजा बजा, पुरव का बादशाह आया काले काले के असवार अपनी अपनी जमात सितायी लेकर आवया जहाँ एकाले

वहाँ हाजिर रहेना दे खुदा मुहम्मदा की सुखीर पीर नीर लीला पंदा, नीला जीन जिस पर चढ़ि आया मुहम्मदा पीर रोजा करे निवाज गुजारे अश पानी के कने न आई, खाज लाय अख्श पर हरे मो मुसलमान बिस्म में जाय, मवा मन लोहे की जजीर लोहे तोड़ तोड़ आव हाथ कुदाही नले जंजीर ऐसी कही मुना मुहम्मदा पीर—अयमी नुर्दिलो नसि नसी, पराई मुदरा तोड़ बाल, हमारी हकार तुम्हारी पुकार किले नारसिंह किले की पवारी टः टः स्वाहा।

विधि—सवा हाथ सफेद कपड़ा, पगल तथा लोबान की धूप दी जाय। फिर सवा मंत्र आवल की मदद बनाकर, घाली में पानी भरकर रखें। यन्त्रिज के ऊपर बोमुख दिया जलाये। फिर बवारी कन्या को स्नान करावा के तथा नये कपड़ पहिना कर उसे सामने बैठायें तथा गुड़ की गोली को पूर्वोक्त मन्त्र से १४ बार अभिमन्त्रित कर कन्या को खिलायें। फिर कन्या दीपक के ऊपर दृष्टि जमाये। तदुपरांत उससे जो कुछ पूछा जायगा, उसका वह सही-सही उत्तर देगी।

हाजिरात का सुलेमानी मन्त्र

मन्त्र—‘विस्मिल्लाहुरहेमानुर्हीम खुदाई बड़ा तू बड़ा किनुहीन पैगम्बर दुनी तेरी सादात जुरो बादना मुरादी बेनुनियादी तुर्कमापरि ताधिया सिलार देखूँ तेरी सक्ति बेगि बाँधि ललाव नौ नारसिंह चौरासी कलना बारा प्रला अठारह सौ शाकिनी कामन दुरायन छल छिद्र भूत भेत चोर पाखर अनिया बैलाख बेगि बाँधि लाव जा न बाँधि लावै तो दुहाई सुलेमान पैगम्बर की ॥’

विधि—हर शुक्रवार को सैल, इन, लौंग, धूर तथा पिठाई से पूजन करके १०८ बार पढ़ने से यह मन्त्र ४० दिन में सिद्ध हो जाता है। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर जब हाजिरात करना हो, तब फल पर मिट्टी से चौका बनाकर, उस पर बावलों की मस्जिद बनायें। फिर एक लकड़ी के पट्टे

पर त्रिशूल खिचकर, उसके ऊपर नबारी कन्या को स्नान कराकर गंगा स्नान करके पहिना कर बैठायें फिर कन्या के सामने दीपक जलाकर गंगा तथा स्वयं पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़-पढ़कर कन्या के परसक पर बाजना की मारें तो कुछ देर बाद ही वह कन्या आपके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजें में देखकर दे उठेगी।

हाजिरात का खवाजा मन्त्र

मन्त्र—“खवाजा खिब्र जिन्द पीर मैदर मादर दस्तगीर मदन मेरा पीराय पीर करो बोड़े पर भीर बढ़ो हजरत पीर हाजर सो हाजर।”

विधि—बिमबी भी मुक़्त्यार से आरम्भ करके २१ दिन तक गंगा में नित्य पंचम की संध्या में उठती माला पर जपें। सोम, इत्यादि की और सोबान की धूप देने रहें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग के समय मुब्तदाद बने एक छोटे बच्चे को स्नानादि में परित्र कर स्वच्छ वस्त्र पहना कर एक लकड़ी के पट्टे पर बैठाये तथा उसके दाहिने ओर के गाछन पर काली रंगाही (काजल) लगा दें और उसमें मंद रत्न की कहें तथा स्वयं आंगे बैठकर उक्त मन्त्र की पढ़ते हुए धूप देते रहें।

लड़के को सबसे पहले मीरान दिखाई देगा। जब वह यह कहें कि मुझे मंदान दिखाई दे रहा है, तब आप उनसे कहें कि मंदान की जगह बीगान दिखाई देने लगे। फिर लड़का जब बीगान देखने की आज्ञा करे, तब आप कहें कि दो जने आओ। जब दो जने आजायें तब कहें कि दो और आ जाओ। जब दो और आजायें, तब कहें कि दो और भी जायें। इस प्रकार चार दफा करें। जब आठ आदमी आ जायें, तब कहें कि सात बाले की मुलाकर साह नयावाओ। जब साह सग जाये तब कहें कि भिरसी की बुला कर छिड़काव कराओ। जब छिड़काव हो जाये तब कहें कि फर्मा छिड़वाओ। जब फर्मा छिड़ जाय, तब कहें कि दो कुर्सी और ठहर मैगाओ। तब तथा कुर्सी आ जाने पर कहें कि गद्दो (बछवाओ) गद्दो बिछ जाने पर कहें कि पीर साहब की जाकर हमारी ओर में जह करे कि आपका फर्मा बादिम आपकी याद कर रहा है, इसलिए भिरवानो करके मुंजी साहब की साथ लेकर गद्दी तयारीक लायें। जब मुंजी साहब तथा पीर साहब आ जायें तब मुंजी से कहें कि वह लोग की पीर साहब की नखा करें—यह कहकर भीम, हलायदी, इन इन सबको दें। फिर मुंजी

से कहें कि पीरान पीर साहब से हमारी अर्ज करें कि आपका फर्मा बादिम फर्मा काम के बारे में पूछ रहा है। यह कहकर अपना काम बतायें तो लड़के द्वारा उसका जवाब मिलेगा।

यदि लड़का उत्तर को समझ जाय तो ठीक कहें, न समझ सके तो मुंजी से कहें कि मैं नहीं समझा इसलिए मुझे फर्मा फर्मा में बिछकर दिखाओ। इस प्रकार मुंजी आप में सिद्ध कर दिखा देगा। इसा बाबि स आ कुछ पूछनी हो वह पूछ लेना चाहिए।

स्वप्न सिद्धि मन्त्र (१)

मन्त्र—“विस्मिल्लाहुर्रमानुर्रहीम अल्लाहो रबीमुहम्मद रसल खालो की तस्वीर कुल आलम हजर मेजो मवरकल हयायेनो जरूर।”

विधि—इस मन्त्र को पहले सवा साख की संख्या में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिए। मन्त्र का जप बृहस्पतिवार से आरम्भ करना चाहिए तथा पश्चिम की ओर मुंह करके बैठना चाहिए। आश्वयुजका के समय याद रहें सो से याद रहें हज्जत तक की संख्या में, जितना हो सके मन्त्र का जप करना चाहिए। यह क्रम २१ दिन तक जारी रखना चाहिए। इसके प्रभाव से बाँछल प्रश्न का उत्तर २१ दिन के भीतर स्वप्न में अवश्य प्राप्त हो जाता है।

इस मन्त्र के अवसल के दिनों में हर बार पेयाब करने के बाद इस्तिना आश्वय करना चाहिए अर्थात् इन्दी की मिट्टी के ढेले से पोंछ देना चाहिए तथा बृहस्पतिवार के दिन किसी कमर पर जाकर रकाबी, फूल-हल तथा मिठाई चबुनी चाहिए, खोबान की धूप देनी चाहिए तथा फकीरों की बाला खिलाना चाहिए।

स्मरणीय है कि सभी मुसलमानों मन्त्रों की उलटी माला फेरते हुए जपा जाता है अर्थात् इस मन्त्र की भी उलटी माला फेरते हुए ही अपना चाहिए।

स्वप्न-सिद्धि मन्त्र (२)

मन्त्र—“विस्मिल्लाहुर्रमानुर्रहीम शायसौरव धरैल यले आदम हजरत महदुर्र सुमानी हाजर।”

करके गङ्गा के किनारे नदी तालाब बनें हों में हास दें तो यह भी जाता है।

स्वप्न में भविष्य ज्ञान

जंगल में जाकर निम्न वेद पर अभ्यास है, पहले उसकी भाषा पढ़ी समा कर उसकी अमर वेद युक्त एक मन्त्री लेकर ले जायें। (यह मन्त्री को धूप देकर जला दें तथा लता की मित्रहानि रखकर जिसे जला दें) (जाल) का विचार करते हुए भी जाया जायेगा उसके बाद में भविष्य का ज्ञान स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाता है।

मनवांछना जो ज की प्राप्ति करना

किसी मनवांछित वस्तु को प्राप्ति तथा अभिलाषा की पूर्ति में निम्न लिखित नास्तिक-प्रयोग सहायक सिद्ध होते हैं -

प्रयोग १ - भाष्य मन्त्री के रूप पर की तरफ की रात में किसी जगह छोटी हुई ऊँट की हड्डी को खोल जाय। फिर चौदस की रात में उस पर साधारण धूप दीये दें। फिर उसे पानी में डोब कर सात बार सात बार सात बार जोर-जोर से मनवांछित वस्तु की याचना करें तो कुछ ही दिनों में अभिलाषा पूर्ण होती है।

प्रयोग २ - रविवार के दिन भेड़ के मोत को खोल कर घरे कावे। फिर उसे जलाकर गोली तैयार करें तथा गोली को जर्मन में लपेट कर लेस में लीजें। आधी रात के समय एकान्त में उसमें पास बैठकर उस में जिस वाच की इच्छा कर वह अलानि की भेड़ खाना में घुस देंगे।

प्रयोग ३ - श्राद्ध महोत्सव के अंश पराख में भरणी नक्षत्र वाला दिन घनी घरे हुए चार घड़े लेकर जंगल में पहुँच और उन्हें वही किसी एक जगह में रखकर घुलवाय लीट लीजें। फिर दूसरे दिन वही आकर घड़े की देखे और उनमें जो गोली मिले उस लेकर लीट लीजें। वही घड़ी की गोली खानी करके वही छोड़ लीजें। घर लौटते हुए लाना घड़े में किसी गोली में रखकर प्रोलादन उठकर पूजा करें तो सहसा प्रसन्न होकर उसके घर में रहने लगती है अर्थात् उस व्यक्ति की यत्नायें पूर हो जाती हैं।

जुए में जीतना

इसवार के दिन जब हस्त नक्षत्र हो, तब एक दिन पहले घनी गोली चार के दिन पचाह के घोड़े को खोल लीजें। फिर रविवार की रात

उसे लाकर श्रवणी वृद्ध कलई में बांधकर जुआ खेलें तो वह लगाता जीतता बना जायेगा।

गुप्त भेद की जानना

इसवार के दिन धूप का कनेवा निकाल कर ले जायें। फिर उसे धूप लोबान और सात धूप आदमी की छाती पर रख दें तो वह सोते हुए योगेश्वरी की शक्ति को प्रकट कर देता है।

रात में भी दिन जसा दिखाई देना

इसवार के दिन भेदक और भेदकी की जोधा खाने हुए देखें या किसी चीज़े भेदक को दूध में भेदक पर चढ़ा हुआ देखें तो उन्हें लाकर, भार कर मुखा लें। फिर उन्हें आग में जलाकर धरम कर और उसे मुरमे की तरह पास कर रख लें। इस मुग्धे का अन्धा में लगने में अंधरा रात में भी दिन की तरह दिखाई देता है।

दूर चलने पर भी थकान न आने

(१) काल तीतर की लाकर तीन दिनों तक भूषा रख चौथे दिन उसे पारा पिला दें। फिर दूध में पिगोये हुए चावल खिलायें। जब तीतर बीठ कर तब उसमें से पारे की निकाल कर गोली बना लें। इस गोली को मुँह में रखकर लम्बी यात्रा करने से भी थकान नहीं आयेगी।

(२) महेद ककोरा, काकनधा और सरकोका - इन तीनों की जड़ को पीसकर गहिर के साथ पिलाने तथा इन तीनों की पीटली में रखकर कमर में बांधकर चलने से लम्बी दूरी तक बिना थकान के पैदल चल सकता है।

जमीन में गड़ी हुई वस्तु दिखाई देना

(१) जाले कोण की जोष और मांस को लेकर आक के सूत में लपेट कर बत्ती बनायें। फिर उसे बत्ती के घो में पिगोकर रात के समय दीपक में जलायें और उसमें काजल पारें। इस काजल की आँखों में लगाने से घलीन के भीतर गड़ी हुई चीजें दिखाई देने लगती हैं।

(२) कमल के सूत की बत्ती बनाकर, उसे आरुह के पत्ते के अर्क में पिगोकर सुखा लें। फिर उस बत्ती को अंकाल के तेल में डालकर दीपक

१२८ । मुस्लिम सभ्य-साहित्य

में बलायें और कष्टों पर। इस कारण को पुरुष नसबज वाली सेना के दिन कीजो, मैं सगाने से जमीन के भीतर की हुई चीजें दिखाई देने लगती हैं।

(३) भुष तिवि, नसबज और बार (दिन) से काली गाय के पुरुष को कीच पर रखकर तथा उसके पी को दोनो ओरों से सगाने दो जमीन में गड़ा हुआ वन दिखाई देने लगता है।

दीठ-मूठ सं सुभा

इतिहास नसबज से कोहे की बंदूकी बनवाकर हाथ में धारण करने में दीठ-मूठ से सुरक्षा होती है।

— : ० : —

१० वशीकरण सम्वन्धी कतिपय अन्य प्रयोग

इस प्रकार का वशी-वशीकरण सम्वन्धी उन मन्त्र-संज्ञों का उल्लेख किया जा रहा है जो कि हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही साधक प्रयोग में लाते हैं। इन संज्ञों की विवेचना निम्नलिखित के अन्तर्गत की जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—“यूली यूलेरवरी यूलीमाता परमेरवरी यूली बंबवी जे जे कार रन रन बोंब मेरे अयुकी छाती छार छार से न हटें देता परवार मेरे वो समान लोटें, जीवं वो पर्व पलोटे वावा बाँव सती होई तो जगाइ लयाइ माता यूलेरवरी तेरी शक्ति मेरी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ठः ठः ठः स्वाहा।”

विधि—इतबार के दिन को ब्राह्मी मरा हो उसके सीन मुट्ठी रख साकर शान्तवार से कुछ करने ७ दिनों तक रोजाना १५४ बार इस मन्त्र का जप करना चाहिए। जप करते समय उन्नत माधट की राख के ऊपर चितराग जलाकर रखना चाहिए और उसके सामने धूप-गुगल बौरह रखने चाहिए।

जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तो चितराग के नीचे रखी हुई राख को गोली में भरकर रखने। फिर जिस स्त्री को बला से करना हो, उसके ऊपर राख को २१ बार अभिमन्त्रित करके डाल दे, तो वह साध-साध लगी चली जाती है।

तन्त्रशास्त्रियों के अनुसार यह प्रयोग बहुत असर कारक है। इसके प्रभाव की परीक्षा करनी हो तो अभिमन्त्रित राख किसी दीस के ऊपर डालकर देखना चाहिए। अभिमन्त्रित राख के पड़ते ही भेस राख डालने वाले के साथ चल देगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—“यूली यूली एकट चन्दनी पर मारूं यूली फिरे दिवानी पर तेजे बाहर तेजे ठाढ़ा भरसार तेजे देवी एक सठी

कलवान तू नाहरसिंह वीर अमुकी ने उठा इत्याव मेरा मान गरी की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।”

विधि—उक्त मन्त्र का अर्थ करते समय वही ‘अमुकी’ शब्द आता है, वही साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इसकी प्रमाण विधि यह है कि शनिवार के दिन जिस स्त्री की मृत्यु हुई हो, उसके पगल के अंगार को लेकर शकोरे में रखकर उक्त मन्त्र में सात बार अभिमन्त्रन करें। फिर उस अंगार को पीसकर, वह चूर्ण जिस साध्य-स्त्री के ऊपर डाल दिया जायेगा, वह स्त्री बर्तीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—‘बाँधूँ इन्द्रक बाँधूँ तारा बाँधूँ विद लोही की धारा उठे इन्द्र न धाले धूल सास पूसी हो जाय। बल ऊपर लो कंकड़ो दीया ऊपर लो धूल में रो बन्धन बाँधियो साम सुसर जाला पूत। मन बाँधूँ मन्त्रवर बाँधूँ विद्या देसूँ साथ, धार खूँट वे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरु स्वाहा ।”

विधि—किसी भी शनिवार के दिन से इस मन्त्र का साधन आरम्भ करना चाहिए। किसी नवदूध और पवित्र स्थान में एक पुतली बनाकर रखकर और उसका विधिपूर्वक पूजन करके गुगल की धूप दें तथा दीपक जलाकर मन्त्र का २१ बार अर्थ करें। मन्त्र में जिस जगह फलानी फलाना शब्द आया है, वही साध्य-स्त्री और पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस क्रिया को आरम्भ करके निरन्तर नियमित रूप से रात्रि के समय करना चाहिए। मन्त्र-साधन काल में प्रत्येक शनिवार को नवा पाव हलवा और दीप बनाओं का भोग रखना चाहिए। इस प्रकार से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा, तब आवश्यकता के समय किसी भी शनिवार को एक पुतली बनाकर उसके पैर में साध्य-स्त्री का नाम लिखकर, उस पर १०८ बार मन्त्र पढ़कर पूँ के मारनी चाहिए। फिर साध्य-स्त्री के सामने जाकर उस पुतली को अपनी छाती में लगाना चाहिए। ऐसा करने पर साध्य-स्त्री बेचैन होकर साधक के बर्तीभूत हो जाती है तथा उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (४)

मन्त्र—‘आकाश की जोगनी पाताल का नाम उड़ जा अबीर तू फलानी के लाग, धूले सुख न देंगे सुख, फिर-फिर देखे मेरा मुल, हमहूँ औरि दूसरा कने जाय तो काहि कलेजा नाहरसिंह वीर साय। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।”

विधि—उक्त मन्त्र का अर्थ करते समय वही ‘अमुकी’ शब्द आता है, वही साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इसकी प्रमाण विधि यह है कि शनिवार के दिन जिस स्त्री की मृत्यु हुई हो, उसके पगल के अंगार को लेकर शकोरे में रखकर उक्त मन्त्र में सात बार अभिमन्त्रन करें। फिर उस अंगार को पीसकर, वह चूर्ण जिस साध्य-स्त्री के ऊपर डाल दिया जायेगा, वह स्त्री बर्तीभूत हो जायेगी।

इस मन्त्र में जहाँ ‘फलानी’ शब्द आया है, वही साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (५)

मन्त्र—‘नमो काल भैरूँ निशि राती काला आया आधा राती चलनी कलार बाँधे तू धावन वीर पर नारी से राखे गीर मन पकड़ि बाको लावे, सोवनी को जगाई लावे, बंठी को उठाई लावे, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।”

विधि—जब इतबार है, दिन होनी अथवा दीवासी पड़े, उस रात को नंगा होकर बायें हाथ से लाल रंग के १०८ के पीप को एक झटके में तोड़ सायें तथा मन्त्र का अर्थ करते हुए उसे जलाकर धूम्र कर दें। फिर उस धूम्र के ऊपर २१ बार मन्त्र पढ़कर, जिस साध्य-स्त्री के सिर पर डाला जायेगा, वह साधक के बर्तीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (६)

मन्त्र—‘कुल-कुल कुल कुमारी रानी। पल-पल में आवो शीघ्र वशीमानी। यह कुल मन्त्र पढ़ूँ अमुकी जान। जगत ईश्वर नरसिंह वरदान। यह कुल पढ़ि देऊँ अमुकी माया। हमें छोड़ न जावे दूसरे के साथ। अल्लाह कामर कामाया माई। अल्ला हादी दासी बहदी दोहार ।”

विधि दशमी तिथि को रात के समय १०८ बार जप करने का मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है वही साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र के १०८ बार जप पर एक चमपा के फूल को तीन बार मन्त्र में अभिमन्त्रित करके जल में डाला जाये। इससे मन्त्र पर डाल दिया जायगा वह यदि छूट स्वभाव को नष्टा घमण्डी हो तो भी अपूर्व दुर्दान्त एवं पम्वह को स्वयंकर साधक के वशीभूत हो जाते हैं।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (७)

मन्त्र—“धूल-धूल तू धूल की रानी जनमेहिनी मन मोर बानी, जब मैं धूला आन पढ़े, तब पावनी वरदान, धूर्ता पढ़े तू अमुकी अंग, जो जलनी आता उमंग, उमका मन लावे निकार हमारा वश्यता करे स्वीकार।”

विधि—होली के दिन यह मन्त्र १०८ बार जपने से सिद्ध हो जाता है। मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है वही साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। फिर रविवार के दिन साध्य-स्त्री के पाँव के नीचे की पत्ती लेकर, उस मन्त्र में वे बार अभिमन्त्रित करके, उसी स्त्री के ऊपर शाल दण्ड से वह वशीभूत हो जाती है।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (८)

मन्त्र—“नमो गुरु-गुरु रे तू गुरु-गुरु तामटा मशान केलि करता जा उमका दम उमा सब हवें हमारी आस स्वप्नम को देखे जले धूलें हमको देखे रुक-रुक पले चाल-चाल रे कालिका के दूत जोगी जंगम और अवधूत सोनी होय जगाय लाव बँटी हो तो उठाय लाव न लावे तो माता कालिका की शरणा पर पाँव धरे, शब्द मौचा पिट काया फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा सत्य नाम आदेश गुरु का”

विधि—इनबार के दिन एक पैसा घर गुरु को लेकर भ्रमणान में जाये वही तेल बालिका से भरोष का पूजन करके इस मन्त्र का १००८ की संख्या से जप करे तो गुरु सिद्ध हो जायेगा। उस गुरु को जिस साध्य-स्त्री को खिलाया जायेगा, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (९)

मन्त्र—“नमो उर्वशी सुपारी काम निगारी राजा परजा खरी चियारी मन्त्र यदि लगाऊँ तोहि हिया कलेजा लावे तोहि जीवना धाटे पगलली मूवा सग मसान जो वश्य न होय तो जती हनुमन्त की आन। शब्द साँचा पिण्ड कर्चा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।”

विधि—जो स्त्री को जपना हो उस समय इस मन्त्र को १००८ बार जप करे तो यह सिद्ध हो जाता है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है वही साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। फिर एक सुपारी को इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य-स्त्री को खिलाया जायगा, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१०)

मन्त्र—“मो जल की जोगिनी पाताल नाम जिस पर मेवें तिमके लाग, सोने न पायें सुख से बँटन न पावें, सुख से घुम फिर-फिर ताके मेरा सुख, जो बाँधा छूटे तो भावा नरसिंह की जटा टूटे।”

विधि—चार लोगों को एक पत्ते में सपेट कर गुल की धूनी दें। फिर उसे होठ में दबाकर किसी सलाब के पानी में गोला मारकर सात बार मन्त्र पढ़ें। फिर मुँह से पत्ता निकालकर, उन सात बार मन्त्र पढ़ कर गुल की धूनी दें। तदुपरान्त उस लोग को जिस स्त्री को निखाने, वह वशीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (११)

मन्त्र—“मो कामरूप देस कामाख्या देवी जहाँ वसे इमाइल जोगी, इमाइल जोगी ने दिये बार लींग, एक लींग निसिमाती, दूजी लींग दिखावे राती, तीसरी लींग रहे जुलाय, चौथी लींग मिलन कराय, नहीं आये तो हुआ बाबड़ी घट फिरें, रंजी हुआ बाबड़ी छटक घरे। नमो गुरु की अल्ला फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।”

विधि—जिस समय चांद पर महल पड़ रहा हो। उस समय चार-सौ बार दियानों से रत्नकर बीच में एक चौपुछा दीपक जलाकर विधि-

बलस-असल गणन की धुनी देकर रखते। फिर आशयकता के समय बिजु रस्वी की बखीभूत करना हो। उसके गरीर पर राख लगा दे तो वह बखी-भूत होकर पास चली आयेगी और जब उसके गरीर पर धूलि-मट्टी लगायी जायेगी, तब वह सोटकर बगिस चली आयेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (८)

रविवार के दिन पुण नक्षत्र की ओपेरी रात में जो बटोही मार्ग में जा रहा हो, उसके पावों के नीचे की धूलि मुट्ठी भर ले आवे। फिर उगमें मोर की बोट, हरताल और मुहैयाग मिलाकर एक दीपक के समीप रखदे। तत्पश्चात् मंथ्रा के समय जिस रस्वी के मस्तक पर यह मिश्रण डाला जायेगा, वह बखीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (९)

मंगलवार या रविवार के दिन एक बोट में किसी छछंदर को मार कर उस चीराह पर गाढ़ दे। सातवें दिन उसे उखाड़े। उस समय जो एक हड़्डा भागने लगे, उसे पकड़ने तथा उसके अनितरित एक अन्य हड़्डी की धी जो ज्वने स्थान पर हो स्थित रही हो लेकर भर सीट आवे। वही दोनों हड़्डी को गुगल की धुनी देकर रखते। फिर आशयकता के समय जो हड़्डी आगी हो, उसे जिस साधु-स्त्री के गरीर में स्पर्श कराया जाएगा वह बखी-भूत हो जागी तथा जब उसके गरीर में दूसरी हड़्डी का स्पर्श कराया जाएगा, तब वह अनन हट जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१०)

पुण अथवा भवण नक्षत्र में धनुर की हरी पलिया तथा मोर की बोट को समभाग लेकर पीस ले फिर उसकी छोटी-छोटी गोसिया बनाकर रखते। आशयकता के समय उनमें से एक गोली का धुआ जिस रस्वी को दिया जाएगा, वह बखीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (११)

काकहासिया, बल, एगुआ और छोटी इलायची—इन सबको सल-भाग लेकर कुट-पीस कर गोली बनाकर रखते। आशयकता के समय इस गोली को जलाकर अपने कपड़ों में धुप दे दे, फिर साधु-स्त्री के पास जाये तो वह बखीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१२)

मोर का दीया और बीमा पंखा, काकजया एवं पुटकरमूल—इन सबको मिलाकर चूड़ महीन पीस लें। उसमें से एक चुटकी भर चूर्ण जिस रस्वी के मस्तक पर डाला जाएगा, वह बखीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१३)

भवण नक्षत्र में पुटकरमूल की धुनी लगा तगर—इन दोनों को मम-भाग लेकर पावों में पीसकर गोली बना लें। इस गोली को मिलाकर, अपने मस्तक पर लिलक लगाकर साधु-स्त्री के पास पहुँचा जाय तो वह बखीभूत हो जायेगी।

स्त्री-वशीकरण तन्त्र (१४)

गण के मिर की हड़्डी की मनुष्य के कपाल में रखकर, भाँग के अर्क में रुई की एक बत्ती को रंगे फिर कपाल में तेल भरकर उसमें बत्ती जलकर जलिये तथा काजल पार। उस काल को जिनवार के दिन अपनी आँखों में लगाकर, जिस माध्यस्त्री की ओर देखें, वह बखीभूत हो जायेगी।

राजा-वशीकरण तन्त्र (१)

तालेमपय, हूट और अमर—इन सबको एकत्र पीसकर तेल बना लें। फिर उस तेल को किसी रस्वी बरत पर लगाकर उसको जनी तलायें तथा उस रस्वी को खंभड़ी में जालकर उसमें गरमा गरम तेल भरकर, चली को जलाय तथा काजल पारें। उस राजस की अपनी आँखों में लगाकर राजा के पास जायें तो वह देखते ही बखीभूत हो जाएंगे।

बोट बर्तमान मयय में राजा-महाराजा नहीं रहे, अब यह प्रयोग जालन्धरिका, मर्वा आदि की रोग करन के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।

राजा-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—“ममो आदेश गुरु का जल बाँधूँ अर्था बाँधूँ बार-बार बाँधूँ शिव प्रणवर बाँधूँ रुठा राजा कोई कामी आमख

झोड़ मंसाव सण देसी आपण टोको धन्दन ललाट टीको कारि
सिंह वर्ण कहाँ और कहेँ सहैयाले में वंशान मोरा पावती
बन्धानें में वंषा या गुरु का शक्ति मेरी भक्ति पुरो मन्त्र ईश्वरो
बाचा ।”

विधि शनिवार से बारम्भ करके २१ दिनों तक धूप दीप वैशेष
द्वारा गोरा पावती देवी का पूजन और ध्यान करते हुए नित्य प्रति सिद्धि
बार इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है । मन्त्र के सिद्ध हो
जाने पर कुंजुम चन्दन और मोरोवन को गाय के दूध में पास कर उस
मन्त्र में ७ बार अभिमन्त्रित करके अपने मन्त्रक पर नित्य लगाने पर यदि
राजा के पास पहुँचा जाय तो वह बशीष्ठ हो जाता है ।

राजा-वशीकरण तन्त्र (३)

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में किसी बगोड़े में जाकर, नगा होकर एक ही
घाटके में बनार के घोड़े की एक दावी तोड़ सों, फिर उसे धूप देकर
अपनी दावी बाँह में बाँधकर राजबन्ध में जाये तो राजा उसे देखते ही
बशीष्ठ हो जायेगा ।

राजा-वशीकरण तन्त्र (४)

अंकेल के पके हुए फल और मेनफल - दोनों को समभाग से, गाय
के दूध से पीसकर गोली बनायें । फिर गाय के स्वयं गिरे हुए पीसे सीध की
साकर उसमें गाय का ही दूध भरकर, उससे सूखी हुई गोली को बाल दें ।
फिर उसे सात दिन तक पुष्टी में गाड़कर धूनी दें । आठवें दिन उसे
निकालकर, गोली को पीस कर अपने माथे पर नित्य लगाने और राजसभा
में जायें तो राजा देखते ही बशीष्ठ हो जाएगा ।

राजा-वशीकरण तन्त्र (५)

गुड़ धो, दूध, मक्कर, दही और गन्ध - इनके साथ १०० कमल के
फूलों का रात्रि के समय अग्नि में हवन करें तथा हवन करने समय त्रिम
राजा को बन्ध में करना हों, उसका ध्यान करता रहे तो इस प्रयोग ५
वक्रवर्ती राजा भी बशीष्ठ हो जाता है ।

राजा-वशीकरण तन्त्र (६)

गुप्त अथवा घरणी नक्षत्र में चम्पा की कली लाकर, उसे हाथ में
बाँधकर राजा के समीप जाने से वह बशीष्ठ हो जाता है ।

राजा-वशीकरण तन्त्र (७)

आश्विन/चैत्र/शुक्ल/पूर्णिमा की अठ्ठाईसवाँ रात को उस रात में पीसकर
बाँधने में आश्विन और राजा के पास जाने से राजा बशीष्ठ होता है ।

सर्व-जनवशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—“नमो आदेश गुरु को राजा मोहूँ प्रजा मोहूँ माझा
वाणिजा हलमन्त्र रूप में जगत मोहूँ तो रामचन्द्र परमाश्रियाँ गुरु
की शक्ति मेरी भक्ति पुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ।”

विधि—रामचन्द्र जी का ध्यान कर, उनका धूप, दीप, नैवेद्य आदि
से पूजन करके २१ दिनों तक नित्य ५२१ बार उक्त मन्त्र का जप करता रहे
तो मन्त्र सिद्ध हो जायेगा । फिर गाँव के बीराहे पर जाकर एक चुटकी
पर धूल बिखार उसे उक्त मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके अपने
मस्तक पर नित्य लगाने से साध्व्य-व्यक्ति देखते ही बशीष्ठ हो जाता है ।

सर्व-जन-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—“नमो काला कलवा कालीराव तिस की पुतली
माँकी रात काला कलवा घाट घाट घुली को जगाइ लाव वैठी
को उठाइ लाव बेगी धरया लाव मोहनी जोहनी, बल राजा की
टाँव अमरका के नन में बटपटी लगाव जी पासं तोड़ जो कोई
साह नयाराइ दलायनी कभी न छोड़ हमारा साथ पर को तजे
बाहर को तजे पर के साईं को तजे हमें तज और कने जाइ तो
छानी फाट तुलन मर जाइ सर्वनाम आदेश गुरु का गुरु की
शक्ति मेरी भक्ति पुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ईश्वर महादेव की बाचा,
बाचा से टरे तो कभी नरके में परे ।”

विधि—इस मन्त्र को २१ दिनों तक जिस १०८ बार अपना चाहिए। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। सिद्ध हो जाने पर एक छोटी इलायची पर इस मन्त्र को ११ बार पढ़ें। फिर वह इलायची जिस व्यक्ति को खिला दी जाएगी, वह बलीभूत हो जाएगा। यह प्रयोग जिसी पर विशेष प्रभावकारी है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुको' शब्द आया है, वहाँ मन्त्र-त्रय के समय साध्य-स्त्री अथवा पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

सर्वजन-वशीकरण मन्त्र (३)

मन्त्र—“हरे पान हरपाल पान चिकनी सुपारी रखे खैर दाहिने का राना मोही लेह पान हाथ में दे हाथ रस लेह ये पेट दे पेट रस लेह श्री नरसिंह वीर धारी शक्ति मेरी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वर महादेव की बाचा।”

विधि—यह मन्त्र ग्रहण के समय १००८ बार अपने से सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र द्वारा पान को २१ बार अभिमन्त्रित करके जिस व्यक्ति को खिला दिया जाएगा, वह बलीभूत हो जाएगा।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (४)

तगर, झूठ, हरताल और केसर—इन सबको समभाग लेकर अपनी जनानिका अंगुली के रक्त में पीसकर, मस्तक पर तिलक लगादे, से देखने वाला बलीभूत हो जाएगा है।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (५)

रविवार के दिन जब मुख्य नक्षत्र हो तब तगर, झूठ और जालीय पत्र को पीसकर दीपक की बत्ती में मिलाकर, उस को कढ़वे तेल के दीपक में डालकर जलाये तथा आघोराय के समय मनुष्य की छोपड़ी के ऊपर बाजल पादे। इस काजन को आँख में आँजने से देखने वाले स्त्री-पुरुष वशीभूत हो जायेंगे।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (६)

चिता की भस्म, झूठ, वच, तगर और कहुम—इन सबको इकट्ठा पीसकर, जिस पक्ष के पौरो पर तथा जिस स्त्री के मस्तक पर डाला जाएगा, वह बलीभूत हो जायेंगे।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (७)

पुण्य नक्षत्र में इन्द्र जी की जड़, पीपल, सौंठ और काली मिर्च—इन सबको गाय के दूध में पीसकर, सुखाकर रखें। फिर आवश्यकता के समय इसे चन्दन के साथ घिसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-व्यक्ति के सम्मुख जायें तो वह देखते ही बलीभूत हो जाता है।

सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (८)

जाक बीर धतूरे की जड़ कद्दतर की बीट तथा बीरहू की धूल—इन सबको एकत्र कर पीसकर तथा मुखाकर रखें। फिर इसमें चिता की भस्म मिलाकर मंगल शयना शनिवार के दिन जिसके मस्तक पर डाल दिया जाएगा, वह बलीभूत हो जाएगा।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (९)

रविवार के दिन दो चढ़ी रात रहते उठकर प्रयाग में जायें तथा वहाँ अपने दोनों हाथ पीछे की ओर करके चिता से एक लकड़ी को उठाकर किसी एकान्त स्थान में रख आँखें, फिर प्रतिदिन राति के समय जाकर उसका पूजन करवा रहे। इस प्रकार इक्कीस दिन बीत जाने पर, उस लकड़ी को छाती (बड़ही) के घर ले जाकर उसके सात टुकड़े करवाये तथा पहिले टुकड़े की एक श्रेष्ठ बनाकर उसे शत्रु के घर में गाड़ दें तथा शेष सप्ती टुकड़ों की नदी में बहा दें। शेष टुकड़ों की नदी में बहाकर लौटते समय मार्ग में से सात कंकड़ियाँ उठाकर घर लेता आये तथा उन्हें धूप-दीप देकर पूजन करें। आवश्यकता के समय उन कंकड़ियों की जिसके मस्तक पर डाला जायेगा, उसके सब रोग-दोष दूर हो जायेंगे तथा शत्रु की शत्रु पर धर में गाड़ने का प्रभाव यह होगा कि शत्रु बलीभूत हो जाएगा।

शत्रु-वशीकरण तन्त्र (१०)

मंगलवार अथवा रविवार के दिन काले रंग के घोड़े तथा काले रंग के बकरे के पौब के बाल तथा काले मुरगे एवं काले कोण के चार-चार पंख—इन सबको जलाकर राख बनालें। उस राख को पानी में छरल करके सीमा भरकर रखलें। फिर, आवश्यकता के समय इस मिश्रण का तिलक अपने

मस्तक पर लगाकर शत्रु के सामने जाने में उसका बर्णोदरण होगा और वह हर के कभी सामने जाने का साहस नहीं करेगा ।

शत्रु-वशीकरा तन्त्र (३)

पुण्य पञ्चत में जर्मनी की जड़ साकर उमका ताबोह बताकर अपने
पातर करने से शत्रु बर्णामृत होते है ।

शशु-वशीकरण तन्त्र (४)

रविवार के दिन सफेद आक की जड़ को उखाड़ लाकर उसे छाया में सुखाकर अपनी भुजा में बांधने से सन्तर्पों का यकीकरण होता है ।

शुद्ध-वर्णिकरण तन्त्र (५)

धनुष, चरकर, बरगद और मृगा की अह-इन सबको समभान
नेकर पीसते । फिर उस चूर्ण को घिरे हुए चरदन में मिलाकर, उसका
तिलक भरतक पर लगाने से शत्रु देखते ही बर्बाद हो जाता है ।

मुत्तर्ही वशीकरण प्रयोग

भक्तिभार के दिन रात्रि के समय किसी स्वच्छ, एकान्त और शान्त स्थान में बैठकर गोरोजन, कुंडुम तथा केसर से भोजपल के ऊपर एक सिंहासन पर बैठो हृदय की (पुतली) का चित्र बनायें फिर उसका विधिपूर्वक पूजन करके, धूप-दीप तथा गुलाल की धूनी दें, तद्दुपरांत निम्नलिखित मन्त्र का ११ बार जप करे—

मन्त्र—“बौध्दुं हन्त्रक बौध्दुं तारा बौध्दुं विदी लोही की
 बारा उठे हन्त्र न बाले बाब बख साख पूर्णी हो जाय । बख
 ऊपर लों कॉकरो दीया ऊपर लों छत में तो बनवन बौधियो
 साख सुख बाबा पून मन बौध्दुं मन्त्रन्तर बौध्दुं बिद्या देख्दुं साब
 बार बूँट जे फिर आवे फलानी फलाना के साब गुरु गुरे
 साहा॥”

इस मन्त्र में 'बहु' 'फलाना' शब्द आया है, 'बहु' साध
स्त्री-पुरुष नामों का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त क्रिया को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहना चाहिए तथा
प्रत्येक शनिवार को सुवा पाब लपसी एवं पीच वताओं का भोग करना
चाहिए ।

इसलिए हम/हमारे माध्यमों द्वारा अधिलेखित-स्त्री को वहां में किया जा सकता है।

आकषण का मन्त्र

मन्त्र—“काला कलवा चोसट बीरा नारा कलवा गंगा तीर
जहाँ को मेजुँ नहाँ को जाइ मल्की को छुवन न जाइ अपना
भारा आपाई खाइ, चलत बास माले उलट मुँठ माले मार
मार कलवा तेरी आस चार चोमुखा दीया न नावी जा माले
वाही की छाती इतना काम भेरा न करे तो तुम्हे अपनी माँ का
दूध पिया इराम है ।”

विधि—श्री का चिराग जलाकर गुणल की घुनी है और जोड़ा फूल तथा मिठाई रखकर २१ दिनों तक निराल १००८ बार जपे तो भक्त सिद्ध हो जायेगा ।

मनन के सिद्ध हो जाने पर जिसको आकाशित करना हो उसे कर्त नाम का उच्चारण करते हुए मुणारी छाल पर इस मनन को २१ बार पढ़कर उसे पान में रखकर बलिप्राप्ति स्वीपुत्र को खिलाये तो वह आकाशित हो जयेगा ।

यह मन्त्र आकर्षण के साथ ही ब्रह्मीकरण कारक भी है तथा यह मूढ को उल्टी (वर्णित) भेजने का काम भी करता है ।

पति-वशीकरण प्रयोग

माताक धर्म के समय का अपनी योगि का रक्त, गोरोबन तथा केले का रस—इन तीनों को मिलाकर पीस लें । फिर इसमें अपने मस्तक पर विलक करके पति के समीप जायें तो यह देवते ही बनाना शुरू हो । यह प्रयोग स्त्रियों के दुर्भाग्य को दूर कर औभाय की वृद्धि करता है ।

राजसभा मोहन मन्त्र

मन्त्र—“सलामुन कौलुन मिन रविर्हीम वनवीलुल
अजीजुर्हीम ।”

पहले ‘विमलसाह’ पढ़कर उस मन्त्र को अपने दोनों हाथों की हथेलियों पर ७ बार पढ़ें, फिर हाथों की मुँह पर केरकर राजसभा [issau. lertanahibdu123/niail/odishahi](https://www.sanskritdocuments.org/23/niail/odishahi) जायें तो वहाँ के सब लोग मोहित हों।

स्त्री आकर्षण तन्त्र

जिस स्त्री को आकर्षित करना हो, उसके बायें पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर, उसे गिरमिट के रक्त में सान कर एक पुतली बनायें। फिर उस पुतली की छाती पर साध्य-स्त्री का नाम लिख। तदुपरान्त उसे आकर्षण मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके, उस जगह गाढ़ दें, वहाँ पर मूल-स्याग किया जाता हो। फिर उस स्थान के ऊपर प्रतिदिन मूल करता रहें तो वह स्त्री सहजों मेल दूर क्यों न रहती हो, तो भी आकर्षित होकर पास चलती आती है।

मन्त्र इस प्रकार है—

मन्त्र—“ॐ नमो आदि पुरुषाय अमुकं आकर्षणं कुरु-कुरु स्वाहा ।”

इस मन्त्र में वहाँ ‘अमुक’ शब्द आया है वहाँ जिस स्त्री-पुरुष को आकर्षित करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना चाहिए।

यह मन्त्र १० हजार की संख्या में अपने से सिद्ध हो जाता है।

सर्वजन मोहन प्रयोग

मन्त्र—“तिलसों में तेल राजा पर जा पाय मोलि अन्नक पानी मसक ल्पाय कृप योनि मेरे पाय नगाय हाथ खट्ग फूलों की माला जानि बिजाने मोरख जान मेरी गति को कई न कोय हाथ पक्षानो मुख धोक सुमिरो निरंजन देव हनुमंत मयी हमारी पति राखे मोहिनी दोहनी दोनों बहिन आव मोहिनी राखल चाले मुख बोलें बिहारा मोह, आस मोह, पास मोहें जब संसार में

निमरु टीका देय ललाट शब्द साँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा
हु ॥”

बिधि—दीवाली की रात को तिल ‘लाकर, उलटी घानी से उनका तेल निकलवाकर, उस तेल को उबल मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करें। फिर उस तेल अपने मस्तक पर बिन्दी लगायें तो देखने वाले सभी लोग [lertanahibdu123/niail/odishahi](https://www.sanskritdocuments.org/23/niail/odishahi) स्त्री-मोहन प्रयोग

रविवार के दिन पाप का एक बीड़ा लाकर बोली के कपड़े धोने की पाटिया पर जा चढ़ा हो। वहाँ नंगा होकर पढ़ने उस बीड़े को बोलें, फिर लपेट कर बन्द करें तथा बसल पहन कर घर सोट आयें। पीछे मुड़कर न देखें। यह बीड़ा जिस स्त्री को खिलाया जायेगा, वह मोहित हो जाएगी।

पानी को मस्से पर लगाये तो कुछ दिनों के निरन्तर प्रयोग से खुनी गला बादी बवासीर ठीक हो जाती है।

बवासीर का मन्त्र (२)

मन्त्र—'सुरासान की देवीसाह। खुनी बादी दोनों जाय।
उमरी-उमरी बल बल स्वाहा।'।

विधि—इस मन्त्र को पहले पूर्वोक्त मन्त्र की विधि से सिद्ध करेंगे। फिर प्रयोग के समय इस मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित पानी द्वारा आबदारत से तथा खाल सूत में तीन गोलें लगाकर उस पर हल्कीस बाण मन्त्र को पढ़ें फिर उसे दोनों पोंकों के अंगूठों से बाँध लें। इससे खुनी तथा बादी—दोनों प्रकार की बवासीर दूर हो जाती है।

पीड़ा-निवारक मन्त्र

मन्त्र—'लरकर फरऊन दर रोदनी सार्क शुद।'।

विधि—जिस जगह दर्द हो, वहाँ इस मन्त्र को ३ बार पीली मिट्टी से लिखें। फिर मिट्टी के बरानर गुड़ गुलवाकर छोट बच्चों को चट दें तो पीड़ा दूर हो जाती है।

आँख को फुली का मन्त्र

मन्त्र—'उत्तर कूल काछ सुन लोणी की काछ, इसमाइत्र जोणी की दो बेटी एक पाले चूल्हा एक काटे फुली का काछ, फुली का काछ, फुली का काछ।

विधि—छुरी द्वारा २१ बार जमीन पर लकीर खींचे तथा हर बार लकीर खींचते समय एक बार उक्त मन्त्र को पढ़ता जाय। इस प्रकार सात दिनों तक निरन्तर चालने से आँख की फुली कट जाती है।

सिंघा का मन्त्र

मन्त्र—'नमो कामरू देस कामाख्या देवी जहाँ बसे इसमाइल जोणी, इसमाइल जोणी के तीन पुत्रों एक तोड़े, एक पिछोड़े, एक तोते जरी तोड़े।'।

विधि—रोगी को खड़ा करके जिस जगह ठण्ड लगती हो, वहाँ क्षेप से एकड़कर २१ बार मन्त्र फूँके तो सिंघा रोग हो जाता है।

हाकिम को बश में करने का मन्त्र-तन्त्र

चौद की ग्यारहवीं सारीख को रात के चार बजे कोण के घोसले पर पहुँचकर एक ओर नूर और बाया कोण को एकड़कर ले जायें, उन्हें कौओं की पिचड़े से बन्द कर दें। दूसरे दिन सुबह दोनों के नाखून काट कर उन्हें एक छिन्नी में बन्द कर दें। फिर दोनों कौओं को उनके घोसले में जहाँ-जहाँ छोड़ जायें। फिर उसी रात को १२ बजे किसी एकान्त और शांत जगह में बैठकर, कोण के नाखूनों वाली छिन्नी को खोलकर अपने सामने रख लें तथा नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुए उस पर फूँक मारें। अपने बिलाल मन्त्र का पाठ २२५० बार करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार है

"कैल के चन्द्रमुखी सती का पैर पड़े बन कई, सलाम कर दीम जतरी फैलके ज्वाँम ताड़े फल लाग गार सभा। दन्दू मदियाँ साम भरी अठिया साण सुन्दर गास्ता बढ़े। फल पड़ के मिल जाय कई असल नाम आदेश करें।"। निरन्तर ग्यारह रात तक इसी प्रकार मन्त्र का जप तथा साधन करते रहें। तदुपरान्त उन नाखूनों को किसी कपड़े में सीकर रख लें और जिस समय हाकिम के सामने जायें उस समय नाखूनों वाले कपड़े को अपनी कमर में बाँधकर जायें तो हाकिम बशीश्वर हो जाता है।

प्रेमी को आशयित करने का मन्त्र

काल कोण के पंच, मोर के पंच तथा दुबहुद प्रकी के सिर की कलंगी के पंच—इन तीनों को जलाकर राख बनायें। फिर हलवार के दिन सूरज निकलने से पहले किसी बोरह में धूलि लाकर, उस राख में मिला दें। फिर सबके मिश्रण को एक छिन्नी में भर कर रख दें। जकरत के समय इस राख को अपने गूँक से पिनाकर जिस स्त्री अपना पुरुष के कपड़ों से लगा दिया जाएगा वह प्रेम से आकर्षित होकर बशीश्वर हो जाएगा।